जारशाही डूमा में बोल्शेविक

सर्वहारा प्रकाशन

प्रकाशकः टी.आर. पांडेय
मित्र विहार, नियर आई.टी.आई.
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड
Email : sarvhara.p@gmail.com

मुद्रकः कैपिटल प्रिंटर्स
मंगोलपुरी खुर्द,
दिल्ली

मूल्य : **15 रुपये**

प्रकाशक की ओर से

'जारशाही डूमा में बोल्शेविक' ए. बादायेव द्वारा लिखित एक ऐसी पुस्तक रही है जिसने इस बात को बेहतरीन ढंग से पेश किया है कि जारशाही काल में रूस के महान क्रांतिकारियों बोल्शेविकों ने किस तरह से रूस में चुनाव और डूमा (तत्कालीन संसद) का इस्तेमाल अपने विचारों के प्रचार-प्रसार व मजदूर वर्ग की मांगों को उठाने व संगठित होने के लिए किया।

हमारे देश के क्रांतिकारी आंदोलन में भारत में होने वाले संसदीय चुनावों के बारे में लम्बे समय से चर्चा व विवाद रहा है। क्रांति का पथ त्याग चुकी संशोधनवादी पार्टियां जहां इसे एक ऐसे साधन के रूप में देखती रही हैं जिसके जरिये वे भारत में समाजवाद की स्थापना करेंगी। वहीं दूसरी ओर आतंकवादी कार्यदिशा को लागू करने वाले संसदीय चुनावों के बहिष्कार का नारा देते रहे हैं। हमारे देश में संसद को लेकर फैले भ्रमों को दूर करने में बोल्शेविक पार्टी की ड्यूमा के संदर्भ में अपनायी गयी कार्यनीति बेहद शिक्षाप्रद व अनुकरणीय है।

ए.बादायेव की पुस्तक कई महत्वपूर्ण अध्यायों का भावानुवाद 'नागरिक' पाक्षिक अखबार (www.enagrik.com) के विभिन्न अंकों में वर्ष 2014 व 2015 में छपे थे। 'नागरिक' अखबार के एक साथी ने ही इस पुस्तक के इन अध्यायों का भावानुवाद किया था।

इसी पुस्तक का एक महत्वपूर्ण अध्याय प्राब्दा अखबार की रूसी क्रांतिकारी आंदोलन में भूमिका के बारे में भी है। मजदूर अखबार की क्या भूमिका होनी चाहिए इसे समझने में यह काफी मददगार होगा, इस आशा के साथ हम इसे भी प्रकाशित कर रहे हैं।

सितम्बर, 2015

प्रकाशक
सर्वहारा प्रकाशन

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
1. जारशाही ड्यूमा में बोल्शेविक	
I-	01
II-	04
III-	07
IV-	10
V-	13
VI-	16
VII-	19
VIII-	21
IX-	23
2. प्राव्दा अखबार की रूसी क्रांतिकारी आंदोलन में भूमिका	27

जारशाही डूमा में बोल्शेविक–I

(प्रस्तुत लेख ए.बादायेव की पुस्तक 'जारशाही डूमा में बोल्शेविक' के प्रथम अध्याय के कुछ हिस्सों का भावानुवाद है। इस लेख में उस समय की जारशाही हुकूमत के अंतर्गत होने वाले संसदीय चुनाव में बोल्शेविकों की अपनाई गयी कार्यनीति की चर्चा की गयी है। हालांकि जारशाही रूस और आज के भारत की स्थिति के बीच बहुत ज्यादा अंतर है। उस समय के जारशाही रूस में सार्विक बालिग मताधिकार नहीं था। संसद पालतू थी। इसकी तुलना में भारत में आज सार्विक मताधिकार प्राप्त है। चुनाव प्रत्यक्ष हैं। संसद किसी सामंती सत्ता या राजशाही की पालतू नहीं है।

इतने अंतरों के बावजूद हमारे देश में संसद पूंजीपतियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती है। सरकार पूंजीपतियों की और उनके विदेशी सहयोगियों–साम्राज्यवादियों के हितों की सेवा में लगी हुई है। यहां भी मजदूरों–मेहनतकशों को वास्तविक जीवन में बेहतरी की कोई संभावना नहीं दिखाई देती। सार्वभौमिक संसद होने के बावजूद मौजूदा संसद और सरकार पूंजीपति वर्ग, देशी व विदेशी– दोनों की सेवा में लगी हुई है।

ऐसी स्थिति में मजदूर वर्ग के सचेत प्रतिनिधियों को संसदीय चुनावों में क्या भूमिका निभानी चाहिए, इसे इस लेख से समझा जा सकता है। रूस में जारशाही के जमाने में सीमित मताधिकार वाली और पालतू संसद में ही क्रांतिकारी मजदूरों ने इसका इस्तेमाल किया था। क्या भारत में भी वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाने में मजदूर वर्ग को संसदीय चुनाव में पूंजीवादी व्यवस्था का पर्दाफाश करने, पूंजीवादी पार्टियों को बेनकाब करने और तरह–तरह के विषयगामी आंदोलनों–संगठनों के असली मजदूर विरोधी चरित्र को उजागर करने में इस्तेमाल किया जा सकता है।

इसे रूसी अनुभव से समझने में मदद मिल सकती है। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत लेख को दिया जा रहा है। उम्मीद है कि पाठकों को इस पर राय बनाने में मदद मिलेगी–सम्पादक)

तीसरी राज्य डूमा 1912 की गर्मियों के मध्य में भंग कर दी गयी थी। यह पहली डूमा थी जिसने अपना कानूनी 5 साल का कार्यकाल पूरी तौर पर पूरा किया था। इसमें अभिजातों और जमींदारों का बहुमत था और यह सरकार के हाथों में वफादार औजार सिद्ध हुई थी। सामाजिक जनवादियों और पूंजीवादी जनवादियों के हिस्से संख्या में कम थे और सरकार द्वारा डूमा में पेश किये गये सभी बिलों को रोकने में वे वस्तुतः असमर्थ थे। कैडेट पार्टी जो उदारपंथी पूंजीपतियों की पार्टी थी, हालांकि दिखावे में वह सरकार की विरोधी थी, अपने शब्दों व कार्यों में दृढ़ता से डरती थी। ''डूमा को बचाने'' के नारे के तहत कैडेट और उन्हीं की तरह का एक प्रगतिशीलों का ग्रुप चुपचाप रहने वाला व जी–हुजूरी करने वाला था, जो दक्षिणपंथियों को मनचाही छूट देता था। तीसरी डूमा ने वह सब कुछ सरकार को दिया था जो वह चाहती थी। वह ''कानून पालक और दक्ष'' के बतौर जनता का प्रतिनिधित्व करती थी।

तीसरी डूमा के पांच वर्षों के कार्य के सर्वेक्षण में, इसके भंग होने के एक दिन बाद **प्रावदा** ने निम्नलिखित लिखा थाः–

''राज्य डूमा की प्रत्येक गतिविधि अपने बहुमत के वर्ग हितों की हिफाजत करने के लिए लक्षित थी। इसलिए ''दक्ष डूमा'' के ये पांच वर्ष देश के लिए व्यापक महत्व के जरूरी सवालों के समाधान में किसी भी तरह से मदद नहीं करते थे। मंत्रियों से प्रश्न पूछने के जरिये रूसी जीवन के काले पक्षों पर रोशनी डालने और उनके बारे में देश का ध्यान आकर्षित करने के लिए वामपंथी पार्टियों के सारे प्रयास प्रभुत्वशाली बहुमत द्वारा बेकार कर दिये गये...यह अच्छा छुटकारा है''।

इन शब्दों के साथ **प्रावदा** ने तीसरी डूमा को अलविदा किया जो मजदूरों और किसानों के आम दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता था।

चौथी डूमा को तीसरी डूमा के पदचिन्हों पर चलना था। चुनाव सम्बन्धी कानून यथावत थे और इसलिए नई डूमा का बहुमत पहले की ही तरह ब्लैक हण्ड्रेड ही होना था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि चौथी डूमा की गतिविधियां भी मजदूरों के विरुद्ध लक्षित होंगी और इसके पारित कानून मजदूरों या किसानों में से किसी के कोई उपयोग के नहीं होंगे।

इन सभी बातों पर विचार करने के बावजूद सामाजिक–जनवादी पार्टी ने चुनावों में सक्रिय रूप से हिस्सेदारी करने का उसी तरह से फैसला किया जिस तरह दूसरी और तीसरी डूमा में इसने किया था। बीते वर्षों के अनुभवों ने यह दिखाया था कि उद्वेलन के दृष्टिकोण से चुनाव अभियान का और डूमा के भीतर सामाजिक–जनवादी गुट द्वारा निभाई गयी भूमिका का व्यापक महत्व है। हमारे गुट ने डूमा के मंच का क्रांतिकारी उद्वेलन के लिए इस्तेमाल किया था। उसने तथाकथित रूप से कानून बनाने के ''सकारात्मक'' काम को करने से इंकार किया था। डूमा के बाहर सामाजिक जनवादी गुट का काम ज्यादा महत्वपूर्ण था। वे (डूमा के भीतर) रूस में पार्टी के कार्यों का सांगठनिक केन्द्र हो गये थे। इसलिए हमारी पार्टी ने चुनाव अभियान में सक्रिय हिस्सेदारी को निश्चित तौर से करने का फैसला किया था।

इस प्रकार सामाजिक–जनवादी कतारों के भीतर चुनाव में हिस्सेदारी के संदर्भ में विचारों का कोई मतभेद नहीं था लेकिन आगामी डूमा के गुट द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के संदर्भ में और चुनाव के दौरान अपनाये जाने वाले रणकौशल के संदर्भ में बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच में तीखी टकराहट थी।

चौथी राज्य डूमा की समस्या वर्तमान पार्टी कार्य की समस्याओं में सिर्फ एक थी, लेकिन रूसी सामाजिक जनवाद के दो धड़ों के बीच यह तमाम मतभेदों को प्रतिबिम्बित करती थी। तीसरी डूमा के भंग होने से छः महीने पहले जनवरी, 1912 में प्राग सम्मेलन में पार्टी ने आगामी चुनाव अभियान के लिए कार्यक्रम निर्धारित किया था। सम्मेलन ने यह स्वीकार किया था कि ''हमारे सभी कार्यभार वर्गीय कार्यदिशा पर समाजवादी प्रचार और मजदूर वर्ग के संगठन के कार्यभार के अधीन होना चाहिए'', चुनाव पर पार्टी की कार्यदिशा को निम्न रूप से परिभाषित किया गया थाः–

....पार्टी को जारशाही निरंकुशता और उसको समर्थन देने वाली जमींदारों और पूंजीपतियों के पार्टी के विरुद्ध निर्मम युद्ध छेड़ना होगा, उदारवादी पूंजीपतियों के प्रतिक्रांतिकारी विचारों और नकली जनतंत्र का भी लगातार पर्दाफाश करना होगा। चुनाव अभियान में इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह तमाम गैर सर्वहारा पार्टियों से सर्वहारा वर्ग की पार्टी की सवतंत्रता बरकरार रखे और जनवादी ग्रुपों के निम्न पूंजीवादी चरित्र वाले नकली समाजवाद को उजागर करना चाहिए। मुख्यतया त्रुदोविक, नरोदवादी और सामाजिक क्रांतिकारी और इनके द्वारा जन क्रांतिकारी संघर्ष के सवालों पर दिखाये गये ढुलमुलपन के कारण जनवाद को हुए नुकसान पर इनका पर्दाफाश करना चाहिए। बोल्शेविकों ने राज्य डूमा के चुनाव अभियान को उद्वेलन और प्रचार की दृष्टि से दूरगामी महत्व का एक बहुत बड़ा अवसर माना और इसी के साथ ही इसे जनसमुदाय को संगठित करने का एक तरीका समझा था। अपने खुद के उम्मीदवारों को चुनाव में जिताने की कोशिश करके बोल्शेविकों ने इसे डूमा में कुछ सीटें हासिल करने के संघर्ष का महज अभियान नहीं समझा। डूमा के भीतर और बाहर डूमा गुट की गतिविधि का बहुत बड़ा क्रांतिकारी महत्व था लेकिन इसके चुनाव प्रचार का भी कम महत्व नहीं था। चुनाव प्रचार के पूरे दौर में सामाजिक जनवाद की क्रांतिकारी अवस्थिति को पूरी शुद्धता के साथ पेश करना था जिसमें किसी गौण कारणों के कारण ही इसको मध्यम करना या इसको

प्रदूषित करने का कार्य नहीं करना था।

मेंशेविकों-विलोपवादियों के क्या तर्क थे? आगामी चुनाव अभियान में उनका आंकलन इस धारणा पर आधारित था कि आगामी चौथी डूमा में केवल दो शिविर ही रहने थे। एक तरफ ब्लैक हण्ड्रेड और प्रतिक्रियावादियों का शिविर था और दूसरी तरफ उदारपंथी थे।(इस गुट में कैडेट, प्रगतिशीलों और वामपंथी अक्टूबरवादियों को शामिल होने की उम्मीद थी।) इस आंकलन से शुरू करके उन्होंने अभियान के नारों की घोषणा की ''डूमा के भीतर प्रतिक्रियावादियों को उनकी हैसियत से बाहर करना'', ''डूमा को प्रतिक्रियावादियों के हाथ से छीन लेना'' इत्यादि। सारतत्व में मेंशेविकों की इस अवस्थिति का मतलब था कि चुनाव अभियान को उदारवादियों के साथ सांठ-गांठ करके चलाना था।

बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच की दूरी चुनाव अभियान में पेश किये जाने वाले उनके राजनीतिक प्लेटफार्मों में और ज्यादा तीखेपन के साथ अभिव्यक्त होती थी। प्राग सम्मेलन में बोल्शेविकों ने चुनाव प्रचार के दौरान निम्नलिखित राजनीतिक प्लेटफार्म को परिभाषित किया-

आगामी चुनाव में हमारी पार्टी के निम्नलिखित राजनीतिक नारे होने चाहिएः-

1. जनवादी गणतंत्र
2. आठ घंटे काम का दिन
3. जमींदारों की सभी जमीनों की जब्ती।

समूचे चुनाव अभियान के दौरान इन मांगों की तीसरी डूमा के और केन्द्र और स्थानीय प्रशासन के क्षेत्र में सरकार की समूची गतिविधि के अनुभव के आधार पर स्पष्ट तौर पर व्याख्या की जानी चाहिए। सामाजिक-जनवादी न्यूनतम कार्यक्रम का बाकी हिस्सा जैसे- सार्विक मताधिकार, संगठन बनाने का अध्किार, न्यायाधीशों और अधिकारियों का जनता द्वारा चुनाव, स्थायी सेना के स्थान पर लोगों को हथियारबंद करने, इत्यादि को हमारे प्रचार में होना चाहिए तथा ऊपर बताये ये तीन नारों के साथ जोड़ना चाहिए।

बोल्शेविक पार्टी के इन तीन नारों में जिन्हें बाद में ''तीन ह्वेल'' कहा गया था, रूसी मजदूरों और किसानों की बुनियादी मांगों को सूत्रबद्ध किया गया था। ''जनवादी गणतंत्र'' के नारे में जारशाही को उखाड़ फेंकने के प्रश्न को सीधे तौर पर उठाया गया था, हालांकि जारशाही पर एक नपुंसक डूमा का नकाब पड़ा था। इस नारे ने ''संवैधानिक भ्रमों'' का पर्दाफाश किया और मजदूर वर्ग को दिखा दिया कि राज्य डूमा द्वारा पारित सुधार कुछ भी मदद नहीं करते और कि सरकार के मौजूदा स्वरूप के अंतर्गत उनके जीवन के सुधार की कोई संभावना नहीं है।

अन्य दूसरे क्षेत्रों में मजदूरों की मुख्य आर्थिक मांगें अभिव्यक्त होती थीं। 'आठ घंटे काम का दिन' मजदूर वर्ग के आर्थिक संघर्ष की मुख्य मांग थी। तकरीबन सभी हड़तालों में जिनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी, आठ घंटे काम के दिन की मांग शामिल रहती थी। जमींदारों की जमीनों को जब्त करने का नारा भूमि प्रश्न के क्रांतिकारी समाधान की प्रस्तुति करता था और 10 करोड़ रूसी किसानों की मांगों और आकांक्षाओं को सूत्रित करता था।

न्यूनतम कार्यक्रम का बाकी हिस्सा इन तीन बुनियादी मांगों के साथ जुड़ा हुआ था यानी कि बोल्शेविकों ने जोर दिया कि इसे तभी हासिल किया जा सकता है जब क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा बुनियादी मांगों को प्राप्त कर लिया जाता है।

मेंशेविकों का चुनाव कार्यक्रम क्या था? ये ठीक-ठीक वही गौण मांगें थीं जिन्हें बोल्शविकों ने मुख्य क्रांतिकारी नारों के साथ पेश किया था और कि मेंशेविकों ने इन्हें स्वतंत्र मांगों के बतौर पेश किया था।

मेंशेविकों के प्लेटफार्म ने बोल्शेविकों के तीन बुनियादी नारों को कमजोर रूप में पेश किया था। ''जनवादी गणतंत्र'' के स्थान पर उन्होंने ''जनता के प्रतिनिधियों की सार्वभौमिकता'' की मांग की थी और जमीदारों की ''जागीरों'' को जब्त करने के स्थान पर उन्होंने अर्मूत रूप से ''भूमि संबंधी कानूनों में संशोधन'' इत्यादि की मांग की थी।

मेंशेविकों के समूचे प्लेटफार्म में कानूनी आंदोलन की सीमाओं के भीतर अपनाये जाने वाले नारे और मांगें शामिल थीं क्योंकि उस समय मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी संघर्ष इसी दायरे में बढ़ रहे थे।

पहली डूमा के चुनाव से पहले सरकार ने जो चुनाव कानून पारित किये थे, वे इस तरह से तैयार किये गये थे जिससे कि पूंजीपतियों और जमींदारों का बहुमत बना रहे। मतदान प्रत्यक्ष नहीं था अपितु मंजिलों की व्यवस्था थी। आबादी के विभिन्न वर्ग (जमींदार, कस्बों की बड़ी सम्पतियों के मालिक, किसान, कामकाजी लोग इत्यादि) को पहले निर्वाचकों को चुनना था, जो बदले में अपने बीच से डिप्टी का चुनाव करते थे। किसानों और मेहनतकशों के लिए प्रणाली और जटिल थी। उदाहरण के लिए मजदूरों को पहले प्रतिनिधियों को चुनना होता था। फिर ये प्रतिनिधि निर्वाचक चुनते थे और केवल ये निर्वाचक ही प्रांतों के निर्वाचकों के समूह में हिस्सा लेते थे और वे फिर डिप्टी का चुनाव करते थे। इसके अतिरिक्त तरह-तरह के सम्पत्ति संबंधी योग्यताएं थीं। उदाहरण के लिए कस्बों में वे ही लोग मतदान करने के लिए अधिकृत थे जो घरों के मालिक थे (इसमें बड़े मकानों के किरायेदार भी थे।).....

लेकिन सीमित मताधिकार भी सभी मेहनतकशों को नहीं मिला था। केवल वही मजदूर प्रतिनिधि के चुनाव में (प्राथमिक मंजिल) हिस्सा ले सकता था जो कम से कम 6 महीने तक किसी खास फैक्टरी में काम करता रहा हो। एक तरफ इस प्रावधान ने भ्रष्ट आचरण के व्यापक क्षेत्र को खोल दिया और दूसरी तरफ इसने क्रांतिकारी पार्टियों के लिए अत्यन्त मुश्किलें पैदा कर दीं क्योंकि वे अपने उम्मीदवार को पहले नहीं बता सकती थीं। किसी मजदूर को ठीक चुनाव से पहले काम से निष्कासित किया जा सकता था। इस तरह उसे मतदान से वंचित किया जा सकता था। यदि वह किसी दूसरी फैक्टरी में काम पा भी जाता तो भी वह मतदान के लिए अधिकृत नहीं हो सकता था क्योंकि 6 महीने की समय सीमा तक किसी खास फैक्टरी में काम करने की शर्त वह पूरी नहीं करता था।.....

चुनाव की ऐसी प्रणाली के अंतर्गत ब्लैक हण्ड्रेड उम्मीदवार शहरों की मिश्रित क्यूरी में आसानी से चुनाव जीत सकते थे। इन शहरी क्यूरी में अधिकांश जन समुदाय उदासीन होते थे और वे राजनीतिक तौर पर जागरूक नहीं थे। इसी के अनुरूप सामाजिक जनवादी पार्टी ने शहरों के लिए अलग कार्यनीति अपनायी और मजदूरों के क्यूरी के लिए अलग कार्यनीति।

सामाजिक जनवादियों की मुख्य दिक्कत यह थी कि पार्टी गैर कानूनी थी इसलिए चुनाव अभियान को संगठित करने में अतिरिक्त परेशानी थी। पार्टी पर जारशाही पुलिस द्वारा निरंतर और सीधा हमला होता रहता था। चुनाव अभियान को भूमिगत होकर संगठित करना था और इसे लगातार रोजाना मुकदमों, गिरफ्तारी और निर्वासन के साये में काम करना होता था।

मेंशेविक कुछ बेहतर हालत में थे। एक तो उन्होंने अपनी मांगों में कटौती करके उस समय मौजूद कानूनी संभावनाओं के दायरे में सीमित कर दिया था और दूसरे उनके पास ज्यादा साहित्यिक लोग थे। मेंशेविकों के नेता दान, पोत्रेसोव इत्यादि कानूनी तौर पर पेत्रोग्राद में रहते थे, वे खुलेआम अखबारों में लिखते थे जबकि बोल्वेशिक पार्टी का समूचा नेतृत्व या तो विदेश में था या जेल में या निर्वासन में। तब भी, यह जरूर कहना होगा कि चौथी डूमा के चुनाव के दौरान बोल्शेविकों के पास एक ऐसा शक्तिशाली हथियार था जो इसके पहले के चुनावों में नहीं था। यह हथियार **प्रावदा** अखबार के रूप में था जो चुनावों से कुछ महीने पहले प्रकाशित होना शुरू हुआ था।

चुनावों के दौरान **प्रावदा** द्वारा निभाई गयी भूमिका व्यापक थी। यह अखबार व्यापक अग्रिम क्रांतिकारी और वर्ग-सचेत व्यापक मजदूरों के मुखपत्र के बतौर काम करता था। इसके साथ ही यह विलोपवादियों के विरुद्ध उदारपंथी पूंजीपतियों के प्रभाव के विरुद्ध और बगैर रंग-रूप लिये गैर पार्टी दृष्टिकोण के विरुद्ध जो मजदूर आंदोलन के लिए बहुत ज्यादा नुकसान देह था, संघर्ष चलाता था।

जून, 2012 से शुरू करके **प्रावदा** के पन्ने, आगामी चुनावों के प्रभावों पर लेख टिप्पणियां, पत्र व्यवहार इत्यादि से भरे होते थे। **प्रावदा** के शहरी जनवादी निर्वाचकों के अनुपस्थितवाद के विरुद्ध बड़ा अभियान चलाया। इसने लोगों को अपने अधिकारों की हिफाजत के लिए और सभी औपचारिकता को पूरा करने के बारे में बार-बार आह्वान किया। अखबार के प्रत्येक अंक में निर्वाचकों को याद दिलाया जाता था कि वे यह देख लें कि उनका नाम तो सूची में कहीं गायब तो नहीं है। यदि ऐसा हो तो वे दुबारा नाम डालने की आवश्यक कार्यवाही करें।

प्रावदा ने मजदूरों के क्यूरी के चुनाव की तैयारी में और भी बड़ी भूमिका अदा की थी। जहां शहरों के क्यूरी के चुनाव में ज्यादा महत्व चुनाव की सभाओं को दिया जाता था यहां पर पुलिस की निगाहें ज्यादा रहती थीं। मजदूरों की क्यूरी के चुनाव में कोई चुनावी हथियार नहीं था। कानून मजदूरों की चुनाव सभाओं को प्रतिबंधित करता था। ऐसी हालत में **प्रावदा** द्वारा चलाये गये उद्वेलन ने विशेष महत्व धरण कर लिया।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–01, 01–15 जनवरी, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक–II
: पेत्रोग्राद में चुनाव

फैक्टरियों और मिलों से प्रतिनिधियों का चुनाव 1912 की पतझड़ की शुरूवात में होना था, लेकिन गर्मियों के महीनों में ही पेत्रोग्राद के मजदूरों के बीच तैयारी और उद्वेलन की शुरूवात हो चुकी थी। (रूस में गर्मियों के बाद पतझड़ ऋतु आती है-स.)

केन्द्रीय कमेटी ने पेत्रोग्राद के चुनावों को विशेष महत्व दिया था और इसलिए पेत्रोग्राद संगठन को निर्देश दिये थे कि वह अपने काम को यथासंभव व्यापक बनाये और चुनाव अभियान के लिए तमाम पार्टी शक्तियों को गोलबंद करे। पेत्रोग्राद कमेटी ने चुनावों को संचालित करने के लिए एक आयोग का गठन किया था और शहर के वार्डों को अपने सदस्यों के बीच जिम्मेदारी देकर बांट दिया था।

अभियान के लिए बोल्शेविक मुख्यालय **प्रावदा** के सम्पादकीय कार्यालय होते थे जो कठिन और निरंतर कार्य की जगह हो गये थे। इन स्थानों में जिलों के और अलग-अलग फैक्टरियों व मिलों के प्रतिनिधियों के साथ मीटिंगें होती थीं। इसी के साथ ही शहर के जिलों में गैर-कानूनी चुनाव सभायें संगठित की जाती थीं।

इस तथ्य का ध्यान रखते हुए कि प्रत्येक ''संदिग्ध'' मजदूर पर पुलिस द्वारा सतत निगरानी रखी जाती थी, हमें छोटे समूहों में भी एकत्रित होने के लिए तमाम तरह के बहाने अपनाने पड़ते थे। आम तौर पर पुलिस की निगाह से बचने के लिए 10 से लेकर 20 लोगों तक की ही छोटी बैठकें बुलायी जाती थीं। गर्मी हमारी मदद करती थी। पिकनिक पार्टियों के नाम पर मजदूरों के समूह बाहरी इलाकों में अधिकांशतः ओकलीता से आगे के जंगल में जाते थे। जंगल पुलिस के जासूसों से बचने की सबसे अच्छी जगह थी। ये जासूस शहर के बाहरी हिस्से से आगे जाने का साहस नहीं करते थे क्योंकि वहां से बच निकलना आसान नहीं था और कि अलग-थलग वीरान जगहों पर वे अपने ऊपर होने वाले हमलों से डरते थे।

मीटिंगों में विलोपवादियों के साथ तीखी बहस उठ खड़ी हुई। हमारी पार्टी ने मजदूरों का आहवान किया कि वे चुनाव में बुनियादी, बिना कटी-छंटी मांगों के आधार पर हिस्सा लें और अपने प्रतिनिधियों के बतौर केवल बोल्शेविकों को ही चुनें। विलोपवादी निरंतर ''एकता'' के बारे में, संयुक्त मोर्चे की आवश्यकता के बारे में, गुटीय विवादों को खत्म करने की आवश्यकता के बारे में और वस्तुतः उनके उम्मीदवारों को चुनने के बारे में बात करते थे।

कुछ स्थानों पर समाजवादी-क्रांतिकारी भी सामने आये और चुनावों के बहिष्कार पर जोर दिया, लेकिन उनके प्रस्तावों को मजदूरों के बीच कोई सफलता नहीं मिली। सभी बैठकों में विलोपवादियों और बोल्शेविकों के बीच मुख्य बहस थी।

गर्मियों के अंत आते-आते ''जंगल'' की बैठकों में उम्मीदवारों पर चर्चा शुरू हो गयी थी। चुनाव अभियान की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए संबंधित फैक्टरियों और मिलों के मजदूरों के बीच सम्भावित उम्मीदवार के पक्ष में उद्वेलन तत्काल शुरू करना चाहिए था। हालांकि यह असम्भव था। सम्भावित उम्मीदवार की गिरफ्तारी उसी क्षण हो जाती जिस क्षण उसका नाम बड़े पैमाने पर प्रचारित हो जाता। प्रतिनिधि चुनावों के बाद भी महफूज नहीं थे। लेकिन सम्भावित प्रतिनिधि को पुलिस अपने शिकंजे में पहले से ही कस सकती थी। इसलिए संभावित उम्मीदवारों के नाम गुप्त रखे गये और मजदूरों को इन नामों के बारे में चुनावों से पहले सिर्फ अंतिम क्षणों में ही सूचना दी गयी।

चुनावों में कौन सी राजनीतिक पार्टियां उम्मीदवार पेश कर रही थीं? अपने ''रूसी जनता के संघ'', ''आर्चेण्जल मिशेल के संघ'' और ऐसे ही संगठनों के साथ ब्लैक हण्ड्रेड फैक्टरियों और मिलों में अपने चेहरे दिखाने तक से डरते थे। उदार पूंजीपतियों की पार्टियों की भी मजदूरों के बीच कोई संभावना नहीं थी। हालांकि कैडेट पार्टी मजदूरों के हितों की रक्षा करने का दावा करती थी, लेकिन मजदूर अच्छी तरह समझते थे कि इन पूंजीवादी पार्टियों से किस तरह की सुरक्षा की उम्मीद की जा सकती है क्योंकि इन पार्टियों का नेतृत्व सर्वहारा वर्ग के जानी दुश्मन- उद्योगपतियों और व्यापारियों- का है।

यद्यपि वे अपने खुद के उम्मीदवारों के पक्ष में उद्वेलन करने की हिम्मत नहीं जुटा पाये, तथापि कैडेटों ने सामाजिक-जनवादियों के अभियान को नुकसान पहुंचाने के प्रयास करने के लोभ से अपने को नहीं रोका। चुनावों से कुछ दिन पहले उन्होंने अफवाह फैला दी कि सामाजिक-जनवादी डूमा का बहिष्कार कर रहे हैं। यह वही पुराना झूठ था जिसका इस्तेमाल कैडेट इसके पहले के चुनाव अभियानों में कर चुके थे।

एक तरफ दक्षिणपंथी और उदारवादियों की पार्टियां थीं जो लड़ाई से बाहर थीं और दूसरी तरफ समाजवादी-क्रांतिकारियों द्वारा डूमा का बहिष्कार किया गया था। वस्तुतः मजदूरों के चुनावी क्यूरिया की लड़ाई में सिर्फ सामाजिक-जनवादी पार्टी ने मैदान संभाल रखा था। यह संघर्ष बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच तकरीबन खालिस तौर पर था। लेकिन इसी के साथ ही यह संभव था कि कुछ असंभावित उम्मीदवार निर्दलीय के बतौर चुन लिए जाएं और जो बाद में निर्वाचकों के चुनाव में भूमिका अदा करें। ऐसे गैर-पार्टी लोग आम तौर पर पार्टी उम्मीदवारों के विरुद्ध ऐसे तर्क देते थे कि ''किसी को किसी भी पार्टी की छत्रछाया के नेतृत्व में नहीं होना चाहिए, कि ''मजदूरों से परिचित ईमानदार लोगों को चुनना आवश्यक है।''

बोल्शेविकों ने इस अवस्थिति पर निरंतर हमले किये और मजदूर वर्ग पर पड़ने वाले इसके नुकसान की व्याख्या की और बताया कि गैर-पार्टी लोग ऐसे लोग हैं जिनका न तो कोई दृढ़ विश्वास है और न कोई सिद्धांत है। ये ऐसे लोग हैं जो आसानी से गलत दिशा में जा सकते हैं। मजदूर वर्ग का केवल ऐसी ही पार्टी के सदस्य प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जिसका अपना एक प्लेटफार्म हो और इसका अपना एक कार्यक्रम हो और जो अपने प्रतिनिधियों पर नियंत्रण रखती हो।

चुनावों की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आती गयी, वैसे-वैसे चुनावी संघर्ष और तीखा होता गया। चुनावों की ठीक-ठीक तारीख पहले से मालूम नहीं थी। यह सरकार की चालबाजियों में एक थी, जो अचानक चुनाव की तारीख तय करने के जरिए मजदूरों को गैर-जानकारी में रखने का प्रयास करती थी और इसके जरिये मतदाताओं की संख्या कम करने की कोशिश करती थी।

पेत्रोग्राद में मजदूरों के निर्वाचक क्यूरिया के प्रतिनिधियों के चुनाव 16 सितम्बर, इतवार के दिन तय किये गये थे। इसकी भी जानकारी मजदूरों को 14 सितम्बर, शुक्रवार के दिन हो पायी और कुछ फैक्टरियों में तो यह जानकारी 15 सितम्बर, शनिवार को दी गयी। सेम्यानिकोवस्की वर्क्स में तो तीन छुट्टियों के दिन चुनावों की घोषणा भेजी गयी यानी कि ऐसे समय में जब वहां कोई मजदूर नहीं थे। चुनावों की तारीख तक दोनों बोल्शेविकों और मेंशेविकों ने अपनी तमाम शक्तियों को गोलबंद कर लिया था। कानून के अनुसार, चुनाव सभा के लिए जगह उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी फैक्टरी प्रशासन की थी। लेकिन इस कानूनी आवश्यकता को भी हमेशा नहीं पूरा किया गया। कुछ जगहों पर जगह बंद थी इसलिए चुनाव नहीं हो सका। कुछ जगहों पर महज 15 मिनट के लिए जगह खोली गयी, इसलिए देर से आने वाले मजदूर मतदान नहीं कर सके।..मजदूरों ने जब चुनाव आयोग से इन पर विरोध दर्ज कराया तो मजदूरों से यह कहा गया कि अब बहुत देर हो चुकी है, इसलिए आयोग उनके अधिकारों की पुनर्स्थापना के लिए कुछ

नहीं कर सकता।

.....

(फैक्टरी प्रशासन और सरकारी मशीनरी के प्रतिनिधियों के चुनाव को रोकने के सारे प्रयास असफल हो गये। कहीं से भी दक्षिणपंथी प्रतिनिधि नहीं चुना गया। मजदूरों के प्रतिनिधियों के चुनाव के दौरान पेत्रोग्राद के मजदूरों ने पूरी तौर पर क्रांतिकारी अवस्थिति अपनायी थी।)

.....

(इस प्रकार) पेत्रोग्राद के मजदूरों के निर्वाचक क्यूरिया के लिए 80 प्रतिनिधि चुने गये जिनमें सामाजिक-जनवादियों का व्यापक बहुमत था। इनमें से कई का क्रांतिकारी अतीत था। उनको पुलिस द्वारा प्रताड़ित किया गया था, उन पर न्यायालयों में मुकदमा चलाया गया था, उनको दूर-दराज के क्षेत्रों में निर्वासित किया गया था। तब भी, उनमें से कुछ ने पार्टी मतभेदों पर अपना मन नहीं बनाया था। वे पार्टी के भीतर दो धड़ों के बीच ढुलमुल थे। इस प्रकार, यह स्पष्ट नहीं था कि चुनावों की दूसरी मंजिल में (मजदूरों के निर्वाचक क्यूरिया से निर्वाचकों के चयन में) किसको चुना जायेगा जो भविष्य के संसद सदस्य (डूमा के डिप्टी) के चुनाव को तय करेंगे।

मेंशेविकों और बोल्शेविकों दोनों ने प्रतिनिधियों के बीच सघन अभियान शुरू कर दिया। दोनों संदेहशील प्रतिनिधियों को अपने पक्ष में करने की कोशिश में लग गए। निर्वाचकों के लिए अभियान प्रतिनिधि के अभियान की तुलना में ज्यादा आक्रामक था। यहां भी डूमा के चुनाव कानून हमारे रास्ते में कई रुकावटें खड़ी करते थे। प्रतिनिधियों की किसी भी सभा को इजाजत नहीं थी और ऐसी सभायें करने के सारे प्रयास इस या उस बहाने पुलिस द्वारा रोक दिये जाते थे। पुलिस इस बात पर निरंतर निगरानी रखती थी कि मजदूरों के प्रतिनिधि आपस में कोई संवाद न कर सकें।

इस कारण से चुनावों की दूसरी मंजिल में अखबारों ने अभियान चलाने में भारी भूमिका निभायी। **प्रावदा** और **लूच** (मेंशेविकों का अखबार) ने अपने धड़े के लिए उद्वेलन चलाया और प्रतिनिधियों का आह्वान किया कि उनके उम्मीदवारों के लिए मतदान करें। दोनों धड़ों ने अपने तर्कों का सारा जखीरा इस्तेमाल किया और प्रतिनिधियों के चुनावों के दौरान की तुलना में दोनों अखबार के बीच तर्क-वितर्क और तीखे हो गये।

बोल्शेविकों के विरुद्ध मेंशेविक-विलोपवादियों का प्रधान तर्क यह था कि बोल्शेविक मजदूर वर्ग की एकता को तोड़ रहे हैं। वे ऐसा आरोप लगातार लगा रहे थे। एकता की बातें करके मेंशेविक राजनीतिक कार्यक्रमों पर बहस को किनारे लगाने की कोशिश करते थे। क्योंकि वे पहले से जानते थे कि इस मुद्दे पर वे पिट जायेंगे। प्रत्येक संभव तरीके से इस बहस से किनाराकस्सी करते हुए वे लगातार ''सहमति'', ''एकता'' और ''निजी उम्मीदवारों'' की चीख पुकार मचाते थे।

प्रावदा ने मेंशेविकों को बेनकाब करते हुए लिखा कि मजदूर वर्ग के भीतर संघर्ष से डरने का कोई कारण नहीं है, कि ऐसा संघर्ष उनकी एकता को नष्ट नहीं करेगा बल्कि इसके विपरीत वह भविष्य में इसको मजबूत करेगा।

''यह संघर्ष अवश्यम्भावी है क्योंकि मजदूरों को यह तय करना है कि डूमा में सामाजिक-जनवादी धड़ों को कौन सी कार्यनीति अपनानी चाहिए। यह संघर्ष- हम इस पर विशेष जोर देते हैं- मजदूर वर्ग की एकता को तनिक भी खतरे में नहीं डालेगा, क्योंकि इस समय सवाल यह है कि इस या उस प्रतिनिधि को निर्वाचक के बतौर चुना जाए। मजदूरों को एकताबद्ध होकर कार्यवाई करनी चाहिए और वह करेगा, लेकिन ठीक इसी एकता के लिए यह आवश्यक है कि मजदूरों के डिप्टी को बहुमत के न कि अल्पमत के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।''

निर्वाचकों के चुनाव के एक सप्ताह पहले प्रतिनिधियों की गैरकानूनी बैठक जंगल में हुई। इस बैठक में बोल्शेविकों की पेत्रोग्राद कमेटी और मेंशेविकों की सांगठनिक कमेटी के कुछ प्रतिनिधि भी शामिल हुए। इस बैठक में भी तीखी बहस हुई। तीखी बहस के बाद बोल्शेविकों के प्रस्ताव को दो-तिहाई उपस्थित प्रतिनिधियों ने समर्थन किया। इस बैठक में बोल्शेविकों का कहना था कि उन्हीं कामरेडों को निर्वाचकों के बतौर चुनना चाहिए जो पार्टी कार्यक्रम को लागू करें और पार्टी के निर्देशन में काम करें जबकि विलोपवादी तर्क दे रहे थे कि फूट से बचने के लिए हमें व्यक्तियों को चाहे उनका राजनीतिक प्लेटफार्म कोई भी हो, चुनना चाहिए।

.....

मजदूरों के निर्वाचक क्यूरिया के इकट्ठे होने और निर्वाचकों के चुनाव में भी अधिकारी तरह-तरह की बाधायें खड़ी करते रहे। कई जगह के प्रतिनिधियों को ''अयोग्य'' घोषित कर दिया गया।... इससे मजदूरों में गुस्सा भड़क उठा। इसके जबाव में पेत्रोग्राद के मजदूर बड़े पैमाने की हड़ताल में चले गये। यह हड़ताल पूरी तौर पर राजनीतिक थी। इसमें कोई आर्थिक मांग नहीं पेश की गयी थी। 10 दिन के भीतर 70,000 से ज्यादा लोग इस आंदोलन में शामिल हो गये। मजदूरों ने यह बहुत साफ तौर पर प्रदर्शित कर दिया था कि वे अपने मतदान के अधिकार को नहीं छोड़ेंगे और उन्होंने यह महसूस कर लिया था कि इन चुनावों का क्या मतलब है और कि डूमा में उनके डिप्टी के भविष्य में क्या कार्यभार होंगे।

यह हड़ताल आंदोलन तब तक जारी रहा और बढ़ता रहा जब तक सरकार ने दुबारा प्राथमिक स्तर के चुनावों की उन स्थानों के बारे में घोषणा नहीं कर दी जहां चुनाव बाधित किये गये थे। यह मजदूर वर्ग और विशेषतौर पर पेत्रोग्राद के मजदूरों की बड़ी विजय थी। पेत्रोग्राद के मजदूरों ने क्रांतिकारी वर्ग-सचेतनता का व्यवहार किया था।

प्रावदा और हमारे पार्टी संगठन ने उतनी ही मजबूती के साथ प्रचार अभियान चलाया जितना कि पहले चुनाव के दौरान चलाया था। इस दौरान भी मजदूरों को मतदान देने के अधिकार से वंचित किये जाने के विरुद्ध आंदोलन जारी रहा। फैक्टरियों और मिलों के सामने होने वाली सभाओं ने क्रांतिकारी भावना की और चुनाव अभियान में बढ़ी हुयी दिलचस्पी को उजागर किया।

बोल्शेविकों द्वारा जारी किये गये निर्देशों में हजारों मजदूरों के हस्ताक्षर थे और इन्हें उन फैक्टरियों और मिलों में भी पारित किया गया जहां प्रतिनिधियों के पहले चुनाव सम्पन्न हो गये थे।

पहले चुनाव में 50 प्रतिनिधि मजदूरों के बीच से चुने गये थे, अब इनकी संख्या बढ़कर 80 से अधिक हो गयी थी।...ऊपर बताये गये बोल्शेविकों के निर्देशों को व्यापक समर्थन मिला था।

बोल्शेविकों के निर्देशों को प्रतिनिधियों ने बिना किसी जोड़ व संशोधन के पारित किया था जो निम्न हैं:

''1905 के आंदोलन द्वारा पेश की गयी रूसी अवाम की मांगों को अभी हासिल नहीं किया गया है।

प्रतिक्रियावाद की वृद्धि और ''हुकूमत के नवीनीकरण'' ने उन मांगों को न सिर्फ संतुष्ट नहीं किया है बल्कि इसके विपरीत उनको और विकराल बनाया है।

न सिर्फ मजदूरों को हड़ताल के अधिकार से वंचित किया गया है। इस बात की कोई गारण्टी नहीं है कि ऐसा करने पर उनको निकाल बाहर नहीं किया जायेगा; न सिर्फ उनको यूनियनों और सभाओं को संगठित करने का कोई अधिकार नहीं है- इस बात की कोई गारण्टी नहीं है कि ऐसा करने पर वे गिरफ्तार नहीं होंगे; उनको डूमा में चुनने का भी अधिकार नहीं है, क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें ''अयोग्य'' घोषित कर दिया जायेगा या निर्वासित कर दिया जायेगा, जैसा कि पुतिलोव वर्क्स और नेव्स्की शिपयार्ड के मजदूरों को कुछ दिन पहले ''अयोग्य'' करार दे दिया गया था।

इस सबके अलावा करोड़ों भुखमरी के शिकार किसान हैं जिनको जमींदारों और ग्रामीण पुलिस मुखियाओं की दया पर छोड़ दिया गया है।

यह सब इस बात का संकेत देते हैं कि 1905 की मांगों को हासिल करने की आवश्यकता है। रूस के आर्थिक जीवन की स्थिति, जिसके लक्षण आ रहे औद्योगिक संकट और किसान समुदाय के व्यापक हिस्से की बढ़ रही कंगाली में पहले से दिखाई दे रहे हैं, 1905 के उद्देश्यों को हासिल करने की आवश्यकता को पहले कभी से ज्यादा फौरी

बनाते हैं।

इसलिए हम सोचते हैं कि रूस जनआंदोलनों की पूर्ववेला में है, शायद 1905 की तुलना में ज्यादा जोरदार तरीके से। लेना की घटनाओं द्वारा ''अयोग्य'' ठहराने के विरोध में होने वाली हड़तालों इत्यादि द्वारा यह सिद्ध होता है।

जैसा कि 1905 के मामले में था, रूसी सर्वहारा वर्ग, जो रूसी समाज का सबसे अग्रिम वर्ग है, फिर से आंदोलन के हिरावल के बतौर कार्रवाई करेगा।

इसका एकमात्र संश्रयकारी लम्बे समय से पीड़ित किसान समुदाय है जो रूस को सामंतवाद से मुक्ति दिलाने में अत्यधिक दिलचस्पी रखता है।

दो मोर्चों पर लड़ाई- सामंती व्यवस्था के विरुद्ध और उदारपंथी पूंजीपति वर्ग के विरुद्ध जो पुरानी ताकतों के साथ गठजोड़ बनाना चाहता है- अगली कार्रवाइयों का ऐसा ही रूप है जिसे अवाम को अवश्य अपनाना चाहिए।

लेकिन मजदूर वर्ग द्वारा जनता के आंदोलन के नेता के बतौर अपनी भूमिका सम्मानजनक तरीके से निभाने के लिए इसे अपने हितों की चेतना से और बड़े स्तर पर संगठन से सुसज्जित होना होगा।

डूमा का मंच, मौजूदा हालात में, सर्वहारा वर्ग के व्यापक हिस्से को सचेत करने और संगठित करने के सबसे बढ़िया साधनों में एक है।

इसी मकसद के लिए ही हम अपना डिप्टी डूमा में भेज रहे हैं और हम उसको तथा चौथी डूमा के समूचे सामाजिक-जनवादी धड़े को यह जिम्मेदारी देते हैं कि वह डूमा के मंच से(ट्रिव्यून से) हमारी मांगों को व्यापक रूप से प्रचारित करें और वह राज्य डूमा में कानून बनाने के काम से न खेलें।

हम चौथी डूमा के सामाजिक-जनवादी धड़े और विशेष तौर पर अपने डिप्टी का आह्वान करते हैं कि वह ब्लैक डूमा के विरोधी खेमे में मजदूर वर्ग के फरहरे को ऊंचा उठाये रखे।

हम सामाजिक-जनवादी धड़े के सदस्यों की आवाजों को, सर्वहारा वर्ग के अंतिम ध्येय की घोषणा करते हुए 1905 की समग्र और बिना कटी-छंटी मांगों की घोषणा करते हुए, लोकप्रिय आंदोलन के नेता के बतौर रूसी मजदूर वर्ग की घोषणा करते हुए और ''जनता की आजादी'' के गद्दार के बतौर उदार पूंजीपतियों की निंदा करते हुए डूमा मंच से जोर-शोर से गूंजती हुई सुनना चाहते हैं।

हम चौथी डूमा के सामाजिक-जनवादी धड़े का आह्वान करते हैं कि वे उपरोक्त नारों के आधार पर अपनी कार्रवाइयों में एकताबद्ध होकर और अपनी कतारों से एकजुट होकर कार्य करें।

वह व्यापक जन समुदाय के साथ निरंतर सम्पर्क से अपनी ताकत ग्रहण करे।

वह रूस के मजदूर वर्ग के राजनीतिक संगठन के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े।''

इस निर्देश के आधार पर चुनावों की दूसरी मंजिल पूरी हुई। **प्रावदा** में चुनाव परिणामों का सार-संकलन करते हुए कामरेड स्तालिन ने इस तथ्य पर जोर दिया कि बोल्शेविकों के निर्देशों की स्वीकृति स्पष्ट तौर पर दिखाती है कि डूमा में किसको चुना जाना चाहिए।

''इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि विलोपवादियों ने मुद्दे से भटकाने की कैसी भी कोशिश की हो, प्रतिनिधियों की इच्छा सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु, निर्देशों के सवाल पर बिल्कुल साफ है। प्रतिनिधियों के व्यापक बहुमत ने डिप्टी के लिए **प्रावदा** के निर्देशों को स्वीकार किया।...यह स्पष्ट है कि निर्देश बुनियादी तौर पर विलोपवादियों के प्लेटफार्म से भिन्न हैं और कि वस्तुतः वे पूर्णतया विलोपवादी-विरोधी हैं। सवाल यह है: यदि डिप्टी के लिए विलोपवादी अपना उम्मीदवार नामित करने की हिम्मत करते हैं तो फिर निर्देशों का क्या होगा जो प्रतिनिधियों के फैसलों के अनुसार डिप्टी के लिए बाध्यकारी है''?

.....

इसके बाद क्यूरिया मजदूरों का प्रतिनिधित्व करने के लिए डिप्टी का चुनाव करने के लिए आगे बढ़ा। सभी मजदूर निर्वाचक, मेंशेविक और बोल्शेविक, दोनों मतदान के लिए बढ़े। ...विलोपवादियों को बहुत कम मत मिले।

अपनी इस असफलता से बौखला कर विलोपवादियों ने चुनाव संचालन करने के तरीकों के बारे में कुत्सा प्रचार अभियान चलाया। इससे वे अपनी असफलता को समझने की कोशिश कर रहे थे।

(यह दूसरे अध्याय के मुख्य हिस्सों का भावानुवाद है।-स.)

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–02, 16–31 जनवरी, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक–III

: चौथी राज्य डूमा में सामाजिक–जनवादी धड़ा

पेत्रोग्राद में चुनाव होने के एक महीने बाद राज्य डूमा का सत्र शुरू हुआ। यह महीना सामाजिक–जनवादी धड़े के गठन की और हमारे धड़े की गतिविधियों से जुड़े शुरूआती कार्य की तैयारियों में लगाया गया।

मजदूर डिप्टी लोगों (सांसदों) के समक्ष दरपेश कार्यभारों में डूमा के भीतर की गतिविधि महज एक छोटा हिस्सा थी, उनके कार्य का बड़ा हिस्सा डूमा के बाहर होना था। चुनाव सम्पन्न होने के तत्काल बाद में इसमें और उनके पार्टी के नये व ट्रेड यूनियन कार्यो, **प्रावदा** के कार्य, इत्यादि में मशगूल हो गया।

जैसा कि पहले से तय था कि मुझे प्रत्येक दिन **प्रावदा** के संपादकीय कार्यालयों में जाना था। मैं **प्रावदा** के साथ घनिष्ठ सम्पर्क में था। इस समय **प्रावदा** कामरेड स्तालिन के निर्देशन में था, जो गैर कानूनी रूप से रह रहे थे और जो हाल के चुनाव अभियान के संचालन में और डूमा धड़े के गठन की तैयारियों के लिए जिम्मेदार थे।

प्रावदा कार्यालयों में रोजाना जाने के दौरान मैं मजदूर संगठनों के प्रतिनिधियों से मिलता था और मजदूरों की मनोदशा से परिचित होता था। मजदूर विभिन्न शहरी जिलों से आते थे और वे फैक्टरियों व कार्यस्थलों में होने वाली गतिविधियों की जानकारी देते थे और बताते थे कि कैसे कानूनी व गैर कानूनी संगठन कार्य कर रहे हैं।

पुलिस जासूस, जब मैं कार्यरत था तब भी मेरे ऊपर खासी निगरानी रखते थे। मेरे प्रतिनिधि चुने जाने के बाद यह निगरानी और तेज हो गयी। मेरे निर्वाचक चुने जाने के बाद पुलिस जासूसों की संख्या मेरी निगरानी में और बढ़ा दी गयी। और अब डिप्टी चुने जाने के बाद दिन–रात मेरे आवास की निगरानी होने लगी। वे मेरे प्रत्येक कदम पर निगाह रखते थे और मेरे यहां आने वालों का पीछा करते थे।

मेरे पास मजदूरों के पत्र आते थे जिनमें मजदूरों की जिंदगी के प्रत्येक पहलू की चर्चा होती थी। मुझे किये गये कामों की सूचना मिलती थी तथा ट्रेड यूनियनों पर होने वाले हमलों, हड़तालों, तालाबंदियों, बेरोजगारों और पुलिस उत्पीड़न के नये मामलों की जानकारी मिलती थी।

इन तमाम पत्रों का मुस्तैदी से जबाव देना आवश्यक था। कई मामलों में मैं याचिकाएं दाखिल करता था और विभिन्न सरकारी समस्याओं के साथ समझौता वार्ता करता था। ये सभी काम काफी समय लेते थे और डूमा के शुरू होने से पहले से ही मेरे दिन पूरी तरह व्यस्त रहते थे।

दूसरी ओर तीसरी डूमा की तरह ही, चौथी डूमा के सामाजिक–जनवादी धड़े बोल्शेविकों और मेंशेविकों से मिलकर बने एकताबद्ध धड़े के बतौर शुरू हुआ। लेकिन पहले वाली डूमाओं से अलग इन दो ग्रुपों के बीच तुरंत ही तीखे संघर्ष शुरू हो गये। तीसरी डूमा हिंसक प्रतिक्रिया और क्रांतिकारी संघर्ष में गिरावट के काल में शुरू हुई थी। दूसरी तरफ, चौथी डूमा के चुनाव ऐसे समय में हुए थे जब मजदूर आंदोलन उठान पर था। मजदूर वर्ग, क्रांतिकारी लड़ाई में फिर से शिरकत कर रहा था और अपने को विलोपवादी प्रवृत्तियों से तेजी के साथ मुक्त कर रहा था। इसी के अनुरूप पहली मीटिंग से ही धड़े के बोल्शेविक और मेंशेविक हिस्सों के बीच गहरे विरोध की स्थिति बरकरार थी।

सामाजिक जनवादी धड़े में 14 डिप्टी (सांसद) थे, इनमें से 6 बोल्शेविक और 7 मेंशेविक थे। एक सदस्य वारसा से था जिसने मेंशेविकों का समर्थन किया। ऊपरी तौर पर दिखने पर ऐसा लगता था कि मेंशेविकों को मजदूर वर्ग के बहुमत का समर्थन हासिल था। लेकिन ऐसा नहीं था। मजदूर वर्ग के बड़े केन्द्रों से बोल्शेविक चुने गये थे जबकि मेंशेविक दूर–दराज के मिश्रित आबादी के इलाकों से चुने गये थे। चौथी डूमा में निस्संदेह रूप से कम से कम तीन चौथाई क्रांतिकारी मजदूरों का समर्थन हासिल था।

हमारे सभी ''छः'' बोल्शेविक मजदूर वर्ग के दल से ही राज्य डूमा में आये थे। हममें से प्रत्येक ने अपने शुरूआती बचपन से ही व्यक्तिगत तौर पर पूंजीवादी हुकूमत के सभी 'दुखों' को भोगा था। हममें से सभी के लिए जारशाही सरकार द्वारा उत्पीड़न और पूंजीपति वर्ग और उनके पिठ्ठुओं द्वारा मेहनतकश वर्गों का निर्मम शोषण अमूर्त सिद्धांतों की बात नहीं थी बल्कि हमें खुद उनका अनुभव था।

मजदूर वर्ग ने व्यापक दिक्कतों के बाद, कई नुकसानों और निर्मम पराजयों के बाद राज्य डूमा में अपने प्रतिनिधियों को भेजने का अधिकार हासिल किया था। दुश्मन के ठीक जबड़ों के बीच में मौजूदा हुकूमत के विरुद्ध चलाये जाने वाले अपने संघर्ष से हमें रूसी मजदूरों द्वारा उठाये गये व्यापक क्षति को साबित करना था। इस महान और जिम्मेदारी भरे कार्यभार की चेतना मजदूर सांसदों की क्रांतिकारी ऊर्जा को और बढ़ा देती थी तथा उनकी इच्छा शक्ति को उस समय और मजबूत कर देती थी जब वे सर्वहारा वर्ग के खुले दुश्मनों के विरुद्ध लड़ने के साथ–साथ उनके छिपे दुश्मनों के विरुद्ध लड़ रहे होते थे। ऐसे छिपे व खुले दुश्मन क्रांतिकारी आंदोलन को पीछे खींचने का प्रयास कर रहे थे।

बोल्शेविक सांसदों के लिए पेत्रोग्राद के मजदूरों का समर्थन बहुत महत्व रखता था। डूमा के मंच से बोलते समय बोल्शेविक सरकार पर आरोप लगाते समय और उसका पर्दाफाश करते हुए हमेशा निश्चित महसूस करते थे कि ताउरिदा महल (संसद) की दीवारों से परे वे पेत्रोग्राद के मजदूरों के बीच से समर्थन पायेंगे जो अपनी हड़तालों व प्रदर्शनों के जरिये डूमा के भाषणों को कई गुणा ज्यादा प्रभावशाली बना देते थे। रूस के अन्य क्षेत्रों के मजदूरों ने भी जल्दी ही इसी रास्ते का अनुसरण किया। लेकिन पहला तीव्र प्रहार हमेशा पेत्रोग्राद मजदूरों की मजबूत और एकताबद्ध कतारों ने किया।

प्रावदा ने पेत्रोग्राद मजदूरों के एक ग्रुप द्वारा निम्नलिखित शुभकामना संदेश प्रकाशित किया।

''चौथी डूमा में कुछ बैंचें जो डूमा के अर्द्धवृत्त का छोटा हिस्सा है, वास्तविकता में आवाम का प्रतिनिधित्व करती है जिनका दिल रूसी मजदूरों और किसानों के दिलों से एकाकार होकर धड़कता है। ये सामाजिक–जनवादी धड़े के मजदूर सांसद हैं।''

ये सभी संदेश हमें निश्चित करते थे कि हमें डूमा में प्रवेश करते समय न सिर्फ उन लाखों मजदूरों का समर्थन हासिल है जिन्होंने चुनावों में सक्रिय हिस्सेदारी की थी बल्कि समूचे रूसी मजदूर वर्ग का समर्थन हासिल है। जन समुदाय के साथ यह मजबूत और घनिष्ठ सम्पर्क जो समय बीतने के साथ और मजबूत होगा। हमारे अत्यन्त जटिल और कठिन डूमा कार्य के लिए बहुत ज्यादा मददगार था।

तथाकथित विशेषज्ञ डूमा के सभी धड़ों की उनके काम में मदद करते थे। वे डूमा में प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टियों के पक्षधर और शुभचिंतक होते थे। उनकी मदद से भाषणों के लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठी की जाती थी। विधेयक तैयार किये जाते थे, प्रश्नों को तैयार किया जाता था तथा भाषणों के मसौदों पर बहस होती थी और पारित किया जाता था। ऐसे विशेषज्ञ सामाजिक–जनवादी धड़े के लिए विशेष महत्व रखते थे क्योंकि हमारी पार्टी गैरकानूनी थी।

सामाजिक–जनवादी सांसदों के काम की मदद पार्टी प्रचारकों एव पत्रकारों के साथ–साथ ऐसे सदस्यों द्वारा की जाती थी जिनके पास आवश्यक प्रशिक्षण होता था (वकील,

अर्थशास्त्री, इत्यादि) इनमें बोल्शेविक और मेंशेविक दोनों शामिल थे। हालांकि मेंशेविक संख्या में काफी ज्यादा थे क्योंकि बोल्शेविक जारशाही सरकार के जानी दुश्मन थे, इसलिए उनको खुफिया पुलिस द्वारा ज्यादा सताया जाता था। मेंशेविकों को तुलनात्मक रूप से ज्यादा कानूनी सुविधाएं मिली हुई थी और उनके कई महत्वपूर्ण सदस्य लंबे समय से पेत्रोग्राद में साहित्यिक और सामाजिक काम में बिना बाधा के लगे हुए थे। कई मेंशेविक नेता कानूनी तौर पर रह रहे थे।

जबकि बोल्शेविकों के लिए एकदम भिन्न स्थिति थी। विभिन्न कालों में स्तालिन, स्वेर्दलोव, कामेनेव, ओलमिल्स्की, मोलोतोव इत्यादि नेतृत्वकारी साथी धड़े के काम में हिस्सा लेते थे। लेकिन वे पेत्रोग्राद में गैरकानूनी तौर पर और थोड़े समय के लिए आते थे। वे निर्वासन से भागकर और नई गिरफ्तारी के बीच ही हिस्सा लेते थे।

डूमा का उद्घाटन

नई राज्य डूमा के काम की शुरूआत के साथ ही हड़तालों की नई लहर खड़ी हो गयी। मजदूर वर्ग ने हड़ताल के हथियार के महत्व को पूरी तौर पर समझ लिया था और जारशाही सरकार व पूंजीपतियों के विरुद्ध अपने संघर्षों में इसका व्यापक इस्तेमाल किया था।

डूमा के शुरू होने के ठीक पहले, जिसको 15 नवंबर, 1912 को तय किया गया था, पेत्रोग्राद में काले सागर बेड़े के कई नाविकों को मृत्युदंड देने के खिलाफ एक मीटिंग हुई। सेवास्तोपोल के एक नौसैनिक कोर्टमार्शल ने 17 नाविकों को मृत्युदंड और 106 को जेल की सजा दी थी। उन्हें विद्रोह करने के आरोप में सजा दी गयी थी। इसके जबाव में व्यापक हड़ताल संगठित की गयी। यह हड़ताल जल्द ही पेत्रोग्राद से रूस के अन्य शहरों में फैल गयी। एक सप्ताह के भीतर ही 60 हजार से ज्यादा मजदूर विरोध हड़ताल में शामिल हुए। पेत्रोग्राद के कुछ कारखानों में प्रदर्शन आयोजित हुए।

ये हड़तालें बगैर पर्याप्त तैयारी के और बोल्शेविकों व मेंशेविकों की कमेटियों या उनके अखबारों **प्रावदा** और **लूच** की गैर जानकारी के बिना ही आयोजित की गयी थीं। लेकिन इन हड़तालों में मजदूर वर्ग की व्यापक हिस्सेदारी थी। इन हड़तालों की निंदा मेंशेविकों ने और विशेषतौर पर विलोपवादियों ने की। बोल्शेविक इस बात के लिए संघर्ष कर रहे थे कि हड़तालों की अगुवाई कराने वाली कमेटियों के साथ बातचीत करके इसको सही दिशा दी जाय। डूमा के सामाजिक-जनवादी धड़े में इस पर सहमति बनी और हड़तालों का नेतृत्व करने वाली कमेटियों के साथ बात की गयी और हड़तालों को स्पष्ट तौर पर परिभाषित पार्टी लाइन पर खड़ा किया गया।

प्रदर्शनों के दौरान ट्रेड यूनियन संगठनकर्ताओं सहित बहुत सारे लोग गिरफ्तार किये गये। डूमा की शुरूआत होने तक गिरफ्तारियों का सिलसिला जारी रहा। पुलिस बोल्शेविकों पर विशेष निगाह रख रही थी जबकि वह मेंशेविकों को नजरंदाज कर रही थी।

ऐसी ही परिस्थितियों में जारशाही हुकूमत की इस विशेषता वाले माहौल में चौथी राज्य डूमा का उद्घाटन हुआ। मजदूर अपने सांसदों का अभिवादन करने के लिए आये जबकि पुलिस ने तलाशी, गिरफ्तारी और डराने-धमकाने के प्रचलित तरीकों के साथ मजदूरों का स्वागत किया।

चौथी राज्य डूमा में 442 डिप्टी (सांसद) थे जिनमें 65 दक्षिणपंथी, 120 राष्ट्रवादी और नरम दक्षिणपंथी, 98 अक्टूबरवादी, 48 प्रगतिशील कहलाने वाले, 59 कैडेट, 21 राष्ट्रीयताओं के समूह, 10 मुदोविक, 14 सामाजिक-जनवादी और 7 स्वतंत्र थे।

हमारे धड़े के लिए डूमा के अध्यक्ष मंडल के चुनाव में हिस्सेदारी के सवाल पर बिल्कुल स्पष्ट समझदारी थी। हमारे लिए यह पूर्णतया बेमानी था कि डूमा का कौन अध्यक्ष होता है। अध्यक्ष के चुनाव में हिस्सेदारी का मतलब यह होता कि डूमा के बहुमत के काम में किसी हद तक जिम्मेदारी लेनी पड़ती। यह ऐसी डूमा थी जो मजदूर वर्ग के विरोध में थी।

अध्यक्ष के चुनाव में हिस्सेदारी करने से इंकार करके हमने चौथी डूमा के पहले ही दिन यह प्रदर्शित कर दिया कि हमारे लिए संसदीय कार्य का कोई सवाल ही नहीं उठता, कि मजदूर वर्ग डूमा का इस्तेमाल देश में क्रांतिकारी संघर्ष को सुदृढ़ करने और ज्यादा मजबूत करने के लिए ही कर सकता है। डूमा के बहुमत के साथ अपने संबंधों में हमने इसी तरह का व्यवहार निर्धारित किया। कोई संयुक्त कार्य नहीं, अपितु दक्षिणपंथियों, अक्टूबरवादियों और कैडेटों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष और मजदूरों की निगाहों में उनका लगातार पर्दाफाश, मजदूर सांसदों का जमीदारों और अभिजातों की डूमा में यही कार्यभार बनता था।

सिर्फ त्रुदोविक पार्टी ही ऐसी पार्टी थी जिससे सामाजिक-जनवादी कमोवेश घनिष्ट संपर्क रखते थे।

अध्यक्ष के चुनाव के बाद सरकारी घोषणा पर बहस शुरू हुई। सामाजिक-जनवादी धड़े ने अपने बयान को तैयार करने में काफी समय लगाया। यह महत्वपूर्ण व जिम्मेदारी भरा कार्यभार था क्योंकि इस बयान में मजदूर वर्ग की बुनियादी मांगों की व्याख्या करनी थी तथा सामाजिक-जनवादी पार्टी, जो मजदूर वर्ग का हिरावल थी, के कार्यक्रम को समझाना था। इसी में बोल्शेविकों और मेंशविकों के बीच साझा घोषणा तैयार करने में परेशानी उपस्थित हुई। लम्बे और तीखे संघर्षों के बाद घोषणा में बोल्शेविकों की सभी बुनियादी मांगों को रखा गया।

इस घोषणा को पढ़ने की जिम्मेदारी बोल्शेविक सदस्य मालिनोवस्की को दी गयी। मालिनोवस्की ने राज्य डूमा की आलोचना वाला और जनता की प्रभुसत्ता की मांग वाले काफी बड़े हिस्से को पढ़ने से छोड़ दिया। मालिनोवस्की ने ऐसा व्यवहार क्यों किया, इस पर आगे विस्तार से चर्चा होगी।

लेकिन इस घोषणा वाले भाषण को पूरे तौर पर **प्रावदा** में रिपोर्ट किया गया। डूमा की बैठकों की स्ट्रेनोग्राफी रिपोर्ट को छापने को अखबारों को कानूनी अधिकार मिला हुआ था। इस तरीके से घोषणा की पूरी रिपोर्ट जनसमुदाय के बीच प्रसारित की गयी। चूंकि यही इसका मकसद था। इसमें बोल्शेविक सफल हुए। इस प्रकार, घोषणा में शामिल मांगों ने 'ब्लैक हंड्रेड हुकूमत' की और जारशाही सरकार की इसकी आलोचना ने, जारशाही के विरुद्ध मजदूरों के संघर्षों को मदद पहुंचायी तथा उन्हें घनीभूत किया।

पहला काम रोको प्रस्ताव

मजदूर सांसदों ने पया कि डूमा मंच से सरकार को संबोधित 'काम रोको प्रस्ताव' उद्वेलन का सबसे उपयोगी साधन है। विभिन्न सवालों को पूछकर हम जारशाही सरकार द्वारा किये गये निश्चित अपराधों के प्रति जनसमुदाय का ध्यान आकर्षित करने में सफल हुए। मौजूदा घटनाओं पर आधारित ये कार्यस्थगन, हमें बोल्शेविक तरीके से मंच का इस्तेमाल करने में समर्थ बनाते हैं। यानी कि 'ब्लैक हंड्रेड बहुमत' के सिरों से गुजरकर उद्वेलन करने में मौजूदा हुकूमत पर क्रांतिकारी धावा बोलने के लिए मजदूर वर्ग के बीच एकजुटता व दृढ़निश्चय पैदा करने में समर्थ बनाते हैं। इन अवसरों पर बोल्शेविकों ने जारशाही और पूंजीपति वर्ग के घावों और सड़े-गलेपन का प्रभावशाली तरीके से और सीधे तौर पर बेनकाब किया। प्रत्येक घटना के संबंध में जिसने कार्यस्थगन के लिए अवसर प्रदान किया, हमने मजदूर को दिखाया कि उसे अपने हालात में किसी सुधार की कोई उम्मीद करने का कोई कारण नहीं है और कि सर्वहारा वर्ग के पास एकमात्र रास्ता क्रांति का है।

जैसे ही उद्घाटन की औपचारिकताएं पूरी हो गयीं, जैसे कि परिचयपत्रों की छानबीन, अध्यक्ष मंडल का चुनाव, सरकार की नीति की घोषणा और उस पर बहस, वैसे ही हमारे धड़े ने अपना पहला काम रोको प्रस्ताव पेश किया। यह ट्रेड यूनियनों को परेशान करने से संबंधित था। यह जिस औपचारिक आधार पर खड़ा किया गया था वह पेत्रोग्राद में ट्रेड यूनियन का पंजीकृत करने से इंकार करने पर था, लेकिन वास्तविकता में यह आम तौर पर ट्रेड यूनियनों की स्थितियों को अपने में समेटता था।

ट्रेड यूनियनों का गठन और अस्तित्व 4 मार्च, 1906 के कानून या जिसे 'अस्थायी नियम' कहा जा रहा था, से संचालित होता था। ये सभी संघों और सोसाइटियों को संचालित करता था। वास्तविकता में यह कानून सोसाइटियों के गठन के लिए नहीं बल्कि उनके दमन के लिए आधार मुहैय्या कराता था। ट्रेड यूनियनें पूर्णतया किसी भी अधिकारी की दया पर, प्रांत के गवर्नर से लेकर शहर के पुलिस निरीक्षक तक की दया पर, निर्भर करता था। हालांकि ट्रेड यूनियन अधिकार कानूनी तौर पर अत्यन्त सीमित थे, फिर भी अधिकारियों के लिए यह पर्याप्त नहीं था। 'अस्थायी नियम' पुलिस के लिए बाध्यकारी नहीं माने जाते थे, वे इनका उल्लंघन अत्यन्त बेशर्मी के साथ करते थे।

यूनियनों को बिना किसी उचित आधार के तेजी से बार-बार कुचला जाता था। जैसे ही यूनियन अपने काम को आगे बढ़ाती थी उसे तुरंत ही कुचल दिया जाता था।

लेकिन इस प्रताड़ना से मजदूर हतोत्साहित नहीं होते थे बल्कि इसके विपरीत और ज्यादा मजदूर यूनियनों में शामिल होते जाते थे। एक यूनियन को जब बंद कर दिया जाता था, तो उसकी सदस्यता और उन्हीं उद्देश्यों को लेकर दूसरे नाम से यूनियन संगठित कर ली जाती थी। नई सोसायटी बनाने में कई तरह की पुलिस द्वारा खड़ी की गयी बाधाएं थीं। यूनियनों के पंजीकरण के लिए विशेष बोर्ड थे जो अत्यन्त बेतुके आधार पर आंदोलनों को रद्द कर देते थे। किसी भी यूनियन को पहली बार आवेदन करने पर पंजीकृत नहीं किया जाता था। केवल कई बार इंकार करने के बावजूद यदि यूनियन संस्थापकों में धैर्य और लगन अतिमानवीय होती थी तो अंततोगत्वा यूनियन को अस्तित्व में आने का अधिकार या यह कहना ज्यादा सही होगा कि पुलिस की मनमर्जी पर जल्दी ही मौत का अधिकार मिल जाता था।

पेत्रोग्राद की मेटल वर्कर्स यूनियन की स्थापना गैर-कानूनी तौर पर 1905 में हुई थी और 1905 से जब इसे अधिकारिक तौर पर पंजीकृत करा लिया गया, तब से यह यूनियन कई दमनों से गुजरते हुए और नये नामों से अपने को बनाये रख सकी। पुलिस जानते हुए कि नये नाम से पुरानी यूनियन ही है, कुछ नहीं कर सकी। वह फिर से नये आधार पर नई यूनियन को कुचलने की कोशिश करती रही।

मार्च, 1912 में भी पुलिस समय-समय पर धावा डालती रही और विशेष बोर्ड ने कई आधारों पर उसे बंद कर दिया जिसमें गैर कानूनी साहित्य रखने व हड़तालों को संगठित करने का आरोप लगाया गया था। ऐसे ही तालाबंदी की घोषणा होने पर विशेष बोर्ड यूनियन को बंद कर देता था। विशेष बोर्ड की ऐसी कार्यवाही और यूनियन को पुलिस दमन का शिकार होने के विरुद्ध सामाजिक-जनवादी धड़े ने 'काम रोको प्रस्ताव' को रखा था।

इस 'काम रोको प्रस्ताव' को इस तरह से सूत्रित करना था जिससे कि मजदूर वर्ग को यह समझ में आ जाय कि जारशाही सरकार उसके पूर्णतया विरोध में है और मजदूरों की मुक्ति सिर्फ क्रांति के रास्ते में ही है। दूसरी तरफ, उसकी कानूनी भाषा ऐसी होनी थी जो दुश्मनों के खुले और छिपे भरे डूमा में वे मांगे रखी जा सकें।

'काम रोको प्रस्ताव' पर जब कोई मजदूर सांसद अपनी बात रखते तो उसको चुप कराने का एक तरीका भी दुश्मनीपूर्ण डूमा में अपनाया जाता था।

सांसदों की आजादी एवं डूमा में ''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता'' केवल जारशाही का झूठ थी। यह हमारे लिए बिल्कुल स्पष्ट था कि सरकार उचित बहाने ढूंढकर मजदूर सांसदों से पूरी तरह निपटेगी। दूसरी डूमा के सामाजिक-जनवादी सदस्यों का मामला हमारे सामने था, जिन्हें कड़ी सजा के बतौर जेल भेज दिया गया था। लेकिन जितना भी बड़ा खतरा था, हमें कठिनाइयों पर और ज्यादा काबू पाना था। इससे हमारे भाषण और ज्यादा ओजस्वी, तीक्ष्ण होते गये। मजदूर सांसदों द्वारा झेली गयी परेशानियां मजदूरों पर और क्रांतिकारी प्रभाव छोड़ती थीं और इससे क्रांतिकारी संगठनों में वे और ज्यादा फौलादी होते थे।

हमारे भाषण को न सिर्फ विरोधी सदस्य डूमा में सुनते थे बल्कि लाखों-लाख मजदूरों तक हमारी बात जाती थी। ट्रेड यूनियनों को प्रताड़ित करने संबंधी हमारा काम रोको प्रस्ताव हालांकि डूमा में गिर गया। यह होना ही था। इसी प्रकार हमारा दूसरा काम रोको प्रस्ताव 14 दिसंबर को गिर गया। मजदूर वर्ग को जमींदारों व अभिजातों की डूमा से किसी अन्य फैसले की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। हमारे काम रोको प्रस्ताव का उद्देश्य ही मौजूदा हुकूमत के असली चरित्र को दिखाना और पर्दाफाश करना था।

ब्लैक हंड्रेड डूमा के भीतर सामाजिक-जनवादी धड़े द्वारा आयोजित इस प्रदर्शन को पेत्रोग्राद के मजदूरों की कार्यवाही का समर्थन मिला और उसे मजबूती प्रदान की। काम रोको प्रस्ताव के ही दिन पेत्रोग्राद के मजदूर एक दिन की हड़ताल पर चले गये। जब हम डूमा के मंच से बोल रहे थे, उस समय मजदूर फैक्टरियों और कारखानों को छोड़कर मीटिंगें कर रहे थे तथा विरोध प्रस्ताव पारित कर रहे थे।

14 दिसंबर को एक दिन की हड़ताल अच्छी तरह से संगठित की गयी थी और उसकी तैयारी भी की गयी थी। 13 दिसंबर को ही रूसी सामाजिक-जनवादी पार्टी की केंद्रीय कमेटी के हस्ताक्षरयुक्त यह घोषणा प्रकाशित की कि सामाजिक-जनवादी धड़े के समर्थन में मजदूर हड़ताल की कार्यवाही आयोजित करें।

मजदूरों ने हड़ताल की। इसका दमन जारशाही सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर किया गया। मजदूरों को फैक्टरी के आवासों से खाली कराके बाहर निकाला गया। मैक्सवेल नामक फैक्टरी के मजदूरों को प्रताड़ित करने और उनके द्वारा किये गये शानदार संघर्ष को बाकी पेत्रोग्राद के मजदूरों का समर्थन मिला। तालाबंदी के शिकार हुए और हड़तालों से निकाले गये मजदूरों के लिए सभी फैक्टरियों से पैसा इकट्ठा किया गया।

हमारा डूमा का धड़ा इन सभी चंदा अभियानों के केन्द्र में था। हमें सिर्फ पेत्रोग्राद के मजदूरों से ही नहीं बल्कि देश के अन्य औद्योगिक केन्द्रों से भी फंड मिला। इसने प्रदर्शित कर दिया कि मैक्सवेल फैक्टरियों की लड़ाई को मजदूर वर्ग एक अलग-अलग परिघटना नहीं समझता था, बल्कि पूंजीपतियों के विरुद्ध वर्ग युद्ध में एक चरण समझता था।

सामाजिक-जनवादी धड़े के सदस्य, मजदूर, सांसद, इन सब लड़ाइयों के बीचों-बीच थे। हम हड़ताली मजदूरों से निरंतर संवाद में रहते थे, उनकी मांगों को सूत्रित करने में मदद करते थे और इकट्ठा किये गये फंड को उनको सौंपते थे तथा विभिन्न सरकारी अधिकारियों से समझौता वार्ता करते थे, इत्यादि।

इन फैक्टरियों में हड़ताल एक पखवाड़ा से ऊपर चली। उन दिनों यह दीर्घकालिक हड़ताल समझी जाती थी और मजदूरों को समूचे पेत्रोग्राद के मजदूरों से नैतिक और भौतिक सहायता मिली जिससे ही वे इतना टिकने में समर्थ हो सके

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–03, 01–15 फरवरी, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक -IV

क्राको सम्मेलन

चौथी राज्य डूमा में सामाजिक जनवादी धड़ा रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी का अभिन्न अंग था। इस धड़े ने पार्टी के काम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फिर भी यह पार्टी संगठनों में मात्र एक संगठन था। पार्टी कांग्रेसों और सम्मेलनों के फैसले व प्रस्ताव, जो पूर्ववर्ती डूमाओं में सामाजिक-जनवादी धड़ों के काम का आधार थे, ने पार्टी और इनकी केंद्रीय कमेटी के अधीन काम करने वाले सहायक संगठन के बतौर धड़े को परिभाषित कर दिया था। कठोर केंद्रीयकृत व्यवस्था के भीतर यह अधीनता सफलतापूर्वक क्रांतिकारी कार्य की पूर्वशर्त थी। इस सिद्धांत को अपनाये बगैर भूमिगत हालात में काम करना असंभव था। सिर्फ ऐसे सांगठनिक ढांचे के कारण ही हमारी पार्टी रूस की दो क्रांतियों के बीच के संक्रमण काल की कठिनाईयों पर काबू पाने में समर्थ हो सकी थी।

मेंशेविक खेमे में केन्द्र के निर्देशों के प्रति इस तरह की कठोर अधीनता स्वीकार्य नहीं थी। पूर्ववर्ती डूमाओं में मेंशेविक सदस्यों ने पार्टी के नेतृत्वकारी केन्द्रों से स्वतंत्र कार्य करते हुए पार्टी अनुशासन को नजरंदाज किया था एवं उसका उल्लंघन किया था। वे धड़े को पार्टी से ऊपर के संगठन के बतौर मानते थे और इसे अक्सर पार्टी केन्द्र के विरोध में खड़ा करते थे।

इसके विपरीत बोल्शेविक सांसद नेतृत्वकारी पार्टी संगठनों से घनिष्ठ एवं अटूट बंधनों से बंधे हुए थे। चौथी डूमा के लिए समूचा चुनाव अभियान हमारी केंद्रीय कमेटी के पथ प्रदर्शन में और उसके निर्देशों के अनुसार चलाया गया था। क्राको से, विदेश में जहां हमारी पार्टी का सदर मुकाम स्थित था, हजारों धागे फैले हुए थे, जो चुनाव अभियान में लगे हमारे सभी संगठनों को एकल जाले में एकजुट करते थे। आम दिशा-निर्देशों को जारी करने के अतिरिक्त केंद्रीय कमेटी ने मजदूरों के चुनावी क्यूरिया के उम्मीदवारों के चयन में सक्रिय रूप से भूमिका निभायी थी। इस प्रकार, बोल्शेविक सांसद सिर्फ स्थानीय संगठनों के प्रतिनिधि के बतौर ही नहीं बल्कि समूची पार्टी के प्रतिनिधि के बतौर डूमा में पहुंचे थे।

डूमा चुनावों और इसके उद्घाटन से ही हमारे ''छः'' की समूची गतिविधि कामरेड लेनिन के प्रत्यक्ष दिशा-निर्देशों के अंतर्गत होती थी। चुनावों की प्रक्रिया के दौरान उन्होंने मजदूरों की मनोदशाओं, गैर-कानूनी चुनावी सभाओं को बहुत बारीकी से समझा था और **प्रावदा** इत्यादि को चुनाव प्रचार को निर्देशित किया था। इस अखबार में एक के बाद एक लेखों में उन्होंने टांग खींचने वाले विलोपवादियों के विरुद्ध बोल्शेविकों को वोट देने के लिए मजदूरों से अपील की थी।

चुनावों को सम्पन्न होने और मजदूर सांसदों के पेत्रोगाद पहुंचने के तत्काल बाद लेनिन ने धड़े के संगठन के सवाल को लिया, प्रत्येक सांसद के बारे में रुचि दिखायी, अभियान के परिणामों का समाहार किया, जिन परिस्थितियों में चुनाव हुए थे, उनकी जांच-पड़ताल की और मतदाताओं द्वारा सांसदों को दिये गये निर्देशों की छानबीन की।
.....जैसे-जैसे धड़े की गतिविधियां तेज होती गयीं हमारे ''छः'' की केंद्रीय कमेटी के साथ और सर्वोपरि लेनिन के साथ सम्पर्क और ज्यादा घनिष्ठ होते गये। सामग्री, सूचना इत्यादि क्राको भेजी जाती थी और क्राको से बोल्शेविक सांसद, साहित्य, भाषणों के लिए सूत्रित टिप्पणियां, उनके कामों के दौरान उठने वाले अलग-अलग सवालों पर निर्देश हासिल करते थे। कोड में लिखे पत्रों द्वारा, गैर कानूनी तौर पर सीमा पार करने वाले पार्टी सदस्यों के जरिये और अन्य प्रत्येक संभव तरीकों के जरिये इन सम्पर्कों को कायम रखा जाता था। प्रत्येक अवसर का इस्तेमाल किया जाता है और हां, जो कुछ किया जाता था वह बहुत ही गोपनीय तरीके से किया जाता था।....
.....खुफिया पुलिस उकसावेबाज एजेंटों से अपने लिए अतिमहत्वपूर्ण सूचनाएं हासिल कर लेती थी। हां, हम इस बात से परिचित थे कि हम जासूसों से चौतरफा घिरे हुए हैं लेकिन उनको खोज निकालना कठिन था। इसलिए गोपनीयता का अत्यन्त कड़ाई से पालन करना जरूरी था और ऊपर से नीचे तक प्रत्येक चीज में षड्यंत्र की व्यवस्था व्याप्त थी।

षड्यंत्र की प्रणाली का प्रत्येक उल्लंघन अपने आप में संदेह का आधार होता था और हम यह सोचने के लिए मजबूर हो जाते थे कि कहीं कोई जाल पुलिस तो नहीं बिछा रही है।.
.....जैसाकि पहले बताया जा चुका है कि डूमा के उद्घाटन से पहले केंद्रीय कमेटी और बोल्शेविक सांसदों का एक सम्मेलन विदेश में बुलाने के बारे में विचार किया गया था। यह सम्मेलन बोल्शेविक पार्टी के इतिहास में और क्रांतिकारी संघर्ष के लिए बहुत महत्वपूर्ण घटना बन गया था। इसे क्राको(गैलीसिया) में बुलाया गया था। इसे 28 दिसम्बर 1912 से 1 जनवरी 1913 के बीच में तय किया गया था। इसके पहले जनवरी, 1912 में एक साल पहले प्राग सम्मेलन हुआ था। इस एक वर्ष के दौरान क्रांतिकारी आंदोलन में शक्तिशाली विकास हुआ था जिसकी अभिव्यक्ति राजनीतिक व आर्थिक हड़तालों की वृद्धि में, जन प्रदर्शनों में, मजदूरों के अखबार की स्थापना और उसके सुदृढ़ीकरण इत्यादि में होती थी। इस काल के दौरान पार्टी के भीतर भी बड़े परिवर्तन हुए थे। सामाजिक जनवादी पार्टी के दो हिस्सों के बीच तीखी उठापटक और हमारे व मेंशेविकों के बीच तीखा संघर्ष हो गया था। भाषणों और लेखों में स्पष्ट तौर पर परिलक्षित विलोपवादी प्रवृत्तियां मेंशेविकों में व्याप्त थीं।
.....क्राको सम्मेलन ने एकता के अत्यन्त महत्व को स्वीकार करते हुए जोर दिया कि एकता इसी शर्त पर संभव है कि गुप्त गैर कानूनी संगठन को स्वीकार किया जाय। पुनर्एकता नीचे से- शॉप कमेटियां, जिला ग्रुपों इत्यादि में- होनी चाहिए जहां मजदूर खुद इस तथ्य को जांच सकें कि क्या गैर कानूनी संगठन को स्वीकार किया जा रहा है और क्या क्रांतिकारी संघर्ष को पूरे तौर पर समर्थन किया जा रहा है और क्रांतिकारी रणकौशल अपनाया जा रहा है।

इस सम्मेलन के एक प्रस्ताव में कहा गया, ''मौजूदा समय में एकमात्र सही किस्म का संगठन एक गैर कानूनी पार्टी है जो ऐसे केन्द्रकों से बनी हो जिसके चारों ओर कानूनी और अर्द्ध कानूनी समितियों का तानाबाना हो। गैर कानूनी केन्द्रकों को सांगठनिक तौर पर स्थानीय रोजमर्रा के हालात के अनुरूप ढालना चाहिए। इसमें मुख्य कार्यभार फैक्टरियों और कार्यशाला स्तर पर गैर कानूनी पार्टी कमेटियों की स्थापना करना तय किया गया जिसमें प्रत्येक केन्द्र में एक नेतृत्वकारी संगठन हो''।

सम्मेलन में महत्वपूर्ण सवालों में एक हमारे डूमा धड़े पर रिपोर्ट थी। धड़े के कार्य को सतर्क एवं बारीक बहस का मुद्दा बनाया गया। सम्मेलन के प्रस्ताव में यह पारित किया।

1. सम्मेलन नोट करता है कि अतुलनीय दमन और चुनावों में सरकारी हस्तक्षेप के बावजूद, सामाजिक जनवादियों के विरुद्ध बहुत सारे जिलों में निश्चित तौर पर बने ब्लैक हंड्रेड, उदारवादियों के गठजोड़ के बावजूद, रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी ने चौथी डूमा के चुनावों में बड़ी विजय हासिल की है। दूसरे शहरी चुनावी क्यूरिया में सामाजिक जनवादियों द्वारा प्राप्त मतों में बढ़ोतरी हर जगह हुई है, यहां पर ये मत उदारवादियों के हाथों से छीनकर मिले हैं। मजदूरों के चुनावी क्यूरिया में, जो हमारी पार्टी के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी को एक छत्र वर्चस्व मिला है। मजदूरों के चुनावी क्यूरिया में बोल्शेविकों को ही चुनकर मजदूर वर्ग ने पुरानी रूसी सामाजिक

जनवादी पार्टी और उसकी क्रांतिकारी परंपराओं के प्रति सर्वसम्मति से अपनी बेहिचक वफादारी की घोषणा की है।

2. सम्मेलन चौथी डूमा में सामाजिक जनवादी सांसदों के ओजस्वी काम का स्वागत करता है। उनका यह काम कार्यस्थगनों को पेश करने में और इसकी घोषणा में व्यक्त होता है जो सामाजिक जनवाद के बुनियादी सिद्धांत में मुख्यतः सही तौर पर परिभाषित हैं।

3. पार्टी परंपरा के अनुसार, इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि सामाजिक जनवादी के डूमा धड़े के लिए एकमात्र सही नीति समूची पार्टी के अधीन चलने की है, अपने केंद्रीय संगठनों द्वारा जिसका प्रतिनिधित्व होता है। सम्मेलन मानता है कि मजदूर वर्ग की राजनीतिक शिक्षा के हित में और सही पार्टी नीति को बनाये रखने को सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि धड़े के प्रत्येक कदम पर निगाह रखी जाय और इस प्रकार इसके काम पर पार्टी नियंत्रण स्थापित किया जाय।

इसी सम्मेलन के दौरान लेनिन ने कहा कि मजदूर सांसदों को डूमा का उपयोग उद्वेलन के लिए और जारशाही सरकार व तथाकथित उदारवादी पार्टियों के पाखंड दोनों को बेनकाब करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को विकसित करने में मदद करने के लिए होना चाहिए। मजदूर सांसदों को रूस के समूचे मजदूर वर्ग द्वारा सुना जाना चाहिए। इसके बावजूद डूमा के अंदर की कार्यवाही धड़े के कार्य का सिर्फ एक हिस्सा है। पार्टी के अभिन्न अंग के बतौर बोल्शेविक ''छः'' को डूमा के बाहर के व्यापक कामों में हिस्सा लेना चाहिए। पार्टी ग्रुपों का संगठन और दिशा निर्देशन तथा पार्टी अखबार व ट्रेड यूनियनों में गतिविधियां मजदूर सांसदों के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में हैं और उनसे सतत काम व प्रयास की मांग करती हैं।

मजदूर सांसदों को जनसुमदाय के सम्पर्क में रहना चाहिए तथा सभी मजदूर वर्ग के संगठनों को, चाहे कानूनी हो या गैर कानूनी, डूमा के बोल्शेविकों को क्रांतिकारी संघर्ष के नेता व संगठनकर्ता के बतौर समझना चाहिए।

क्राको सम्मेलन से बोल्शेविक ''छः'' ठोस व्यवहारिक हिदायतों से सुसज्जित होकर लौटे। चूंकि डूमा का सत्रावसान चल रहा था, इसलिए इसका फायदा उठाकर सभी अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में मजदूरों के बीच चले गये। इससे उनको मजदूरों की क्रांतिकारी मनोदशा को समझने में बहुत मदद मिली। खुफिया पुलिस लगातार इन सांसदों पर निगाह रखती थी। इससे इनकी यात्राएं काफी बाधित होती थीं। लेकिन खुफिया पुलिस खुले तौर पर सांसदों पर हमला करने से डरती थी क्योंकि इससे विरोध प्रदर्शनों का क्रांतिकारी विस्फोट होने का उन्हें खतरा दिखता था।

जनवरी, 1913 में प्रांतों की पहली यात्रा से लौटने के बाद सभी मजदूर सांसदों ने मजदूरों के बीच क्रांतिकारी भावना में भारी बढ़ोत्तरी के बारे में चर्चा की। प्रतिक्रिया के इसके पहले वाले काल की विशिष्टिता, मजदूरों में उदासीनता का समय अंततः पीछे छूट चुका था। सब जगह मजदूर वर्ग में संघर्ष की इच्छा, संगठित कार्यवाही के लिए जद्दोजहद तथा देश के राजनीतिक जीवन में जीवंत दिलचस्पी प्रकट हो रही थी।.....

डूमा का आम नजरिया भी स्पष्ट और तयशुदा था। मजदूरों को इससे कुछ भी पाने की उम्मीद नहीं थी। उन्होंने इसे बखूबी महसूस कर लिया था कि सर्वहारा वर्ग द्वारा निरंतर क्रांतिकारी संघर्ष के जरिये ही अपने लिए संतोषजनक स्थिति पायी जा सकती है। अपनी यात्रा के दौरान बोल्शेविक सदस्य विलोपवादी प्रवृत्तियों और पार्टी एकता के संबंध में क्राको सम्मेलन के फैसलों के सहीपन को परखने में समर्थ हुए। विलोपवादी प्रवृत्ति, जो बुद्धिजीवी प्रचारकर्ताओं के बीच पैदा हुई और वे ही इसके समर्थक थे, मजदूरों के लिए बिल्कुल बेगानी थी और कई जिलों में तो यह बिल्कुल अनुपस्थित थी। परिणामस्वरूप, कई सामाजिक-जनवादी ग्रुपों में **प्रावदा** और **लूच** के बीच तीखे विवाद को समझा नहीं गया। यह स्पष्ट था कि एकता हासिल करने के लिए शीर्ष स्तर पर कूटनीतिक समझौते आवश्यक नहीं थे बल्कि स्थानीय केंद्रकों के सभी सदस्यों की गैर कानूनी गतिविधि में हिस्सेदारी और ऐसी गतिविधियों के विरुद्ध संघर्ष की समाप्ति में थी। इस तरीके से पार्टी एकता एक हकीकत हो जायेगी।

यह राय क्राको सम्मेलन द्वारा तय की गयी नीति से पूरे तौर पर मेल खाती थी।

ओख्ता विस्फोट

पेत्रोग्राद के सर्वहारा ने नये वर्ष 1913 में तूफानी वातावरण में प्रवेश किया। यह डूमा में सामाजिक-जनवादी धड़े के प्रथम कार्यस्थगन प्रस्तावों से जुड़े हाल की हड़तालों और प्रदर्शनों के बाद हुआ। 15 दिनों की तालाबंदी के विरुद्ध समूचे पेत्रोग्राद के मजदूरों की मदद से लड़कर मैक्सवेल फैक्टरियों के मजदूर काम पर लौटे ही थे।

नये वर्ष की पहली राजनीतिक हड़ताल

9 जनवरी को पेत्रोग्राद के मजदूरों के असाधारण उत्साह से समर्थन किया। खूनी इतवार की वर्षगांठ के अवसर पर लगभग 80 हजार मजदूरों ने काम रोक दिया। इसके एक दिन पहले समूचे पुलिस बल को इस आशंका के कारण लगा दिया गया था कि बड़े प्रदर्शन होंगे और मजदूर वर्ग जिलों में बहुत भारी गिरफ्तारियां की गयी थीं।

इसके बावजूद 9 जनवरी को व्यापक हड़ताल और प्रदर्शन हुए। इन्होंने प्रदर्शित कर दिया कि मजदूर वर्ग के संघर्ष फिर से उभार पर हैं। पेत्रोग्राद के मजदूरों में क्रांतिकारी भावना महीने दर महीने बढ़ती गयी और ऐसा ही मामला समूचे रूस का था।

ऐसी ही परिस्थिति में 21 जनवरी को चौथी राज्य डूमा सत्रावसान के बाद शुरू हुई। हमारे धड़े ने ओख्ता पाउडर कार्यशाला में विस्फोट से ताल्लुक रखने वाले, राजनीतिक बंदियों को यातना देने से संबंधित तथा कपड़ा उद्योग में तालाबंदी के संबंध में नये कार्यस्थगन पेश किये।

ओख्ता में विस्फोट दिसंबर के अंत में हुआ था। यहां युद्ध कार्यालय के लिए विस्फोटक तैयार किये जाते थे। इस विस्फोट में 5 हजार मजदूर मारे गये थे। 50 से ज्यादा गंभीर रूप से घायल हुए थे जिनमें अधिकतर महिलाएं थीं।

20 दिसंबर को मृतकों को दफनाया गया। मृतकों के शवों के साथ जुलूस में 10 हजार से ऊपर लोग थे। पेत्रोग्राद के मजदूरों ने शव यात्रा को पूंजीवादी हुकूमत के विरुद्ध शक्तिशाली प्रदर्शन में तब्दील कर दिया। पूंजीवादी हुकूमत मजदूरों की कतारों से रोज नये-नये शिकार बना रही थी। प्रत्येक वर्ग सचेत मजदूर, लगातार चलने वाले कठिन संघर्ष की आवश्यकता के बारे में और ज्यादा दृढ़ निश्चय हो गया। दो सप्ताह बाद 3 जनवरी, 1913 को एक दूसरा विस्फोट हुआ जिसमें कई मजदूर शिकार हुए।

विस्फोट और तबाही का मंजर रूसी औद्योगिक जीवन की नियमित परिघटना थी। पूंजीवाद, मजदूरों का निर्मम शोषण के जरिये विभिन्न उद्योगों में हजारों मौतों के लिए जिम्मेदार था।। अपनी डूमा में कार्यस्थगन के जरिये हमें समूचे क्षेत्र को संज्ञान में लेने के साथ भयावह ओख्ता तबाही पर जनता का ध्यान आकृष्ट करना था। हमें डूमा मंच से उन हालात का वर्णन करना था जिसमें रूसी मजदूर वर्ग काम करता था, उनके अत्यधिक शोषण को उजागर करना था और क्रांतिकारी संघर्ष के लिए उनकी इच्छाशक्ति को मजबूत करना था।

जैसा हश्र इसके पहले के कार्यस्थगनों का हुआ था वही हश्र इसका भी हुआ। 6 महीने तक युद्धमंत्री तक ने इसका जवाब नहीं दिया।

जब बहस हुई तो डूमा के बहुमत ने इसे आयोगों के भंवरजाल में दफना दिया।

टेक्सटाइल उद्योग में तालाबंदी

मजदूर वर्ग के संघर्ष जैसे-जैसे घनीभूत होते गये वैसे-वैसे निर्माताओं और मिलमालिकों ने अपनी सारी शक्तियों को सुदृढ़ और गोलबंद करना शुरू कर दिया। मजदूर आंदोलन के उठते ज्वार ने पूंजीपतियों को भयभीत कर दिया था। जुर्माने, अनुशासनात्मक दंड, नेताओं की गिरफ्तारियां- ये सभी उपाय अपनाये जा चुके थे। अब एकताबद्ध पूंजीपति वर्ग शक्तिशाली दूरगामी हथियार के साथ, बड़े पैमाने पर काम से निष्कासन के साथ, कार्यवाही में आ गया था। तालाबंदियों ने हजारों मजदूरों को सड़क पर फेंक दिया था और उनके लिए अभाव व भुखमरी का खतरा पैदा कर दिया था।....

टेक्सटाइल फैक्टरियों की तालाबंदी ने पेत्रोग्राद के सभी मजदूरों के बीच असंतोष के तूफान को खड़ा कर दिया था। कुछ स्थलों पर उद्वेलन को अराजकतावादी तत्वों द्वारा संचालित किया गया था। वे मजदूरों से मशीनें तोड़कर बदला लेने का आह्वान कर रहे थे। सामाजिक जनवादियों ने इस प्रकार का दृढ़ता से विरोध किया और बताया कि यह मजदूर वर्ग के लिए और नये खतरे पैदा करेगा। सामाजिक जनवादियों द्वारा ऐसे तरीकों को पूर्णतया बेकार और मजदूर आंदोलन के लिए नुकसानदेह मानकर हमेशा ठुकराया जाता रहा था। संयोगवश मुठ्ठीभर लोगों ने ही अराजकतावादियों का समर्थन किया और हम जल्द ही ऐसी प्रवृत्तियों पर काबू पाने में समर्थ हो गये थे।

पेत्रोग्राद के मजदूरों ने टेक्सटाइल मजदूरों की सहायता अलग तरीके से की थी। निकाले गये मजदूरों की राहत के लिए सभी फैक्टरियों ओर कार्यशालाओं में धन संग्रह किया गया। इकट्ठा किये गये धन को सामाजिक जनवादी डूमा के धड़े के पास भेजा जाता था और वह इसे सही तरीके से बांटने का इंतजाम करता था।

मालिकों द्वारा तालाबंदी के विरुद्ध डूमा के सामाजिक जनवादी धड़े ने कार्यस्थगन प्रस्ताव पेश किया। इसकी मांग टेक्सटाइल मजदूरों ने की थी। हालांकि डूमा द्वारा कार्यस्थगन स्वीकार कर लिया गया था, लेकिन इसका भी वही हश्र हुआ जो इसके पहले के कार्यस्थगनों का हुआ था।.....

सूती मिलों का संघर्ष अभी समाप्त ही हुआ था कि टेक्सटाइल उद्योग में नई तालाबंदी शुरू हो गयी। इससे मैक्सवेल फैक्टरियों के मजदूर प्रभावित हुए। इन फैक्टरियों में दिसंबर, 1912 में तीखे विवाद हो चुके थे। इन फैक्टरियों में मालिकों का हमला और ज्यादा नंगा था। जैसाकि इसके पहले वाले विवाद में हुआ था, इसमें भी यही किया गया। मजदूरों को राजनीतिक हड़ताल में शामिल होने के कारण बड़े पैमाने पर नौकरियों से हटा दिया गया था। (लेना गोलीकांड की वर्षगांठ पर)

मजदूरों की बैठक में यह तय किया गया कि मजदूर भुगतान व निष्कासन को स्वीकार न करें बल्कि इसका जबाव हड़ताल से दें जिसमें सभी पहले के मजदूरों को काम पर वापस लेने की मांग हो। इसी के साथ काम की स्थितियों संबंधी नयी मांगें भी जोड़ी गयीं। अपने अभाव के बावजूद मजदूर बहुत जोश-खरोश के साथ लड़े और पहले की ही तरह पेत्रोग्राद के मजदूरों का उन्हें समर्थन मिला।

तालाबंदी और हड़ताल समूचे एक महीने तक चली थी। इसमें मजदूरों को एक हद तक सफलता मिली। मालिक काम के घंटे बढ़ाने और मजदूरी कम करने में सफल नहीं हुए बल्कि उन्हें पुरानी दरों पर मजदूरों को काम पर वापस लेना पड़ा।

.....

1912-13 की तालाबंदी के दौरान पेत्रोग्राद के मजदूरों ने बहुत कठिनाइयां झेलीं, लेकिन कई पराजयों के बावजूद भारी सकारात्मक परिणामों को नोट किया जा सकता है। टेक्सटाइल मजदूर ने जो सर्वहारा वर्ग का अत्यंत पिछड़ा हिस्सा है, संगठन और एकजुटता के भारी महत्व को समझा। उनकी तकलीफें व्यर्थ नहीं थीं। इन्होंने भविष्य की लड़ाइयों के लिए मजदूरों को तैयार करने और उन्हें फौलादी बनाने में अपनी भूमिका निभाई।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–04, 16–28 फरवरी, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक–V

प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने के ठीक पहले के वर्षों के दौरान ऐसे अनेक अवसर आये जब पेत्रोग्राद के मजदूरों ने घनिष्ठ एकजुटता और संगठित शक्ति का प्रमाण दिया। लेकिन सघन और बहादुराना संघर्ष के इस काल में लेसनर की फैक्टरी में हुई हड़ताल जो 1913 की समूची गर्मी के दौरान चलती रही, विशेष महत्व की थी। इसका कारण, इसकी अवधि और जनसुदाय के बीच इसके प्रति पैदा हुई व्यापक सहानुभूति ने इस हड़ताल को युद्धपूर्व के वर्षों के मजदूर आंदोलन के शानदार उपाख्यानों में एक बना दिया है।

नई लेसनर की हड़ताल को विशुद्ध राजनीतिक या विशुद्ध रूप से आर्थिक के बतौर वर्गीकृत नहीं किया जा सकता। यह उन हड़तालों में एक थी जो क्रांतिकारी उभार के काल में होती हैं। इसमें मजदूरों द्वारा एक ही मांग रखी गयी थी, वह उनके साथियों में एक की मौत के लिए जिम्मेदार फोरमैन को हटाने की थी। प्रथम दृष्टि में यह तुलनात्मक तौर पर गैर महत्व की लगती थी, तब भी यह एक लम्बे व अविचल लड़ाई का कारण थी जो ऐसे हालात में ही हो सकती थी, जिसमें मजदूर वर्ग ने पूंजीपतियों के वर्ग से आम और खुली लड़ाई का सामना किया।

फोरमैन द्वारा स्ट्रामिन नामक मजदूर पर चोरी का आरोप लगाने के बाद उक्त मजदूर ने आत्महत्या कर ली थी। उसने आत्महत्या करने का कारण बताते हुए एक पत्र मजदूर साथियों को लिखा था जो उसकी जेब से मिला था, उसमें कहा गया था–

''साथियो, मैं निश्चित नहीं हूं कि यह पत्र मुझे आपके लिए लिखना चाहिए या नहीं। लेकिन मैं लिखूंगा। फोरमैन ने मुझ पर चोरी का आरोप लगाया है। अपना जीवन समाप्त करने से पहले, साथियो मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मैं निर्दोष हूं। यह मेरे विवेक, मेरे दिल, मजदूर की मेरी ईमानदारी द्वारा प्रमाणित है, लेकिन मैं इसे सिद्ध नहीं कर सकता। मैं फोरमैन द्वारा चोर कहे जाने पर काम को नहीं छोड़ सकता इसलिए मैंने फैसला कर लिया है कि मैं यह सब खत्म कर दूं। प्यारे साथियो, अलविदा और याद रखना मैं निर्दोष हूं। –**याकोव स्ट्रामिन**''।

इस पत्र को पढ़कर मजदूरों का गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने फोरमैन को हटाने की मांग की। लेकिन प्रबंधन ने उसे नहीं निकाला। स्ट्रामिन की शव यात्रा एक विशाल प्रदर्शन में तब्दील हो गयी। प्रबंधन ने इसकी भनक मजदूरों को नहीं लगने दी। **प्रावदा** ने किसी तरह यह सूचना हासिल कर ली थी। इसके चलते भी मजदूर बड़े पैमाने पर इकट्ठे हो सके। डूमा के दो सांसदों ने अंतिम संस्कार में शामिल होने का इंतजाम कर लिया था। पुलिस ने कब्रगाह में ही लोगों को रोक लिया था। न्यू लेसनर के मजदूर पूरी ताकत के साथ तो पहुंचे ही थे, इसके अलावा विभिन्न फैक्टरियों के मजदूर भी पहुंचे थे।

न्यू लेसनर के मजदूर हड़ताल पर चले गये। इसके जवाब में प्रबंधकों ने सभी पुराने मजदूरों को निकाल देने की घोषणा कर दी। मजदूरों ने पेत्रोग्राद के सभी मजदूरों के नाम इस संघर्ष में सहायता की अपील की।

इसके तुरंत बाद लेसनर की दूसरी फैक्टरी पुरानी लेसनर के मजदूर भी हड़ताल पर चले गये। लेसनर के मजदूरों की हड़ताल के सहयोग के लिए फंड की अपील की गयी। हड़ताल के दौरान समूचे रूस से फंड आया। डूमा के सामाजिक जनवादी धड़े के पास रकम आती थी और सांसद इस रकम को जरूरतमंद हड़ताली मजदूरों के पास जरूरत के हिसाब से भेजने का इंतजाम करते थे। लेसनर की फैक्टरियों की हड़ताल 1913 के मजदूर वर्ग के आंदोलन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी।

यह हड़ताल समूची गर्मी तक चलती रही। जून की शुरूआत में मजदूरों का मनोबल तोड़ने के प्रयास में पुलिस ने नेताओं को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया।। 68 दिनों के बाद पुरानी लेसनर फैक्टरी के मजदूर काम पर वापस लौटे। नयी लेसनर फैक्टरी के मजदूर 102 दिनों तक हड़ताल में थे। हालांकि यह लड़ाई हार में खत्म हुई, फिर भी इस हड़ताल ने मजदूर आंदोलन के इतिहास में व्यापक महत्व ग्रहण कर लिया था। इसने मजदूर वर्ग के नये हिस्सों को अपनी ओर आकर्षित किया और उसे ओज से भर दिया। इसके साथ ही, सर्वहारा वर्ग की संगठित एकजुटता की शक्ति को इसने व्यवहारिक तौर पर प्रदर्शित किया।

आंदोलन में वृद्धि के साथ ही हमारे धड़े की जनसमुदाय के साथ घनिष्ठता बढ़ती गयी। डूमा के गर्मी के सत्रावसान के दौरान और अन्य अंतरालों में सांसद उन इलाकों में जाते थे जहां से वे चुने गये थे।

1913 की बसंत में लोकोमोटिव मरम्मत कारखाने में एक विवाद हुआ। यह कारखाना अपनी क्रांतिकारी परंपरा के लिए जाना जाता था। खुफिया पुलिस अपनी दमनकारी कार्यवाही करने के लिए मौके की तलाश में थी। वह मौका आ गया। रोमानोव वंश अपनी 300वीं वर्षगांठ का जश्न मना रहा था। फरवरी, 1913 में यह होना था। खुफिया पुलिस इसी मौके का इस्तेमाल कर गिरफ्तारियां करने लगी। 13 फरवरी को कई रेल मजदूर गिरफ्तार कर लिये गये। जब वे रिहा कर दिये गये तो उनको काम में नहीं लिया गया। इससे मजदूरों में गुस्सा भड़क गया। इसी मांग को लेकर वे तुरंत हड़ताल पर चले गये।

मजदूरों के इस दृढ़ कदम से प्रबंधन को झुकना पड़ा और सभी निकाले गये मजदूरों को काम पर लेना पड़ा। मजदूरों की इस जीत को व्यापक मजदूर वर्ग में प्रचारित-प्रसारित करने के मकसद से **प्रावदा** में रेल के मरम्मत कारखाने के मजदूरों के नाम एक अपील निकाली गयी। इस अपील के कारण **प्रावदा** पर 500 रूबल का जुर्माना लगाया गया, लेकिन **प्रावदा** की अपील ने मजदूरों के दृढ़ निश्चय को और ज्यादा बढ़ा दिया। थोड़े समय के लिए इस सफलता ने मजदूरों की क्रांतिकारी भावना को बढ़ा दिया था, इससे घबड़ाकर खुफिया पुलिस को पीछे हटना पड़ा।

लेकिन खुफिया पुलिस फिर से हमले की तैयारी में लगी हुई थी। अप्रैल, 1913 में फिर से पुलिस कारखाने में गई। वे प्रत्येक विभाग में तैनात हो गये और मजदूरों को एक विभाग से दूसरे विभाग में तब तक नहीं जाने दिया जाता था, जब तक कोई जरूरी कार्य न हो और वह भी एक सिपाही के साथ।

इन सभी तैयारियों के बाद चार चुने हुए शिकारों को सूचित किया गया कि उनकी नौकरी समाप्त की जाती है। निकाले गये मजदूरों ने अपने निकाले जाने का कारण जानना चाहा। लेकिन पुलिस ने उन्हें जनरल मैनेजर से मिलने जाने से रोक दिया। बाद में प्रबंधन ने बताया कि उन्हें खुफिया पुलिस की गुजारिश के कारण निकाला गया है।

मजदूरों ने **प्रावदा** में छपी मेरी अपील को पढ़ा और वर्ग सचेत मजदूर समझ गये कि उन्हें क्या करना है। वह अपील इस प्रकार थी:

''मजदूर मुझसे गुजारिश करते हैं कि मैं इन बर्बर तरीकों के बारे में सर्वोच्च स्तर के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करूं। यह ठीक है, मैं मंत्री के पास जाऊंगा। लेकिन साथियो! मैं तुरंत यह भी कहना चाहूंगा कि इसका रंचमात्र भी उपयोग नहीं है। हम सभी को अपनी स्थिति समझनी चाहिए, ज्यादा नियमित तरीके से हमारे मजदूरों के अखबार पढ़ना चाहिए और हमें उन तरीकों से परिचित होना चाहिए जिन्हें अपने हालात में सुधार लाने में दूसरे मजदूर अपना कर लड़ते हैं''।

बंदरगाह

बाल्टिक की जलसेना का बंदरगाह जलसेना के मंत्री के नियंत्रण में था। यहां काम की स्थितियां भी उतनी ही असहनीय थीं जितनी अन्य युद्ध कार्यालय फैक्टरियों की थीं। इसके कारखाने अत्यन्त अस्वास्थ्यकर, सीलन से भरे, धुआं से भरे हुए और जाड़ों में बहुत ठंडे थे। आदमियों को भयंकर व तोड़ देने वाली स्थितियों में काम करना पड़ता था। सात या आठ वर्षों में काम करके कोई भी व्यक्ति पूर्णतया जर्जर हो जाता था।

सभी युद्ध संस्थानों की तरह प्रबंधक अधिकारियों की यूनिफार्म पहनते थे, जबकि मजदूरों को असाधारण क्रूरता के साथ दंडित किया जाता था। प्रबंधन पुलिस के साथ घनिष्ठता से जुड़ा होता था और प्रत्येक प्रबंधक व फोरमैन राजनीतिक पुलिस एजेंट भी होता था।

इन स्थितियों के बावजूद यहां के मजदूर भी बाकी सर्वहारा वर्ग से पीछे नहीं थे। 1913 की बसंत और गर्मियों के समूचे काल के दौरान बंदरगाह में विवाद बार-बार होते रहे जो हड़तालों में तब्दील हो जाते थे। कभी-कभी समूचा बंदरगाह ही या कभी-कभी कुछ विभाग व कारखाने ही होते थे।

एक विवाद मई में शुरू हुआ। इसका कारण ओवरटाइम करने से इंकार करने पर 10 मजदूरों को निकाल दिया गया था। समझौता वार्ता करने गये तीन प्रतिनिधियों को पुलिस ने प्रबंधन के कहने पर गिरफ्तार कर लिया। इसके जवाब में दूसरे विभाग के 2000 मजदूरों ने अपनी आर्थिक मांगों के साथ-साथ गिरफ्तार लोगों की रिहाई की मांग की।

बाल्टिक मजदूरों की हड़ताल फैलती गयी। एक बार खत्म हुई फिर शुरू हो गयी और इसका दायरा बढ़ता गया। दो महीने बाद जब हड़ताल समाप्त हुई तो 100 मजदूरों को काली सूची में डाल दिया गया था और उनको काम पर नहीं लिया गया। ओबूखोव के मजदूरों पर उस समय मुकदमा चलाया गया जब हड़ताल समाप्त हो चुकी थी। मुकदमे के दिन पेत्रोग्राद के एक लाख मजदूर सड़कों पर आये और एक दिन की हड़ताल हुई। वस्तुतः मजदूरों का यह रक्षात्मक कदम नहीं था बल्कि यह सरकार पर हमला था क्योंकि यह हड़ताल राजनीतिक थी।

ओबूखोव मजदूरों के मुकदमे के एक सप्ताह बाद फिर से मजदूर हड़ताल पर चले गये। इस बार हड़ताल का कारण प्रबंधक द्वारा नये नियमों को लागू करना था। नये नियमों के अंतर्गत सावधान से सावधान मजदूर भी जुर्माने से नहीं बच सकता था। ओवर टाइम अनिवार्य कर दिया गया था और वह साधारण दरों पर ही करना होता था।

प्रबंधन ने मजदूरों के विरुद्ध अत्यन्त उकसाने वाला नजरिया अपना लिया था। किसी तरह की मीटिंग की इजाजत नहीं थी। यहां तक कि नियमों के अनुसार भी नहीं की जा सकती थी। पूरे जिले को पुलिस से भर दिया गया था। मजदूर जल सेना के मंत्री से मिलना चाहते थे, उसने मिलने से इंकार कर दिया।

डूमा का पतझड़ सत्र शुरू होने वाला था। ओबूखोव मजदूरों ने अति आवश्यक कार्यस्थगन प्रस्ताव लाने का निवेदन किया। 15 नवंबर को कार्यस्थगन पेश किया गया। लेकिन 10 दिनों बाद तक भी वह कार्यसूची में नहीं था।

डूमा के अंदर दक्षिणपंथियों के नेता मारकोव ने हड़ताल आंदोलन और उसका नेतृत्व करने वाली सामाजिक जनवादी पार्टी पर तीखा हमला अपने भाषण में किया।

कार्यस्थगन डूमा द्वारा पारित कर दिया गया। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि मजदूरों को कुछ मिला। सब कुछ पहले जैसा ही था।

आबूखोव मजदूरों की स्थितियां कोई अपवाद नहीं थीं। दूसरे कारखानों में विशेष तौर पर सेना, नौसेना के विमानों में काम करने वालों का अत्यन्त निर्ममता से शोषण होता था और काम की स्थितियां असहनीय थीं। ऐसे हालात में दुर्घटनाओं से मौतें होती रहती थीं। पहले ऐसी मौतों की घटना चुपचाप निकल जाती थीं। लेकिन अब प्रत्येक मजदूर की शवयात्रा व्यापक क्रांतिकारी प्रदर्शन का मौका हो जाती थी।

मजदूरों की भीड़ मजदूरों के ताबूत के पीछे हो जाती थी। भले ही वे उनको व्यक्तिगत तौर पर न जानते हों। वे शव यात्रा में क्रांतिकारी गीत गाते थे 'तुम हमले का शिकार हुए'। वे लाल रिवन जिसमें क्रांतिकारी उदगार होते थे, शव पर लगाते थे। कब्रगाह हजारों लोगों के मिलने का स्थान हो गया था। गैर कानूनी काम की स्थितियों में जहां मजदूरों की मीटिंगों पर प्रतिबंध था, जब केवल गुप्त तरीके से ही जंगल में या छोटे घरों में मिला जा सकता था। शवयात्रा में होने वाले प्रदर्शनों ने क्रांतिकारी महत्व ग्रहण कर लिया था। पार्टी संगठनों ने मजदूरों से हजारों की तादाद में आने की अपील की थी और पर्चों की तैयारी उनके वितरण और वक्ताओं की तैयारी के लिए लोगों को नियुक्त किया जाता था।

सितम्बर, 1913 की शुरूआत में पेत्रोग्राद की एक खदान कारखाने में विस्फोट से दो मजदूर मर गये। यह विस्फोट प्रबंधन की लापरवाही का नतीजा था क्योंकि मशीनों का परीक्षण नहीं किया गया था।

9 सितंबर को हजारों मजदूरों ने अपने औजारों को हटा दिया जिससे कि वे शवयात्रा में शामिल हो सकें। विभिन्न फैक्टरियों और कारखानों के मजदूर ताबूत के पीछे चलने लगे। शुरू से ही पुलिस जुलूस पर रुकावटें पैदा करती रही। सबसे पहले उन्होंने शव के ऊपर से लाल रिवन हटाने की मांग की, बाद में उन्होंने जोर दिया कि ताबूत और फूलों को अर्थी पर रखा जाय।

मेरे इस सवाल के जवाब में कि ताबूत को हाथ से क्यों नहीं ले जाया जा सकता, पुलिस के प्रतिनिधि ने जवाब दिया कि उसे ऐसा ऊपर से अधिकारियों से आदेश मिला है। जुलूस को मुख्य सड़कों से हटाकर पतली सड़कों की ओर कर दिया गया। एक जगह पर कम पुलिस वालों की मौजूदगी का फायदा उठाते हुए मजदूर फिर से ताबूत को अपने कंधों पर रखकर कब्रगाह की ओर चले पड़े। वे रास्ते भर 'तुम हमले का शिकार हुए' क्रांतिकारी शवयात्रा गीत गाते जा रहे थे।

कब्रगाह के पास और ज्यादा पुलिस आ गयी तथा शव पर लाल रिवन जो दुबारा लगा दिये गये थे फिर से पुलिस ने नोंच कर फेंक दिया। दफनाने की प्रक्रिया के दौरान और बहुत सारे मजदूर आ गये थे। उन्होंने रात के खाने की छुट्टी के दौरान फैक्टरी छोड़ दी थी। 5000 लोगों की भीड़ लड़ाकू भावना से ओतप्रोत थी और दफनाने के समय गाने वाले क्रांतिकारी गीत गा रही थी। इन गीतों में बाधा तभी पड़ती थी, जब कोई लड़ाई जारी रखने की अपील करता था। चूंकि मुझे बात रखनी थी, यह जानकर मजदूर मेरे चारों ओर सुदृढ़ घेरा बनाकर खड़े थे जिससे कि पुलिस के मेरे पास पहुंचने से पहले मुझे अपनी बात को रखने का समय मिल सके। कानून और व्यवस्था की ताकतें पूरी तरह से सशस्त्र होकर तैनात थीं और वे अपनी चाबुक चलाने के लिए आदेश का ही इंतजार कर रही थीं।

जब ताबूत को दफनाने के लिए नीचे रख दिया गया तो मैंने बेंच पर खड़े होकर अपनी बात रखना शुरू किया-

''साथियो, रक्तपिपासु पूंजीपति अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिए मजदूरों की जिंदगी न्यौछावर करने को तैयार है। आप जानते हैं कि अपनी कड़ी और तकलीफदेह मेहनत के लिए मजदूरों को क्या इनाम मिलता है। मजदूर वर्ग अपने हालात में तभी सुधार ला सकता है जब वह मसलों को अपने खुद के हाथ में ले ले''।

जैसे ही मैंने ये शब्द कहे वैसे ही पुलिस वाले चिल्लाने लगे ''उसे रोको, उसे बोलने मत दो''।

पुलिस निरीक्षक ने आदेश दिया:

''घुड़सवार पुलिस, चाबुक तैयार रखो''।

पुलिस भीड़ को तितर-बितर करने के लिए दौड़ पड़ी। कब्र के नजदीक खुली लड़ाई होने लगी। कई पुलिस वालों ने मुझे बेंच से नीचे खींच लिया और एक निरीक्षक दौड़कर आया तथा मेरी बाहें पकड़कर उसने मुझसे कहा कि ''मैं गिरफ्तार हूं''। मैंने उसे अपना सांसद का परिचयपत्र दिखाया

आप आजाद हो लेकिन मैं आपको बोलने की इजाजत नहीं दे सकता। मुझे आदेश दिये गये हैं कि कोई भाषण न होने दूं।

इसी दौरान भीड़ यह सोचकर कि मैं गिरफ्तार हूं और ज्यादा उत्तेजित हो गयी तथा निरीक्षक को घेर लिया। वे पुलिस को धमकी देने लगे। मैं फिर से बेंच पर चढ़कर अपने बाधित भाषण को देने लगा तथा मजदूरों से शांति बनाये रखने को कहा जिससे कि और नये हताहत न हों। घुड़सवार पुलिस ने चाबुकों को फटकारते हुए भीड़ को कब्र से हटाकर कब्रगाह के फाटकों तक ले गयी और यह महज संयोग था कि उस समय फिर से खून नहीं बहा।

शव दफनाने के बाद पुलिस ने मेरे ऊपर प्रोटोकोल (नयाचार) को तोड़ने को आरोप यह कहकर लगाया कि मैंने अधिकारियों के आदेश का उल्लंघन किया है। तीन महीने बाद पेत्रोग्राद के शहर राज्यपाल डा. चेश्वस्की ने पुलिस के कार्य में हस्तक्षेप करने के लिए मेरे ऊपर 200 रूबल का जुर्माने का आदेश जारी किया। जब एक अधिकारी मेरे पास आकर जुर्माना अदा करने की मांग करने लगा तो मैंने साफ इंकार कर दिया। शहर राज्यपाल का आदेश बिल्कुल गैरकानूनी था क्योंकि डूमा संबंधी कानून में यह उल्लखित है कि सांसदों पर सिवाय न्यायालयों द्वारा दी गयी सजा और वह भी खुद डूमा की स्वीकृति के अलावा कोई दंड नहीं दिया जा सकता।

मैंने **प्रावदा** के जरिये मजदूरों को सूचित किया कि सांसदों के अधिकारों पर अतिक्रमण करने वाला यह नया प्रयास है और इसके विरोध में कई जगहों पर हड़तालों की घोषणा हो गयी। कई फैक्टरियों में एक दिन की हड़ताल हो गयी।

दो सप्ताह बाद जब यह उसके लिए बिल्कुल साफ हो गया था कि मैं जुर्माना देने का कोई इरादा नहीं रखता तब शहर के राज्यपाल ने जुर्माना न अदा करने के एवज में मुझे 6 सप्ताह बंदीगृह में डालने का नया आदेश जारी किया। उसने यह भी आदेश जारी किया कि डूमा के आगामी सत्रावसान के दौरान मुझे गिरफ्तार किया जाय। जब यह बात पता चली तो मजदूरों के बीच बैचेनी और बढ़ गयी।

तब डूमा के अध्यक्ष ने जिसने ''सांसदों की उन्मुक्ति'' की रक्षा के लिए अभी तक कुछ नहीं किया था, हस्तक्षेप करना उपयुक्त समझा। फिर भी उसने जोर दिया कि मुझे पहलकदमी लेनी चाहिए यानी कि मैं उससे रक्षा करने के लिए आवेदन करूं। इस तरीके से वह ब्लैक हंड्रेड के लोगों से यह कहकर अपना बचाव कर सकता था कि वह सरकार के दुश्मन को नहीं बचा रहा है बल्कि वह सांसद से प्राप्त बयान को महज सही अधिकारियों तक पहुंचा रहा है। जब मैंने उसे कोई आवेदन नहीं दिया तो उसने अपने अधीनस्थ को भेजकर वह हासिल करना चाहा। लेकिन मैंने उससे स्पष्ट तौर पर यह कहा, ''कि मैं संसद के भीतर कानूनी तौर पर अपनी सुरक्षा के लिए अधिकृत हूं। पहले वे मुझे गिरफ्तार तो करें।

मेरे ऊपर लगाये गये जुर्माने का मामला जब सार्वजनिक फंड का चरित्र ग्रहण करने लगा तब अध्यक्ष ने गृहमंत्री को इस संबंध में पत्र लिखा और मंत्री महोदय का तुरंत जवाब यह आया कि डूमा की उन्मुक्ति की अवधि समाप्त होने के बाद ही मुझे गिरफ्तार किया जायेगा।

हालांकि हमारे 'छः' पर होने वाला हमला थोड़ी देर के लिए थम गया था फिर भी, सामाजिक जनवादी धड़े ने इस प्रयास को कार्यस्थगन पेश करने के लिए आधार के तौर पर बनाया। एक तरफ, इस मामले ने प्रतिक्रियावादी हमले को प्रदर्शित किया और इसलिए उसने एक उद्वेलनात्मक सामग्री के बतौर काम किया और दूसरी तरफ मजदूर सांसदों पर होने वाले हमले जितना बड़े पैमाने पर जानकारी में आये उतना ही ज्यादा धड़े और जनसमुदाय के बीच संबंध और मजबूत होते गये।

हमारा कार्यस्थगन प्रस्ताव निम्न शब्दों से समाप्त हुआ थाः

''हमारी यह राय है कि पेत्रोग्राद के शहर राज्यपाल ने राज्य डूमा के एक सदस्य पर जुर्माना थोपकर गैरकानूनी तौर पर कार्य किया है। सामाजिक जनवादी धड़ा डूमा को आमंत्रित करता है कि डूमा को संचालित करने वाले नियमों की धारा-33 के आधार पर गृहमंत्री निम्न सवालों का जबाव दें।

1-क्या मंत्री महोदय को पेत्रोग्राद के शहर राज्यपाल द्वारा जारी किये गये आदेश के बारे में जानकारी है।

2-यदि पता है, तो वे इस गैर कानूनी आदेश के संबंध में भविष्य में प्रशासनिक निकायों द्वारा ऐसी कार्यवाहियों से राज्य डूमा के सांसदों की रक्षा करने के लिए क्या कदम उठाने को प्रस्तावित करते हैं। हम निवेदन करते हैं कि इस कार्यस्थगन को अति आवश्यक के बतौर लिया जाय''।

इस कार्यस्थगन पर कुछ कैडेट और प्रगतिशील पार्टियों के सांसदों ने भी हस्ताक्षर किये थे। लेकिन जब क्रिसमस छुट्टियों के बाद बहस शुरू होने वाली थी तो 23 उदारपंथी सांसदों ने अपने हस्ताक्षर वापस ले लिये। इस प्रकार कार्यस्थगन प्रस्ताव डूमा के समक्ष पढ़े जाने के क्षण ही असफल हो गया। यह अकेली घटना ही मजदूर सांसदों के प्रति कैडेटों के रवैये को पर्याप्त स्पष्टता से बता देती है।

हमने कानून के मुताबिक अन्य हस्ताक्षर इकट्ठे किये और एक सप्ताह बाद फिर से कार्यस्थगन पेश किया। हमारे धड़े की ओर से पेत्रोवस्की ने इसे पेश किया।

पेत्रोवस्की ने कहा, ''प्रताड़ना और पुलिस बर्बरता के बावजूद मजदूर सांसद मजदूरों के साथ हर जगह पर और हर समय पर रहेंगे। न तो पुलिस और न ही डूमा के भीतर ब्लैक हंड्रेडों का बहुमत अपने सांसदों की आवाज को सुनने से मजदूरों को रोकने में समर्थ होगा।

''शहर राज्यपाल अपने खुद के और गैर कानूनी आदेश को लागू करने से डरता है। उसके डर का पर्याप्त आधार है क्योंकि पेत्रोग्राद के मजदूरों ने इसका जवाब आम हड़ताल से दिया है।''

बुर्यानोव जो अब मेंशेविकों से अलग हो गया था, ने भी अति-आवश्यक के पक्ष में बात रखी। उसने सांसदों को मिली उन्मुक्तता के सरासर उल्लंघन पर विस्तार से बताते हुए कहा कि यदि डूमा को अपने आत्मसम्मान को तनिक भी कायम रखना है तो उसे इस पर रोक लगाना होगा।

लेकिन डूमा ने जारशाही पुलिस के हमलों को रोकने के लिए कोई प्रयास नहीं किया। केवल मजदूर सांसद ही मामले से सरोकार रखते थे और डूमा का ब्लैक हण्ड्रेड बहुमत इस प्रताड़ना का खुशी से समर्थन करता था। कार्यस्थगन व्यापक बहुमत के सामने पराजित हो गया। सरकार ने मजदूर सांसदों के विरुद्ध उठाये जाने वाले दमनकारी कदमों के बारे में डूमा से पहले से स्वीकृति प्राप्त कर ली थी।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–05, 01–15 मार्च, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक -VI

धड़े के भीतर के हालात

प्रत्येक महीना बीतने के साथ यह और स्पष्ट होता गया कि सामाजिक जनवादी धड़े की एकता महज रस्मी एकता है और कि इसका देर-सबेर खात्मा लाजिमी है। धड़े के भीतर के हालात न सिर्फ सामाजिक-जनवाद के भीतर मौजूद हालात का पूर्ण प्रतिबिंबन थे बल्कि उन्होंने परस्पर अंतरविरोधों को बहुत घनीभूत कर दिया था। बोल्शेविक और मेंशेविक सांसद एकताबद्ध धड़े के अस्तित्व द्वारा औपचारिक तौर पर बंधे होने के बावजूद क्रांतिकारी आंदोलन संबंधी तमाम सवालों पर रोजाना टकराव में रहते थे। क्रांतिकारी आंदोलन की बढ़ोतरी के साथ में मतभेद बढ़ते गये और इसे देर-सबेर धड़े को दो स्वतंत्र हिस्सों में अंतिम फूट की ओर ले जाना लाजिमी था।...

.....पहले कार्यनीतिक कारणों से बोल्शेविक सांसद मेंशेविक अखबार **लूच** में सहयोगी के बतौर अपना नाम देते थे, लेकिन बाद में **लूच** की विलोपवादी कार्यदिशा को खुले तौर पर रखने के कारण उन्होंने अपना नाम इससे हटाने का फैसला कर लिया था। इससे मेंशेविक फूट डालने के प्रयास करने लगे।

.....मेंशेविक डूमा के भीतर बोल्शेविकों से एक अधिक होने का फायदा उठाते हुए उनकी आवाज को दबाने की कोशिश करते थे और डूमा में बोलने से रोकने की हर संभव कोशिश करते थे। ऐसे हालात में बोल्शेविकों के लिए क्रांतिकारी उद्वेलन की खातिर डूमा के मंच का इस्तेमाल और ज्यादा कठिन हो गया था।

मेंशेविक ''सात'' न सिर्फ डूमा की बैठकों में बोल्शेविकों को बोलने से रोकने तक अपने को सीमित रखते थे बल्कि वे बोल्शेविकों को डूमा के विभिन्न आयोगों से बाहर रखते थे। इन आयोगों में उद्वेलन की दृष्टि से प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध करायी जाती थी। बोल्शेविक इस सामग्री का इस्तेमाल मजदूरों के अखबार में यह बताने के लिए करते थे कि डूमा के भीतरी घेरे में क्या कुछ हो रहा है।

.....

1913 की बसंत तक जब डूमा का शीतकालीन अधिवेशन समाप्त होने वाला था, सामाजिक जनवादी धड़े के भीतर के हालात असहनीय हो गये।

यदि ऐसे हालात को चलने दिया जाता तो बोल्शेविक सांसदों के लिए और समग्र तौर पर क्रांतिकारी आंदोलन के लिए नुकसानदेह ही होता। ग्रीष्मावकाश ने डूमा धड़े की अंतिम फूट के सवाल को महज टाल दिया।

पोरोनिनो सम्मेलन

15 जून, 1913 को राज्य डूमा में ग्रीष्मावकाश हो गया। पार्टी सम्मेलन गर्मी के अंत में रखा गया जिससे कि बोल्शेविक ''छः'' अपने निर्वाचिन क्षेत्रों में जा सकें। पोरोनिनो सम्मेलन सितंबर में हुआ। क्राको सम्मेलन के बाद लगभग एक वर्ष बीत गये थे। इस दौरान रूस का क्रांतिकारी आंदोलन काफी प्रगति कर चुका था। राजनीति हड़तालें- 9 जनवरी को खूनी इतवार की वर्षगांठ, 4 अप्रैल को लेना गोलीकांड की वर्षगांठ और मई दिवस- व्यापक चरित्र ग्रहण करती जा रही थीं। इसी वर्ष रूसी मजदूरों ने पहली बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। समूचे रूस में 1913 के दौरान लगभग 10 लाख मजदूरों ने हड़तालों में हिस्सा लिया था जिसमें लगभग 5 लाख मजदूर राजनीतिक हड़तालों में शामिल थे।

पार्टी का काम मजबूत हो गया था, विस्तारित हो गया था और सुदृढ़ हो गया था। नये ग्रुप बन रहे थे और पुराने ग्रुप और बड़े तथा ज्यादा प्रभावशाली हो गये थे। तमाम कानूनी मजदूर वर्ग संगठनों में तथा सांस्कृतिक व शैक्षणिक समितियों में बोल्शेविकों का प्रभाव बढ़ गया था। क्रांतिकारी आंदोलन की वृद्धि के परिणामस्वरूप, पोरोनिनो सम्मेलन में संगठन, रणकौशल, प्रचार, उद्वेलन जैसे बहुत सारे विषयों पर फैसला लेना था।

इस सम्मेलन में कई प्रस्ताव पारित किये गये। पार्टी अखबार संबंधी प्रस्ताव में कहा गयाः

''1-सम्मेलन सामाजिक जनवादी उद्वेलन और संगठन के मकसद के लिए कानूनी अखबार के भारी महत्व को स्वीकार करता है और इसलिए तमाम पार्टी संगठनों एवं वर्ग सचेत मजदूरों को यथासंभव व्यापक रूप में अखबारों के वितरण के लिए पूरे दिल से समर्थन करने का आह्वान करता है। यह व्यापक पैमाने पर सामूहिक ग्राहक बनाने तथा नियमित बकाया जमा करने के लिए अभियान संगठित करने का आह्वान करता है। सम्मेलन एक बार फिर जोर देता है कि यह बकाया पार्टी की सदस्यता का बकाया है।

2-मास्को के मजदूरों के कानूनी अखबार को मजबूत करने पर और दक्षिण में एक अखबार की तेजी से स्थापना पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

3-सम्मेलन चाहता है कि मौजूदा कानूनी अखबारों के बीच सूचनाओं के परस्पर आदान-प्रदान के जरिये, सम्मेलनों इत्यादि को संगठित करके घनिष्ठतम सहयोग करना चाहिए।

4-एक सैद्धांतिक मार्क्सवादी मुखपत्र के महत्व और आवश्यकता को स्वीकार करते हुए सम्मेलन पार्टी और ट्रेड यूनियन अखबारों से मजदूरों का ध्यान प्रोबेश्चिन्ये(प्रबोधन) पत्रिका पर दिलाने की चाहत रखता है और इनसे चाहता है कि मजदूरों से इसका नियमित ग्राहक बनने तथा व्यवस्थित तरीके से इसका सहयोग करने की अपील करें।

5-सम्मेलन पार्टी के प्रकाशन संगठनों का ध्यान दिलाता है कि उद्वेलन और प्रचार के लिए लोकप्रिय पुस्तिकाओं के और ज्यादा वितरण की आवश्यकता है।

6-क्रांतिकारी आंदोलन को हालिया विकास और इसका पूरे तौर पर तथा समग्र तरीके से विश्लेषण के महत्व के मद्देनजर, जो कानूनी अखबार में असंभव है, सम्मेलन हमारे गैर कानूनी प्रकाशन को विस्तारित करने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिलाता है और प्रस्तावित करता है कि गैर कानूनी पुस्तिकाओं और पर्चों के अतिरिक्त, पार्टी का गैर कानूनी केंद्रीय अखबार थोड़े अंतरालों से नियमित रूप से साया होना चाहिए।''

सम्मेलन में मेंशेविक ''सात'' के असहनीय व्यवहार पर विस्तार से चर्चा होने के बाद यह प्रस्ताव पारित किया गया कि दोनों धड़ों को पूर्ण समानता की मांग करते हुए मेंशेविकों को एक चेतावनी भेजनी चाहिए। यदि वे इसे स्वीकार नहीं करते तो उनसे स्वतंत्र होकर बोल्शेविकों को अपना अलग से धड़ा डूमा के भीतर बनाना चाहिए। इस संबंध में प्रस्ताव निम्न था।

''सम्मेलन की राय है कि सामाजिक जनवादी डूमा धड़े के बीच एकता संभव और आवश्यक है लेकिन वह मेंशेविक ''सात'' के व्यवहार को इस एकता को गंभीर रूप से खतरे में डालने वाला मानता है।

''सात'' महज एक के अपने बहुमत का इस्तेमाल करते हुए ''छः'' मजदूर सांसदों के काम में बाधा डालते हैं। ये ''छः'' रूसी मजदूरों के व्यापक बहुमत का प्रतिनिधित्व करते हैं। कई मौकों पर जब मजदूरों से संबंधित महत्वपूर्ण मसलों पर चर्चा हुई और मजदूर सांसदों के बीच से दो या इससे ज्यादा लोगों को बात रखनी थी तो ''छः'' सांसदों को अपने में से एक को वक्ता के बतौर रखने से मना किया गया।

''सात'' ने डूमा के आयोगों में ''छः'' में से किसी एक को रखने से भी रोक दिया।

मजदूर आंदोलन में महत्व रखने वाली किसी निकाय में जब प्रतिनिधि के चुनाव का सवाल आया तो ''सात'' ने अपने एक अधिक सदस्य का फायदा उठाते हुए ''छः''

के प्रतिनिधि चुनने से रोका। मनमाने तरीके से पदाधिकारियों का चयन किया गया। उदाहरण के लिए एक और सचिव चुनने की मांग को रद्द कर दिया गया।

सम्मेलन का मानना है कि ''सात'' सांसदों की ऐसी कार्यवाहियां धड़े के सुचारू रूप से काम करने को रोक रही हैं और ये अवश्यंभावी तौर पर फूट की ओर ले जायेंगी।

सम्मेलन ''सात'' सांसदों की ऐसी कार्यवाहियों का अत्यन्त जोरदार तरीके से प्रतिवाद करता है। ''छः'' सांसद रूसी मजदूर वर्ग के व्यापक बहुमत का प्रतिनिधित्व करते हैं और ये अपने संगठित हिरावल की राजनीतिक कार्यदिशा के पूर्णतया अनुरूप कार्य करते हैं।

इसलिए सम्मेलन की राय है कि यदि धड़े के दोनों हिस्सों के बीच पूर्ण बराबरी कायम की जाती है और ''सात'' के लोग ''छः'' की आवाज को दबाने की अपनी नीति त्याग देते हैं तभी डूमा में सामाजिक-जनवादी धड़े के बीच एकता कायम रखना संभव होगा।

सिर्फ डूमा के भीतर कामों पर ही नहीं, असमाधेय मतभेदों के बावजूद सम्मेलन दोनों पक्षों के लिए समान अधिकारों के ऊपर बताये गये आधार पर धड़े की एकता पर जोर देता है।

सम्मेलन इस महत्वपूर्ण सवाल पर सभी वर्ग सचेत मजदूरों को अपनी राय देने और ''छः'' मजदूर सांसदों के लिए समान अधिकारों के आधार पर धड़े की एकता की रक्षा करने में अपनी पूरी ऊर्जा के साथ योगदान देने के लिए आमंत्रित करता है''।

इस समाधान को प्रस्तावित करके हमारी पार्टी ने मेंशेविकों द्वारा आधिकारिक फूट डाले बगैर नुकसान पहुंचाने को कम से कम करने की अंतिम कोशिश की।

सम्मेलन के बाद बोल्शेविक सांसदों की ओर से एक पत्र तैयार किया गया और यह तय किया गया कि यदि ''सात'' इन बातों को मानने से इंकार करते हैं तो बोल्शेविक ''छः'' पूरी तौर पर उनसे अलग हो जायेंगे और जनसमुदाय से अपील करेंगे।

फूट

15 अक्टूबर को डूमा के पतझड़ सत्र की शुरूआत में हमने सामाजिक-जनवादी धड़े की पहली बैठक में ही दोनों हिस्सों के बीच समानता की अपनी मांग को उठाया ''हमने तत्काल जवाब चाहा। इंकार करने की हालत में हम धड़े से अलग हो जायेंगे''।

''सात'' ने बहस से आनाकानी करते हुए लिखित प्रस्ताव की मांग की। हमने दूसरे दिन अपनी लिखित घोषणा उन्हें सौंप दी। यह निम्न थीः

''राज्य डूमा में साझे कार्य के एक साल में हमारे और आप अन्य सात सामाजिक जनवादी सांसदों के बीच काफी खींचतान और टकरावों को बढ़ाया है। मतभेदों पर खुले तौर पर अखबारों में बार-बार चर्चा की गयी है और आपके अंतिम फैसले ने प्रदर्शित कर दिया है कि मौजूदा हालत में साथ काम करना बिल्कुल असंभव है। आपने यह फैसला जून में डूमा के ग्रीष्मावकाश से ठीक पहले उस समय लिया था जब कई सांसद बाहर थे। इन फैसलों का मतलब है कि अपने सात मतों के कारण आप ''छः'' बोल्शेविकों को बजट आयोग की या सर्वाधिक महत्वपूर्ण संगठन के प्रतिनिधि को दो सीटों में से एक में न रहने देने का इरादा रखते हैं।

डूमा में मजदूर सांसदों में दो में से एक बोल्शेविक को रखने से आप द्वारा बार-बार इंकार करने के बाद, यह फैसला ऐसा है जो हमारे बर्दाश्त से बाहर है।

आप जानते हैं कि हम सुसंगत मार्क्सवाद की भावना के अनुसार पूरी तौर पर काम करते रहे हैं और कर रहे हैं। हम उस आधार पर विचारधारात्मक तौर पर तमाम फैसलों पर कायम हैं। साथियो, आप जानते हैं कि हम तनिक भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं रखते, जब हम यह कहते हैं कि हमारी गतिविधियां आगे बढ़े हुए मार्क्सवादी रूसी मजदूरों के व्यापक हिस्से के विचारों और आकांक्षा से पूर्णतया मेल खाती हैं। अप्रैल-मई, 1912 के मजदूर आंदोलन उभार के समय पहले स्थापित मजदूर अखबार **प्रावदा** द्वारा व्यापक मजदूर वर्ग को गोलबंद करने से यह सिद्ध हो गया है। यह मजदूरों के चुनावी क्यूरिया में बोल्शेविकों के चुने जाने से साबित हो गया है।... यह दूसरी और तीसरी डूमा की तुलना में चौथी डूमा में मजदूरों के इलाकों से बोल्शेविक सांसदों के चुनाव से प्रमाणित हो गया है। यह पेत्रोग्राद के मेटल वर्कर्स यूनियन के बोर्ड के चुनाव के परिणामों में तथा मास्को के पहले अखबार के इतिहास से सिद्ध हो गया है।

यह स्पष्ट है कि मार्क्सवाद के झंडे के नीचे एकताबद्ध रूसी मजदूरों का आकांक्षा के पूर्णतया अनुरूप काम करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। तब भी, आप अन्य सात सांसद, उक्त आकांक्षा से स्वतंत्र काम करने को चुनते हैं।....लेकिन चाहे जो हो, यह स्पष्ट है कि आप वर्ग सचेत रूसी मजदूरों की रायों और मांगों के साथ आप अपने को बंधा हुआ नहीं समझते, जिनके लिए हम साथ-साथ काम करते हैं।

ऐसे हालात में दुनिया के किसी भी देश का प्रत्येक समाजवादी, प्रत्येक वर्ग सचेत मजदूर अपने एक अतिरिक्त मत द्वारा हमें दबाने के आपके प्रयासों की और रूसी मजदूरों के व्यापक हिस्सों द्वारा ठुकरायी गयी नीति को हमारे गले से नीचे जबरन धकेलने की निंदा करेगा।

हम यह स्वीकार करने को बाध्य हैं कि डूमा के भीतर और बाहर दोनों जगह कैसे काम किया जाये, के बारे में हमारे मतभेद असमाधेय हैं। हमारी दृढ़ राय है कि हमें प्रतिनिधित्व का न्यायपूर्ण हिस्सा देने से इंकार करने में आपका व्यवहार फूट का लक्ष्य लिये हुए है और हमारे साथ-साथ काम करने की संभावना को खारिज करता है। लेकिन सामाजिक जनवादी धड़े की एकता को कायम रखने की मजदूरों की प्रबल मांग के मद्देनजर, चाहे वह सिर्फ ऊपरी तौर पर दिखावे के लिए ही हो, चाहे वह सिर्फ डूमा के काम में ही हो, और इस राय का होने का पिछले एक साल का अनुभव यह दिखाता है कि समझौते के जरिये डूमा के कामों में ऐसी एकता प्राप्त करना संभव है, हम आपसे निवेदन करते हैं कि यह हमेशा के लिए सटीक तौर पर तथा बेलाग-लपेट होकर व्यक्त करें कि आपके सात मतों द्वारा मजदूरों के क्षेत्र के ''छः'' सांसदों को दबाने की आगे कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी। एकताबद्ध सामाजिक-जनवादी धड़े को कामय रखना तभी संभव है जब ''छः'' और ''सात'' के बीच पूर्ण समानता को स्वीकार किया जाय और जब डूमा के भीतर हमारा काम हमारे बीच मसले के सभी सवालों पर समझौते की कार्य दिशा पर अमल करें।

बोल्शेविक ''छः'' की इस घोषणा के कई दिनों की हीला-हवाली के बाद मेंशेविक ''सात'' ने इनकी सारी मांगों को ठुकराने वाला जवाब दिया। 25 अक्टूबर को संयुक्त मीटिंग में पत्र का जवाब मिला। यह चौथी राज्य डूमा में एकताबद्ध सामाजिक-जनवादी धड़े की अंतिम बैठक थी। फूट अब एक निर्विवाद सच्चाई बन चुकी थी।

अगले दिन **प्रावदा** में सभी मजदूरों को संबोधित करते हुए ''छः'' सांसदों ने यह अपील जारी कीः

''प्रत्येक मजदूर, सात सांसदों का जवाब पढ़ने पर, जिसमें उन्होंने हमारी सभी मांगों को अस्वीकार कर दिया है, निस्संदेह रूप से अपने आप से सवाल करेगा अगला कदम क्या है?''

''क्या धड़ा फिर से एकजुट होगा? क्या मजदूर उन सात सांसदों को, जो मार्क्सवादी संगठन से अलग-थलग किये हुए हैं, सामाजिक जनवाद के नाम से बोलने की इजाजत देंगे? हम ''छः'' मजदूर सांसद, अब क्या करें जब कि ''सात'' ने अपने एक मत के बहुमत के जरिये ऐसी नीति पर चलने का फैसला कर लिया है जो मजदूरों की आकांक्षा के विपरीत है?''

''हम महसूस करते हैं कि मजदूरों की मांग है कि डूमा में सामाजिक जनवादियों की एकता हो। जब हमने सर्वहारा वर्ग से यह पूछा कि क्या वे एकता हासिल करने की हमारी धारणा से सहमत हैं, तो हजारों मजदूरों ने जवाब दिया, 'हां, हम सहमत हैं'। हमारा दृढ़मत है कि व्यापक रूसी मजदूरों की यही राय है।

''उस एकता के लिए, हमने धड़े के भीतर अपना काम करना नहीं रोका और हमने वह सब किया जिससे उस एकता को नष्ट करने के लिए धड़े के भीतर के बहुमत के प्रयासों को हम रोक सकें। हमें यह उम्मीद करने का अधिकार था कि सात सांसद अपने गुटीय हितों को किनारे करके उन लाखों-लाख मजदूरों की आवाज सुनेंगे जिन्होंने अपने प्रस्तावों के जरिये हमारी मांगों की स्वीकृति दी है।

''लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ''सात'' ने हमारी मांगों को अस्वीकार कर दिया, मजदूरों को नजरंदाज किया और उनकी स्पष्ट तौर पर व्यक्त आकांक्षा के विरोध में गये। हमारे

सामने अब स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने की आवश्यकता की चुनौती है। यह सभी उन मजदूरों को अब स्पष्ट होना चाहिए जिनको मार्क्सवादी संगठन का हित और सर्वहारा वर्ग का ध्येय प्यारा है।''

''साथियो, इस कठिन समय में, आप से समर्थन की अपील करते हैं।

.....

''सात'' सांसदों के विरुद्ध अपने संघर्ष के दौरान बोल्शेविकों ने नई स्थिति हासिल कर ली थी और मजदूरों के बीच उनका प्रभाव विस्तार और गहरा हो गया था। पार्टी डगमगाई नहीं और विजयी होकर और मजबूत होकर निकली। धड़े के भीतर फूट और स्वतंत्र बोल्शेविक धड़े के निर्माण को हजारों-हजारों द्वारा विचार-विमर्श किया गया और यह तथ्य कि ऐसे सवालों को व्यापक प्रचार मिला जिनका अत्याधिक सांगठनिक व राजनीतिक महत्व था। ''छः'' के समर्थन में अभियान का परिणाम पार्टी की कतारों में मजदूरों की भारी संख्या में आने में हुआ और हमारी पार्टी के समग्र काम में नया उत्साह भर गया। बहुत से क्रांतिकारी मजदूर, जिन्हें तब तक पार्टी मतभेदों के सारतत्व का कोई स्पष्ट बोध नहीं था और जो मेंशेविक-विलोपवादियों की तरफ रुझान रखते थे, इस काल के दौरान प्राप्त सूचनाओं के परिणामस्वरूप बोल्शेविकों में शामिल हुए।

बुनियादी तौर पर, फूट का सवाल वह सवाल था कि पार्टी संगठन को कैसे बनाया जाय। हमारे ''छः'' बोल्शेविकों का समर्थन करके मजदूरों ने प्रदर्शित कर दिया कि उन्होंने अपने रास्ते को चुन लिया है, यह वह रास्ता था जिस पर चलने से रूसी सर्वहारा वर्ग को अंतिम विजय मिलनी थी।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–06, 16–31 मार्च, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक -VII

बोल्शेविक धड़ा

वस्तुतः 1913 के पतझड़ सत्र के पहले दिन से जब बोल्शेविकों ने मेंशेविकों के समक्ष अपनी मांगें प्रस्तुत करने के बाद संयुक्त रूप से कार्य करने से इंकार कर दिया था, ''छः'' लोग स्वतंत्र धड़े के रूप में अस्तित्व में आ गये थे। उस दिन से ''छः'' और ''सात'' अलग-अलग बैठकें करते थे। अक्टूबर के अंत में हमने स्वतंत्र बोल्शेविक धड़े की औपचारिक घोषणा कर दी थी।

धड़े की पहली मीटिंग में हमने पदाधिकारियों का चुनाव किया और संगठन संबंधी सवालों को तय किया। ''छः'' ने अपना नाम 'रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर धड़ा' रखा। 'मजदूर' शब्द पर जोर इसलिए दिया जिससे मेंशेविकों से फर्क किया जा सके।

.....

डूमा के अध्यक्ष मंडल ने प्रत्येक संभव तरीके से बोल्शेविक धड़ा बनने से रोकने की कोशिश की। और चूंकि अन्य डूमा धड़ों की तरह समान अधिकार हासिल करने के लिए अधिकाधिक मान्यता जरूरी थी इसलिए इसको टालने में अध्यक्ष ने पूरी कोशिश की। पहले उसने ''गैर धड़ा'' नाम दिया। बहुत बहस के बाद डूमा के इस नियम का हवाला देने के बाद कि सांसदों का कोई भी समूह धड़ा बनाने के लिए अधिकृत है, डूमा ''छः'' के धड़े को मान्यता देने के लिए बाध्य हुई।

इसी प्रकार, मेंशेविकों ने धड़े के कामों में बाधा डालने की यथासंभव कोशिश की। वे ''छः'' के कार्यस्थगन प्रस्ताव को सामाजिक जनवादियों के प्रस्ताव न मानने की अध्यक्ष से प्रस्ताव रख चुके थे। वे संयुक्त कार्य करने से इंकार करते थे। इससे उनकी एकता की चीख पुकार की कलई भी खुल गयी। मेंशेविकों ने घोषणा कर दी कि वे ''छः'' के धड़े को डूमा के भीतर अन्य धड़ों की तरह समझते हैं। इससे वे मजदूरों के बीच और भी बेनकाब होते गये। ''छः'' के एक कार्यस्थगन प्रस्ताव में उन्होंने हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया।

पहले वे विभिन्न आयोगों में ''छः'' के धड़े को प्रतिनिधित्व देने से इंकार करते थे। अब ''छः'' का स्वतंत्र धड़ा बन जाने के बाद उनको भी विभिन्न आयोगों में प्रतिनिधित्व मिलना कम हो गया। तब वे आयोगों में संयुक्त प्रतिनिधित्व का प्रस्ताव लेकर आये। बोल्शेविकों ने उनके इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया और वे इसी शर्त के साथ समझौता करने के लिए सहमत हुए कि ''छः'' को समान अधिकार सभी जगहों में प्रतिनिधित्व करने के लिए मिले।

''छः'' का स्वतंत्र धड़ा बन जाने के बाद इनके काम का दायरा बहुत ज्यादा व्यापक हो गया। प्रत्येक मजदूर सांसद को अब और ज्यादा ऊर्जा के साथ काम करना था। हम अपने कामों को अंजाम देने में इसलिए सफल हो सके क्योंकि हमें व्यापक मजदूरों का समर्थन मिला हुआ था। फूट के बाद हमें मजदूरों का और ज्यादा समर्थन मिलने लगा। फूट के बाद से डूमा के भीतर और बाहर दोनों में हमारे काम में नया उत्साह और जोश आ गया था। क्रातिकारी उद्देश्यों के लिए पैसा आना बढ़ता गया और मजदूर सांसदों से मिलने तथा अखबार के सम्पादकीय कार्यालयों में मिलने वाले मजदूरों की संख्या बढ़ती गयी। डूमा काम का दायरा भी भिन्न हो गया था।

डूमा का पतझड़ सत्र 6 सप्ताह का था। इस दौरान हमने 13 कार्यस्थगन प्रस्ताव पेश किये। वे प्रेस, दूसरी डूमा के सामाजिक जनवादियों की गिरफ्तारी में उकसावेबाज एजेंटों के इस्तेमाल पर, हड़तालों के बारे में ट्रेड यूनियनों के बारे में, बीमा सवालों पर, मजदूर प्रतिनिधियों की गिरफ्तारी पर, प्रेस पर (दूसरा कार्यस्थगन), हड़तालों पर (दूसरी बार), शहर राज्यपाल द्वारा बादायेव पर लगाये गये जुर्मानों पर, ओबूखोव कारखाने की हड़ताल पर, राज्य के उद्यमों में कार्यरत मजदूरों के गैर बीमाकृत होने पर, खदान दुर्घटनाओं पर और प्लेग से निपटने पर थे। इनमें से अधिकांश ''छः'' लोगों द्वारा स्वतंत्र रूप से पेश किये गये थे। इसके अतिरिक्त इस सत्र की 24 बैठकों में ''छः'' लोगों ने महत्वपूर्ण वक्तव्य रखे थे।

ब्लैक हंड्रेड के सदस्यों ने हमको रोकने की पूरी कोशिश की थी। बाद में वे एक नियम पारित कराने में सफल हो गये थे कि कार्यस्थगन पर बोलने का समय दस मिनट तक सीमित कर दिया जाय। वे हमारे क्रांतिकारी उद्वेलन के उद्देश्य को रोकने के लिए यह कर रहे थे।

हमारा धड़ा डूमा के कामों के सभी पहलुओं पर बहस करने के लिए पेत्रोग्राद के मजदूरों के प्रतिनिधियों से मिलता था। पेत्रोग्राद के मजदूरों ने मजदूरों का आयोग गठित कर लिया था। इस आयोग के साथ मजदूर सांसदों की संयुक्त बैठकें नियमित रूप से होती थीं। मजदूर आयोग अपनी गतिविधियां सिर्फ डूमा के सवालों पर बहस तक नहीं सीमित रखता था। यह वस्तुतः पार्टी निर्देशों को गैर कानूनी संगठनों तक पहुंचाने का एक साधन बन गया था।

आठ घंटे काम का बिल हमारे डूमा के काम में विशेष महत्व का था। इसे हमने मजदूर आयोग की मदद से तैयार किया था। यह हम जानते थे कि ब्लैक हंड्रेड के बहुमत के कारण यह बिल पारित नहीं हो सकता था। इसलिए इस बिल के न पास होने से हमें क्रांतिकारी उद्वेलन का और ज्यादा मौका मिल सकता था।

प्रावदा ने बिल को प्रकाशित करते हुए यह लिखा-

''वस्तुतः हम एक क्षण के लिए यह उम्मीद नहीं करते कि चौथी डूमा इस बिल को पारित करेगी। वर्तमान समय में आठ घंटे काम के दिन की मांग मजदूरों की बुनियादी मांगों में से एक है। जब डूमा में यह सवाल उठाया गया है तब दूसरी पार्टियों की इसके प्रति अपना दृष्टिकोण घोषित करना मजबूरी हो जायेगी और इससे डूमा के बाहर आठ घंटे काम के दिन के लिए हमारे संघर्ष में मदद मिलेगी। हम सभी मजदूरों से इस बिल का समर्थन करने की अपील करते हैं। इसे सिर्फ सांसदों के एक ग्रुप के नाम से ही नहीं बल्कि हजारों-हजार मजदूरों के नाम से पेश करें।''

प्रावदा में प्रकाशित इस बिल के बारे में अपील के बाद पेत्रोग्राद और अन्य शहरों के मजदूरों के प्रस्ताव पर प्रस्ताव पारित होने लगे। एक उदाहरण निम्न है जिस पर 319 लोगों के हस्ताक्षर थे।

''हम पुतिलोव कारखाने के विभिन्न विभागों के मजदूर रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर धड़े के ''छः'' सदस्यों द्वारा आठ घंटे के काम के अधिकतम दिन को राज्य डूमा की कार्यसूची में पेश करने के लिए उनको धन्यवाद देते हैं। हम इस बिल का पूरी तौर पर तहेदिल से समर्थन करते हैं और मजदूरों द्वारा चुने गये सांसदों का भी पूरी तौर पर तहेदिल से समर्थन करते हैं।''

इस बिल से ''छः'' का मजदूरों के बीच समर्थन और ज्यादा बढ़ गया तथा मेंशेविक और ज्यादा उनसे अलगाव में हो गये। वे खुद यह स्वीकार करने लगे कि मजदूरों के बीच उनका आधार पूरी तौर पर खिसकता जा रहा है। इसी दौरान एक मेंशेविक सांसद बुर्यानोव ने उनका धड़ा छोड़ दिया। बुर्यानोव ने दोनों धड़ों के बीच की अवस्थिति अपनायी। इसके थोड़े ही दिनों बाद मेंशेविकों ने एक सांसद मान्कोव को निष्कासित कर दिया। इस प्रकार जहां मेंशेविक बिखर गये और मजदूरों का विश्वास खो चुके थे वहीं ''छः'' बोल्शेविकों का प्रभाव बढ़ गया था और क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग उनका जोशो-खरोश के साथ समर्थन कर रहा था।

युद्ध की पूर्व बेला में क्रांतिकारी आंदोलन-

मार्च 1914 में पेत्रोग्राद में ऐसी कई घटनाएं हुईं जो मजदूर आंदोलन के मजबूत उभार को उल्लेखनीय बना रही थीं। इस महीने की शुरूआत में पेत्रोग्राद में कई राजनीतिक हड़तालें हुईं। मजदूरों के अखबार के दमन, डूमा द्वारा हमारे धड़े के कार्यस्थगन को नियोजित तरीके से रद्द करने, ट्रेड यूनियनों और शैक्षणिक संस्थानों के दमन और उत्पीड़न इत्यादि के विरुद्ध मजदूरों ने एक दिन की हड़ताल की। आंदोलन पूरे शहर में फैल गया और इसमें बहुत सारे कारखाने शामिल थे। मजदूरों ने डूमा के अध्यक्ष द्वारा हथियार बढ़ाने के लिए बुलाये गये गुप्त सम्मेलन के विरुद्ध भी विरोध किया। डूमा अध्यक्ष ने सामाजिक जनवादी और मुदोविकों के अलावा सभी का सम्मेलन बुलाया था। हथियारों पर जनता के धन के दुरुपयोग पर हमारा विरोध था। हमारे इस विरोध के समर्थन में 30 हजार मजदूर हड़ताल पर चले गये।

पूरे मार्च महीने आंदोलन चलता रहा। मजदूरों पर हुई गोलाबारी की वर्षगांठ के समय यह और व्यापक हो गया। हमारे सभी पार्टी संगठन वर्षगांठ के अवसर पर प्रदर्शन की तैयारी में लग गये। पेत्रोग्राद कमेटी ने कार्यस्थगन के समर्थन में प्रदर्शन करने की घोषणा की और अनेक फैक्टरियों के मजदूरों ने एकजुट होकर राज्य डूमा तक जाने का तय किया। 13 मार्च को प्रदर्शन तय किया गया और व्याबोर्ग जिले में हड़ताल शुरू हो गयी। जल्द ही हड़ताल पूरे शहर में फैल गयी। 60 हजार मजदूर इसमें शामिल हुए जिसमें 40 हजार धातु मजदूर थे। फैक्टरियों में लेना हत्याकांड को याद करते हुए तथा क्रांतिकारी संघर्ष के आम कार्यभारों को बताते हुए प्रस्ताव पारित किये गये।

मजदूर लाल झंडा लिये हुए क्रांतिकारी गीत गाते हुए डूमा की ओर चल पड़े। जगह-जगह पुलिस से झड़पें हुईं। दूसरे दिन भी और बड़े प्रदर्शन हुए। इसके तत्काल बाद एक रबड़ फैक्टरी में काम करने वाली मजदूर महिला द्वारा जहर का शिकार होने के बाद आंदोलन और व्यापक हो गया। अब हड़तालों का सिलसिला चल पड़ा। रबड़ फैक्टरी के जहरीले धुएं से पहले भी कई घटनाएं हो चुकी थीं। इस पर हमने एक कार्यस्थगन प्रस्ताव तैयार किया जो निम्न थाः-

''मजदूरों का शारीरिक क्षरण और उनकी निरंतर मौतें मजदूरों के पूंजीवादी शोषण के आम परिणाम हैं। रूसी मजदूरों की राजनीतिक अधिकारहीनता और शक्तिशाली पूंजीपतियों के गठजोड़ के सामने उनकी कमजोरी मजदूर वर्ग के हालात भूदास से भी बदतर बना देते हैं। पूंजीपतियों का यह शक्तिशाली गठजोड़ पदों में बैठे सभी राजनीतिज्ञों को नियंत्रित करता है। लेना सोना खदानों में हुए घटनाएं इसका एक उदाहरण हैं जहां मजदूरों को घोड़े का मांस खिलाया जाता है और उनको वहां से भगाकर टैगा भेज दिया जाता है और अंततः गोली मार दी जाती है। रीगा की सबसे बड़ी फैक्टरी- प्रोवोदनिक रबड़ फैक्टरी- में 13 हजार मजदूर काम करते हैं जिनमें मुख्यतया महिला मजदूर हैं, नई दुःखदाई घटना का यह नया दृश्य पेश करता है।''

अभी डूमा के समक्ष इस कार्यस्थगन को पेश करना ही था कि तब तक पेत्रोग्राद से ऐसे जहर का शिकार होने के मामले सामने आ गये। एक फैक्टरी में 200 मामले जहर का शिकार होने के आये। उसी दिन शाम को फैक्टरी के बाहर हजारों मजदूर इकट्ठा होकर दुर्घटना के कारणों, दुर्घटना के शिकार लोगों के नामों की मांग प्रबंधक से करने लगे। प्रबंधकों ने मजदूरों को कोई भी सूचना देने से इंकार कर दिया। अगले दिन उसी फैक्टरी के दूसरे विभाग में जहरीले धुएं की शिकार कई महिलाएं हुईं। महिला मजदूरों ने ऐसे जहरीले वातावरण में काम करने से इंकार कर दिया।

काम के बाद हजारों की तादाद में मजदूर इकट्ठे हो गये। बैठक में भारी मात्रा में पुलिस पहुंच गयी। दोनों तरफ से झड़पें हुई। अगले दिन और मजदूर इकट्ठे हुए। बिना किसी तैयारी के हड़ताल की घोषणा कर दी गयी। यहां फिर से पुलिस से मुठभेड़ हुई। मजदूरों की गिरफ्तारी हुई। दोनों ओर से लोग घायल हुए।

इसके बाद विभिन्न तरह के उद्योगों में जहरीले पदार्थों और गैसों के मामले आने लगे। समूचे पेत्रोग्राद में बीमारी व्यापक थी और इतने बड़े पैमाने पर घटनाओं से निपटने के लिए पेत्रोग्राद की अधिकांश फैक्टरियों में डाक्टरी सुविधा नदारद थी। कोई डाक्टर या नर्स नहीं थे। दवाएं अपर्याप्त थीं और दुर्घटना के शिकार लोगों को रखने की कोई सुविधा नहीं थी। विभिन्न उद्योगों में मजदूरों का जहर का शिकार होने से समाज के सभी हिस्सों में हलचल हो गयी। पूंजीवादी प्रचारकर्ता भी इससे अछूते नहीं रह सकते थे। वे इसके लिए क्रांतिकारी पार्टी को एवं मजदूर वर्ग को जिम्मेदार ठहराने लगे। वे इतने बेशर्मी से अपनी बातें कह रहे थे कि जारशाही सरकार भी उनकी इस अवस्थिति का समर्थन करने का साहस नहीं कर रही थी।

डूमा में कार्यस्थगन प्रस्ताव पेश हुआ। कार्यस्थगन का जवाब देते समय मंत्री को फैक्टरियों के दमघोंटू माहौल और खराब किस्म के रसायन का इस्तेमाल को जिम्मेदार बताना पड़ा।

बहुत तनावपूर्ण माहौल में इस पर बहस शुरू हुई। डूमा का प्रत्येक सदस्य जानता था कि कार्यस्थगन प्रस्ताव पर बहस से एक दिन पहले 30 हजार से ज्यादा मजदूर प्रदर्शन कर चुके थे। पुलिस से झड़पें भी हुई थीं। जब डूमा में बहस हो रही थी उस समय और ज्यादा मजदूर हड़ताल पर चले गये थे। पेत्रोग्राद के मजदूरों में सरगरमी विद्युत गति से बढ़ गयी थी। मजदूरों की यह उत्तेजना डूमा तक पहुंच रही थी। डूमा के ब्लैब हंड्रेड सदस्य बेचैन हो रहे थे। वे डूमा में भाषणों पर बाधा पहुंचा रहे थे। वे बोल्शेविकों के भाषणों की ठीक ही व्याख्या कर रहे थे कि इनके भाषण मजदूरों को और ज्यादा उकसाने का काम करेंगे। इसलिए वे डूमा के अंदर उनकी आवाज को बंद कर देना चाहते थे।

इससे मजदूरों में और ज्यादा गुस्सा और उत्तेजना फैलती गयी। दूसरे दिन 1,20,000 मजदूर हड़ताल पर चले गये। जारशाही पुलिस ने गिरफ्तारी की। इसके बावजूद समूचे शहर में प्रदर्शन हुए। जगह-जगह पुलिस से मुठभेड़ें हुई।

मजदूरों के इस प्रकार से निपटने के लिए जारशाही सरकार और पूंजीपतियों ने तालाबंदी का हथियार इस्तेमाल किया। 20 हजार मजदूर तालाबंदी के कारण बेरोजगार हो गये। बाल्टिक जहाजी बेड़े के बंदरगाह से काम बंद कर दिया गया। सभी जगहों पर पुलिस तैनाती बढ़ा दी गयी। मालिकों द्वारा मजदूरों के विरुद्ध छेड़े गये युद्ध में सरकार पूरी तरह से मालिकों के पक्ष में खड़ी थी।

पहले की तालाबंदियों के समान ही इस तालाबंदी के शिकार मजदूरों के लिए ''छः'' सांसदों के धड़े ने धन संग्रह करने को संगठित किया। इसी के साथ ही **प्रावदा** के कालमों में हमने मजदूरों से आह्वान किया कि निकाले जाने के विरुद्ध 15 दिन की मजदूरी देने के लिए अपने मालिकों पर मुकदमा करें।

इससे एक दिन पहले बादायेव को एक शवयात्रा में आने के लिए मजदूरों को निमंत्रित किया। जब शव को जमीन में रखा जा रहा था तो बादायेव ने अपना भाषण शुरू किया। पेत्रोग्राद के मजदूरों के व्यापक परिवार से नये-नये लोग शिकार हो रहे हैं। पत्थर दिल पूंजीपति क्या इसकी परवाह करते हैं? थका देने वाली मेहनत, कारखानों की जहरीली गैसें, असमय मौत और इस सबसे बढ़कर तालाबंदी-यही मजदूर वर्ग की दास्तान है।

बायादेव का भाषण समाप्त होने से पहले घुड़सवार पुलिस मजदूरों पर कोड़ों से मारती हुई कूद पड़ी। भीड़ पीछे हटने को बाध्य हुई और उस जगह से क्रांतिकारी गीत गाते हुए वापस आयी।

डूमा पर बहस में भाग लेने के लिए बादायेव को लौटना पड़ा। डूमा में भी बादायेव को बोलने में बाधा पहुंचायी गयी।

यह पूरा मामला पेत्रोग्राद में ऐसा महत्व ग्रहण कर चुका था कि ब्लैक हंड्रेड डूमा को भी हमारे कार्यस्थगन को रद्द करने की हिम्मत नहीं पड़ी।

लेकिन यह तथ्य कि डूमा ने हमारे प्रस्ताव को बिना शर्त रद्द नहीं किया, इससे सरकार या मालिकों द्वारा मजदूरों के विरुद्ध आम हमला करने की कोई रुकावट नहीं आयी। कुछ समय तक मजदूरों को बेरोजगार रखने के बाद उन्होंने तालाबंदी समाप्त कर दी लेकिन मजदूरों को वापस लेते समय उन्होंने अविश्वसनीय और गड़बड़ी फैलाने वाले सभी तत्वों को सावधानी से इधर-उधर कर दिया।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–07, 01–15 अप्रैल, 2014)

जारशाही डूमा में बोल्शेविक–VIII

समूचे रूस की और विशेष तौर पर मजदूर आंदोलन के भीतर की परिस्थिति निश्चित तौर पर डूमा के भीतर चलने वाले संघर्ष के रूपों को निर्धारित करती थी। इसी के मद्देनजर अप्रैल, 1914 में राज्य डूमा में बाधा डालने की कार्यवाही ने विशेष रूचि को जन्म दिया और जिसके परिणामस्वरूप सभी सामाजिक जनवादी और त्रुदोविक सांसद 15 बैठकों के लिए निलंबित कर दिये गये। डूमा के भीतर होने वाली घटनाएं प्रत्यक्ष तौर पर मजदूर वर्ग के संघर्ष के विकास को प्रतिबिंबित करती थीं, जिसमें जैसा कि अक्सर होता है कि उदारवादी पार्टियां थोड़े समय के लिए ज्यादा उग्रपरिवर्तनवादी हो गयी थीं। फिर भी, समूचे मामले ने उदारवादी कार्यनीति के एक अन्य सामान्य लक्षण को उजागर कर दिया था। जैसे ही डूमा की अवस्थिति कुछ तीखी हो गयी थी, वैसे ही उदारवादी पार्टियों ने अपना विरोध चुपचाप त्याग दिया और डूमा के प्रतिक्रांतिकारी बहुमत की कतारों में अपना स्थान फिर से ले लिया।

डूमा में बाधा का तात्कालिक कारण तो चखेइद्जे का वह डूमा में दिया गया भाषण था जिसमें उसने गणतांत्रिक हुकूमत के फायदे बताये थे। डूमा के भीतर दिये गये भाषण के कारण सरकार ने उक्त सांसद पर मुकदमा चलाने का फैसला किया था। जारशाही सरकार सांसदों को डूमा के बाहर की कार्यवाहियों के लिए न्यायालय या प्रशासनिक आदेशों द्वारा अक्सर ही मुकदमा चलाती रहती थी। लेकिन डूमा के भीतर की कार्यवाही के लिए, खुद डूमा के भीतर भाषण देने के लिए, यह पहली बार हो रहा था। यह सरकार द्वारा डूमा के मंच से भाषण की स्वतंत्रता को खत्म करने का प्रयास था, हालांकि ब्लैक हंड्रेड अध्यक्ष मंडल इसे पहले ही सीमित किये हुए था। यदि सरकार इसमें सफल हो जाती तो समूचा वामपक्ष कुचल दिया जाता।

कैडेट और प्रोग्रेसिव, दोनों उदारीवादी पार्टियां भी बजट में मतदान करने से इंकार करने की बात करने लगीं और प्रोग्रेसिवों ने डूमा के भीतर दिये जाने वाले भाषणों की आजादी के सवाल पर एक बिल पेश किया। सामाजिक जनवादी धड़े ने एक प्रस्ताव पेश किया कि, ''जब तक सांसदों की अनुलंघनीयता पर आजादी वाला बिल पारित नहीं हो जाता तब तक डूमा के सभी कार्यों को निलंबित कर दिया जाय''। यह ऐसा प्रस्ताव था जो उदारवादियों के लिए बहुत ज्यादा क्रांतिकारी था। इसलिए उन्होंने एक दूसरा प्रस्ताव पेश किया। वह यह था कि जब तक बिल पारित नहीं हो जाता तब तक बजट पर बहस को टाल दिया जाय। उनके लिए राहत की बात यह थी कि उनका यह प्रस्ताव भी गिर गया। लेकिन सामाजिक जनवादी व त्रुदोविक अपने प्रस्ताव से पीछे हटने को तैयार नहीं थे। उन्होंने डूमा की कार्यवाही में बाधा डालने के अपने फैसले को बरकरार रखा। देश के भीतर क्रांतिकारी भावना के उभार को देखते हुए इसके भीतर भी ऐसी कार्यवाहियों का सरकार के विरुद्ध एक या दो दर्जन सर्वाधिक क्रांतिकारी भाषणों की तुलना में बहुत ज्यादा महत्व था।

बजट पर पहली बहस का दिन वही था जिस दिन **प्रावदा** की दूसरी वर्षगांठ थी। इसे हमारी पार्टी ने ''मजदूरों के अखबार दिवस'' के बतौर संगठित किया था। उस दिन **प्रावदा** की एक लाख तीस हजार प्रतियां बिकीं। इससे हम बिल्कुल निश्चित हो गये कि डूमा के भीतर हमारे प्रदर्शन ने जन समुदाय के आंदोलन को आगे बढ़ाने में बहुत मदद की है और हमें समूचे मजदूर वर्ग का समर्थन मिलेगा।

जैसे ही बजट पर मंत्री ने भाषण देना शुरू किया वैसे ही हमारे ''छः'' ने अवसर का लाभ उठाते हुए सरकार पर हमले शुरू कर दिये और इसके साथ ही उदारपंथियों की कायरता व नपुंसकता को भी उन्होंने उजागर कर दिया। इसके बाद डूमा से हमारे सदस्यों का एक के बाद दूसरे का निलंबन तेजी से शुरू हो गया। कुछ सांसदों ने डूमा के हॉल को छोड़ने से इंकार कर दिया। इससे सभापति ने डूमा की कार्यवाही स्थगित कर दी। तब सिपाहियों ने निलंबित सदस्यों को जबरदस्ती हॉल से बाहर निकाल दिया।

शक्ति का इस्तेमाल डूमा के इतिहास में अभूतपूर्व था।.. जैसा कि हमारे डूमा के भीतर भी सभी कामों के मामले में था, हमारे कामों की प्रभावकारिता मजदूरों के बीच मिलने वाले समर्थन पर निर्भर करती थी। हालांकि डूमा देश के भीतर चलने वाले राजनीतिक संघर्षों को एक हद तक प्रतिबिम्बित करती थी, फिर भी सवाल को अंततोगत्वा फैक्टरियों और सड़कों पर तय होना था न कि डूमा की चाहरदीवारी के भीतर।

अपने दूसरे पार्टी संगठनों के साथ हमारे धड़े ने डूमा के भीतर हो रही घटनाओं के संबंध में मजदूरों के प्रदर्शनों की तैयारी शुरू कर दी। ट्रेड यूनियनों, शिक्षण सोसाइटियों और मजदूर वर्ग के दूसरे संगठनों के जरिये, जिनमें बोल्शेविक सेल काम करते थे, आंदोलन शुरू हो गया।.. सरकार ने भी गिरफ्तारियां शुरू कर दी।

डूमा के हमारे सदस्यों के निष्कासन के दूसरे ही दिन विरोध हड़ताल शुरू हो गयी। पहले दिन लगभग 4000 मजदूरों ने हड़ताल में हिस्सेदारी की। दूसरे दिन यह संख्या 55,000 हो गयी। यह हड़ताल पेत्रोग्राद से मास्को में भी पहुंच गयी, जहां लगभग 25 हजार मजदूरों ने हिस्सेदारी की। हर जगह, हड़तालियों ने सभाएं कीं और विरोध में प्रस्ताव पारित किये गये।

पूंजीपतियों के संगठनों ने भी बंदी करके इसका जवाब दिया। उन्होंने कारखाने बंद कर दिये। उनके संगठन को ''तालाबंदी करने वाला संगठन'' कहा गया। इस प्रकार, पूंजीपतियों ने अपने संगठन को मजदूरों के खिलाफ आर्थिक संघर्ष के साथ-साथ राजनीतिक संघर्ष के बतौर सिद्ध कर दिया। पूंजीपतियों ने यह सोचा था कि वे मजदूरों को भूखा रखकर और बेरोजगार करके उनके क्रांतिकारी उत्साह को तहस-नहस कर देंगे, लेकिन ब्लैक हंड्रेड इतना ही पर्याप्त नहीं मानते थे। वे मजदूरों के खिलाफ और सख्त कार्यवाही की मांग कर रहे थे।

उदारपंथी तो मजदूरों के बढ़ रहे क्रांतिकारी उभार से डरे हुए ही थे। मेंशेविक भी डूमा के सदस्यों की तरह आजादी के सवाल को देश के राजनीतिक जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण सवाल मानते थे। जबकि **प्रावदा** का दृष्टिकोण इसके ठीक विरोध में था। **प्रावदा** का कहना था कि डूमा के भीतर भाषण की स्वतंत्रता का सवाल मजदूरों के लिए बुनियादी महत्व का सवाल नहीं है और न डूमा केवल क्रांतिकारी संघर्ष को मजबूत करने के कई साधनों में एक साधन के बतौर ही काम आ सकती है।

राज्य डूमा के भीतर अप्रैल महीने की निष्कासन की घटनाओं ने और इसके विरुद्ध खड़े होने वाले मजदूरों के व्यापक प्रदर्शन ने क्रांतिकारी आंदोलन के आगे के विकास को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसका तत्काल प्रभाव मई दिवस के प्रदर्शनों में दिखाई दिया। 1914 में मई दिवस के प्रदर्शन इसके पहले के प्रदर्शनों से बहुत बड़े थे। पेत्रोग्राद में 2.5 लाख मजदूरों ने, मास्को में लगभग 50 हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया। विभिन्न प्रांतीय शहरों में जहां मजदूर आंदोलन कमजोर था, वहां मजदूरों ने विशिष्ट क्रांतिकारी उत्साह के साथ मई दिवस संगठित किया और मनाया। प्रत्येक चीज अब यह संकेत दे रही थी कि जारशाही के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष में प्रवेश करने के लिए मजदूर वर्ग तैयार हो रहा है।

निलंबन के खात्मे के बाद बोल्शेविक सदस्यों ने बजट की बहस में हिस्सा लिया। हालांकि निलंबन के दौरान ही बजट की मुख्य बातें पारित हो गयी थीं। लेकिन जब भी मौका मिला तो बोल्शेविक सदस्यों ने जारशाही सरकार की समूची नीति पर हमला किया।

1914 की गर्मियों में हड़ताल आंदोलन– जून, 1914 में राज्य डूमा ग्रीष्मावकाश में चली गयी। यह सत्र प्रथम विश्व युद्ध के पहले का अंतिम सत्र था। इस सत्र की समाप्ति समूचे देश में मजदूर वर्ग के आंदोलन के ज्वार के दौरान हुई थी।

मई दिवस के शक्तिशाली प्रदर्शनों के बाद ओबूखोव कारखाने के मजदूरों को दी गयी सजाओं के विरोध में हड़ताल की तैयारी की गयी। नवम्बर, 1913 में जब पहला मुकदमा शुरू हुआ था, उस समय पेत्रोग्राद में हड़तालों का सिलसिला शुरू हो गया था, अब मई, 1914 में मजदूरों को हड़ताल में हिस्सा लेने के लिए न्यायालय ने दो-दो महीने की सजा सुना दी थी। इस सजा के विरोध में एक लाख से ज्यादा मजदूर हड़ताल में चले गये। मजदूरों का यह जोशीला प्रदर्शन मई दिवस के प्रदर्शन का सिलसिला था।

पेत्रोग्राद के मजदूरों की दूसरी राजनीतिक हड़ताल कीव के एक मुकदमे के वकील के विरुद्ध चलाये जा रहे मुकदमे और पाइप कारखाने के शॉप मैनेजर की हत्या के अभियोग में एक मजदूर को मृत्युदंड दिये जाने के विरोध में थी। जून के शुरू में हुई इस हड़ताल में तीस हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया था।

इसी के साथ ही पेत्रोग्राद की कई फैक्टरियों और कारखानों में लगातार जुझारू आर्थिक संघर्ष हो रहे थे।... संघर्ष का यह विकास पेत्रोग्राद तक ही सीमित नहीं था। पेत्रोग्राद के मजदूरों द्वारा पेश की गयी मिसाल समूचे देश के मजदूर आंदोलन के लिए उत्प्रेरक का काम कर रही थी। आर्थिक और राजनीतिक, दोनों तरह की हड़तालें एक शहर से दूसरे शहर में फैल गयी थीं।

मई के दौरान मास्को जिले के टैक्सटाइल उद्योग में एक लंबा विवाद शुरू हुआ और जल्द ही यह मास्को और ब्लादीमिर के कई इलाकों में फैल गया जिसमें लगभग एक लाख मजदूरों ने हिस्सा लिया। यह टैक्सटाइल मजदूरों के लिए असाधारण रूप से बड़ी संख्या थी क्योंकि वे छोटी-छोटी मिलों में एक-दूसरे से अलग-अलग काम करते थे। इसकी प्रमुख मांगों में एक, पुस्तकालयों की मांग थी, जहां पर 'मजदूर' अखबार और पत्रिकाएं पढ़ सकें।

टैक्सटाइल मजदूरों की हड़ताल के समय ही बाकू में भी घटनाएं हो रही थीं। बाकू सुदूर दक्षिण में स्थित है। बाकू की घटनाएं समूचे मजदूर वर्ग के आंदोलन के लिए व्यापक महत्व की थीं। बाकू की हड़ताल लंबे समय तक चली हड़ताल थी। इसको दबाने के लिए पूंजीपतियों और जारशाही सरकार ने हर संभव कोशिश की थी। इसने प्रथम विश्व युद्ध की पूर्वबेला में पेत्रोग्राद के मजदूरों को ऐतिहासिक कार्यवाही करने की गति दी।

बाकू के तेल कुओं की हड़ताल स्वतःस्फूर्त नहीं हुई थी। यह कई महीनों तक चली सचेत तैयारी का परिणाम थी। हड़ताल का तात्कालिक कारण तो तेल कुओं के सीमावर्ती जिलों में फैली प्लेग की महामारी थी। इससे बाकू के मजदूरों के आवास के हालात के सवाल को ट्रेड यूनियन ने मालिकों के संघ के समक्ष आवास प्रश्न को उठाया। कई अन्य आर्थिक व आंशिक मांगों के साथ ही आठ घंटे काम के दिन और मई दिवस को मजदूरों के लिए अवकाश की सरकारी स्वीकृति की मांग को रखा।

मालिकों ने कोई मांग नहीं मानी। उन्होंने मजदूरों का दमन करने के लिए हर संभव हथकंडे अपनाये। उनके आवास खाली कराये गये, पासपोर्ट जब्त किये गये, बिजली और पानी रोक दिया गया। उन इलाकों में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। शाम 8 बजे के बाद सड़कों पर निकलने से रोक लगा दी गयी।

जून के अंत में बाकू के मजदूरों ने प्रदर्शन किया जिसमें 20 हजार मजदूरों ने भाग लिया। इसमें सैकड़ों मजदूरों को गिरफ्तार किया गया।

इस हड़ताल ने समूचे देश में दिलचस्पी पैदा कर दी थी। एक तरफ मालिक और जारशाही सरकार थी और दूसरी ओर मजदूर वर्ग था। दोनों संघर्ष के विकासक्रम को देख रहे थे। कई उद्योगों के लिए तेल आपूर्ति नहीं हो पा रही थी। जारशाही सरकार ने कई कदम उठाते हुए सहायक गृहमंत्री को सीधे वहां लगा दिया। इन कदमों ने रूस के व्यापक मजदूरों में और ज्यादा गुस्से को भड़का दिया। बाकू के मजदूरों ने डूमा धड़े से सहायता की अपील की और डूमा के बोल्शेविक सदस्यों ने हड़तालियों की मदद के लिए पेत्रोग्राद में एक विरोध प्रदर्शन को संगठित किया।

बाकू के मजदूरों के समर्थन में भारी पैमाने पर लोगों ने आर्थिक सहयोग किया। पेत्रोग्राद के मजदूरों का क्रांतिकारी उत्साह लगातार बढ़ता जा रहा था। जारशाही सरकार ने बाकू के मजदूरों की मदद में होने वाले संग्रह को रोकने की कोशिश की। उन्होंने अखबारों में हड़ताल के लिए फंड छापने पर रोक लगा दी और इसके लिए उन्होंने अखबारों पर 500 रूबल का जुर्माना या तीन महीने कैद की सजा का आदेश जारी कर दिया।

जैसे-जैसे पेत्रोग्राद में और बाकू में दमन तेज होता जा रहा था, वैसे-वैसे पेत्रोग्राद में मजदूरों का अभियान और सघन व व्यापक होता जा रहा था। दमन के लिए पुलिस को भारी पैमाने पर लगाने के बावजूद सरकार क्रांतिकारी आंदोलन के उभार को पीछे ले जाने में असमर्थ सिद्ध हुई। यह बात आगे आने वाले कुछ सप्ताहों में बेमिसाल आकार में विकसित होने वाली थी।

जुलाई– जुलाई की शुरूआत से पेत्रोग्राद की फैक्टरियों और कारखानों में हड़ताल आंदोलन बहुत तेजी के साथ बढ़ गया था। बाकू मजदूरों के समर्थन में और उनके दमन के विरोध में विभिन्न फैक्टरियों में हड़तालें हुई, प्रदर्शन हुए और प्रस्ताव पारित किये गये। पुतिलोव कारखाने के मजदूरों के इंतजाम में पुतिलोव कारखाने के यार्ड में 12 हजार मजदूर इकट्ठे हुए। पहले दिन पुलिस ने उनको तितर-बितर कर दिया। दूसरे दिन फिर 12 हजार मजदूर इकट्ठे हुए सभा के अंत में जब मजदूर फाटक के पास पहुंचे तो बंद फाटक को खोलने की मांग करने लगे। फाटक खुलते ही घुड़सवार पुलिस पहुंची और मजदूरों पर गोलियां चलाने लगी। उस समय 2 मजदूर मारे गये, लगभग 50 मजदूर घायल हुए और सैकड़ों मजदूरों को गिरफ्तार करके पुलिस स्टेशन ले जाया गया।

दूसरे दिन **प्रावदा** में विस्तृत रिपोर्ट छपी। बादायेव ने सहायक गृहमंत्री से मुलाकात की। उसने गोली चलाने की घटना से इंकार किया। उल्टे बादायेव पर मजदूरों को भड़काने का आरोप लगया। इसके अलग दिन **प्रावदा** में बादायेव की सहायक गृहमंत्री से मुलाकात की रिपोर्ट छपी। **प्रावदा** के इस अंक को जब्त कर लिया गया। इसके अगले दिन फिर वह रिपोर्ट छपी। इससे यह सिद्ध होता था कि पुतिलोव कारखाने में गोली चलाने की घटना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी बल्कि जारशाही सरकार के दमनकारी कदमों का एक हिस्सा थी।

गोली चलने के दूसरे दिन समूचे पेत्रोग्राद में हड़ताल फूट पड़ी। इन हड़तालों में 70 हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया।

पहले तो बाकू के हड़ताली मजदूरों के समर्थन में हड़ताल थी। लेकिन पुतिलोव कारखाने में गोली चलने के बाद पेत्रोग्राद के मजदूरों का विरोध प्रदर्शन उसके विरुद्ध केंद्रित हो गया। समूचे पेत्रोग्राद के फैक्टरियों के मजदूरों की कमेटियों की सभा हुई। 7 जुलाई को जनकार्यवाही का फैसला लिया गया।

7 जुलाई का दृढ़ ठीक 1905 की तरह का था। पेत्रोग्राद में लगभग एक लाख तीस हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया। मजदूरों से सड़क पट गयी। जगह-जगह पुलिस से मुठभेड़ हुई। मजदूरों ने पूरे पेत्रोग्राद शहर को जाम कर दिया। ये हड़तालें और प्रदर्शन 12 जुलाई तक चलते रहे। इसमें लगभग 1.5 लाख मजदूरों ने हिस्सा लिया। जगह-जगह मजदूरों ने बेरीकेड बनाये। मजदूर इलाकों में सड़कें पूरी तरह मजदूरों के नियंत्रण में थीं।

जुलाई आंदोलन में युद्ध की घोषणा के साथ व्यवधान आ गया। युद्ध की घोषणा के साथ ही देशभक्ति भरे प्रदर्शन होने लगे और पुलिस का काम आसान हो गया। मालिकों ने जो तालाबंदी कर रखी थी, उसे युद्ध आदेशों और मुनाफे के खातिर खत्म कर दिया।

यह बिल्कुल संभव है कि किसी भी तरह जुलाई प्रदर्शन क्रांतिकारी संघर्ष को निर्णायक बिंदु तक नहीं ले जा सकते थे। लेकिन उस क्षण को भी टाला नहीं जा सकता था। यह निर्णायक मुकाम क्रांतिकारी उभार के नये मोड़ पर आ सकता था। लेकिन वह क्षण युद्ध द्वारा ढ़ाई वर्षों तक टल गया। हालांकि जुलाई, 1914 और फरवरी, 1917 युद्ध वर्षों से अलग हो गये फिर भी क्रांतिकारी आंदोलन के आम विकास में ये दोनों प्रत्यक्षतया आपस में जुड़े हुए थे।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–08, 16–30 अप्रैल, 2014)

जार शाही डूमा में बोल्शेविक–IX

कांग्रेस की तैयारी– पिछली अखिल रूसी पार्टी कांग्रेस 1907 में लंदन में हुई थी। इसके बाद के 9 वर्षों में देश में कई महत्वपूर्ण घटनाएं हो चुकी थीं और पार्टी के भीतर अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन आ गये थे। प्रतिक्रिया के वर्षों के दौरान पार्टी कांग्रेस आयोजित करना बिल्कुल असंभव था लेकिन अब परिस्थिति बदल चुकी थी। इसी के साथ ही मजदूर आंदोलन के तेज विकास ने क्रांतिकारी संघर्ष के संबंध में बहुत व्यापक स्तर पर नई समस्याएं खड़ी कर दी थीं तथा पार्टी में कई आंतरिक समस्याएं खड़ी हो गयी थीं। इन मसलों को पार्टी कांग्रेस में तय करने की जरूरत थी।

सितंबर, 1913 में पोरोनिनो सम्मेलन ने कांग्रेस की आवश्यकता पर विचार किया था और यह निर्णय लिया था कि 'मजदूर आंदोलन के विकास, गहराते जा रहे राजनीतिक संकट और मजदूर वर्ग की अखिल रूसी स्तर पर कार्यवाही करने की आवश्यकता ने यह जरूरी कर दिया है कि उचित तैयारी के बाद पार्टी कांग्रेस को आयोजित किया जाय''।

पोरोनिनो में यह तय किया गया था कि कांग्रेस को लगभग उसी समय बुलाया जाय जब अगस्त, 1914 में वियेना में समाजवादी अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस होनी तय थी।

पोरोनिनो सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस पर बोलते हुए लेनिन ने इंगित किया था कि उक्त कांग्रेस में मजदूरों की भागीदारी को सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने कहा थाः

''अब तक सामाजिक-जनवादी पार्टी अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में या तो केंद्रीय पार्टी मुख पत्रों द्वारा या इसके विदेशों में रह रहे विभिन्न ग्रुपों द्वारा प्रतिनिधित्व करती रही है, जो तकरीबन पूरी तरह बुद्धिजीवियों से आते रहे हैं। अब हमें यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना चाहिए कि मजदूर संगठनों, ट्रेड यूनियनों, सहकारी संस्थाओं इत्यादि से सीधे चुने गये प्रतिनिधियों द्वारा सही अर्थों में मजदूरों का प्रतिनिधत्व हो। डूमा धड़े को उन संगठनों की प्रतिनिधित्व करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए जो अपने खुद के प्रतिनिधि भेजने में असमर्थ हैं। प्रत्येक बोल्शेविक सांसद को उपस्थित रहना होगा क्योंकि वे खुद मजदूर हैं और रूसी मजदूर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।''

लेनिन ने जोर दिया कि शुरू से ही पार्टी के गुप्त संगठनों को मजबूत करना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि यह किये बिना पार्टी का विकास कम प्रभावशाली सिद्ध होगा क्योंकि वह क्रांतिकारी नेतृत्व से वंचित रह जायेगा।.....

लेनिन ने इशारा कियाः

''हमने महान विजयें हासिल की हैं, क्रांतिकारी मार्क्सवाद के लिए विजयें हासिल की हैं। अखबार, ट्रेड यूनियनें और शिक्षण संस्थान हमारे हैं। लेकिन इस विजय के अपने खतरे हैं। यह हमें अपने अनुशासन और कठोर श्रम से मिली हैं। यदि हम अपनी अवस्थिति को कायम रखना चाहते हैं और बढ़ते हुए आंदोलन को पार्टी नेतृत्व से बाहर निकलने नहीं देना चाहते और अराजकतावादी होने देना नहीं चाहते तो हमें हर कीमत पर भूमिगत संगठनों को मजबूत करना होगा। डूमा कार्य के एक हिस्से को पूरा कर लेना संभव है, हालांकि अतीत में इसे सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया है, लेकिन हमें अपनी गतिविधि डूमा से बाहर बढ़ाने पर जोर देना होगा। हमें सुसंगठित, अनुशासित फैक्टरी ग्रुपों की जरूरत है जो ऊपर से मिले निर्देशों पर तेजी के साथ अमल करने के लिए तैयार हों।''.....

कांग्रेस को आंतरिक पार्टी संगठन और क्रांतिकारी संघर्ष के रणकौशल के सभी बुनियादी और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों को तय करना था।

कांग्रेस की तैयारी संबंधित कार्य बहुत व्यापक थे। इसी के साथ ही केंद्रीय कमेटी को रूस के भीतर काम करने के लिए मजबूत करना था। इसके लिए स्तालिन और स्वेर्दलोव सहित कई साथियों को भीतर रूस भेजा गया।.....

इस प्रकार कांग्रेस की तैयारी के कार्य ने पार्टी संगठन को आम तौर पर चुस्त दुरूस्त कर दिया।

रूसी पार्टी कांग्रेस को अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले आयोजित करना था।

कांग्रेस की तैयारियों का कार्यभार बोल्शेविकों के डूमा सदस्यों पर आ गया था। मेंशेविकों की स्थिति अत्यन्त कमजोर हो चुकी थी। यह जल्द ही स्पष्ट हो गया था कि वे अब हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं। ट्रेड यूनियनों, बीमा समितियों और दूसरे मजदूर संगठनों के अधिकांश सदस्य बोल्शेविकों का समर्थन करते थे।

जब यह स्पष्ट हो गया था वे (मेंशेविक) वियेना कांग्रेस में बिना प्रतिनिधि के ही रह जायेंगे तो उन्होंने ''दोहरे प्रतिनिधित्व'' के विचार को उछाला। इसमें भी उनको सफलता नहीं मिली। वियेना कांग्रेस के लिए विभिन्न मजदूर संगठनों ने बोल्शेविकों को ही चुना।

पार्टी कांग्रेस की तैयारियां संतोषजनक तरीके से चलीं। स्थानीय पार्टी इकाइयों को मजबूत करने के मुख्य कार्यभार को देश के क्रांतिकारी उत्साह में बढ़ोत्तरी से भारी मदद मिली। ज्यादा से ज्यादा मजदूर पार्टी की तरफ आकृष्ट हो रहे थे, क्रांतिकारी मजदूरों के नये ग्रुप पार्टी की कतारों और नेतृत्वकारी कमेटियों में शामिल हो रहे थे और उनका जन समुदाय पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा था। इसलिए यह स्वाभाविक था कि अखिल रूसी कांग्रेस को संगठित करने के सवाल को बहुत दिलचस्पी से बहस किया जा रहा था।

पेत्रोग्राद से लेकर रूस के अलग-अलग प्रांतों में पार्टी कांग्रेस की तैयारियां जोर-शोर से और गुप्त तरीके से खुफिया निगाहों से बचते हुए की जा रही थीं।

लेकिन इसी समय युद्ध की घोषणा हो गयी। जिस समय युद्ध (प्रथम विश्व युद्ध) की घोषणा हुई, उस समय तक अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस और पार्टी कांग्रेस की तैयारियों का मुख्य हिस्सा पूरा हो चुका था।

युद्ध की घोषणा ने और इसके साथ होने वाली उन्मादी प्रतिक्रिया ने देश में परिस्थिति को बहुत तेजी के साथ बदल दिया था। अब पार्टी कांग्रेस को आहूत करना असंभव हो गया था क्योंकि सीमाएं बंद होने से विदेशों से संबंध अत्यन्त कठिन हो गये थे। पार्टी कांग्रेस को ज्यादा अनुकूल समय तक के लिए टाल देना था और अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस भी नहीं हो सकती थी।

युद्ध का फूट पड़ना– बाकू की हड़ताल और पेत्रोग्राद मजदूरों के जुलाई प्रदर्शन युद्ध शुरू होने के पहले की अंतिम बड़ी क्रांतिकारी घटनाएं थीं। इन संघर्षों में मजदूरों के बीच से अनेक शिकार हुए। जब जन आंदोलन बैरीकेड लड़ाई और सशस्त्र टकराहटों में विकसित हो गया था, उस समय जारशाही सरकार ने उभरती हुई क्रांति को कुचलने के लिए हर प्रयास किये। तालाबंदियों की श्रृंखला ने मजदूरों को आर्थिक रूप से झकझोर कर रख दिया और व्यापक गिरफ्तारियों और निर्वासनों ने मजदूर वर्ग के राजनीतिक संगठन को कमजोर कर दिया। सर्वहारा वर्ग को जारशाही पर नये हमले के लिए अपनी ताकतों को इकट्ठा करने में कुछ समय की जरूरत थी। परंतु मजदूरों को यह समय कहां दिया जाता। इसके विपरीत आगे आने वाली घटनाओं ने क्रांतिकारी आंदोलन पर भारी प्रहार किया।

युद्ध की घोषणा ने मजदूर आंदोलन पर अपने प्रहारों को दुगुना करने की खातिर सर्वाधिक प्रतिक्रियावादी शक्तियों के लिए एक संकेत का काम किया। चरम अंध राष्ट्रवाद और नकली युद्धोन्माद के वातावरण में जारशाही सरकार ने तमाम कानूनी एवं गैर कानूनी मजदूर संगठनों पर बर्बर दमन किया....

....पेत्रोग्राद की सड़कों में देशभक्तिपूर्ण प्रदर्शन आयोजित किये जाने लगे। जार की तस्वीरें एवं राष्ट्रीय झंडे लिए हुए ''ईश्वर जार की रक्षा करे'' गाते हुए नारे लगाने लगे। ''कानून और व्यवस्था'' की शक्तियों के अंतर्गत उन तमाम नागरिकों को पीटा जाने लगा जो इस तथाकथित देशभक्ति के प्रति पर्याप्त उत्साहित नहीं थे।

अंध राष्ट्रवाद की लहर की आड़ में जारशाही की पुलिस ने अपने पुराने आंतरिक दुश्मन रूसी सर्वहारा वर्ग के सबसे अग्रिम हिस्से के साथ अपना हिसाब-किताब करना तेज कर दिया। कलम की एक नोंक से अब भी बच रहे मजदूर संगठनों को कुचल दिया गया। साइबेरिया फिर से निर्वासितों से भर गया और पार्टी संगठनों ने अपने बहुत से सबसे अच्छे सदस्यों को खो दिया।

और तब भी इन कमजोरियों के बावजूद युद्ध के शुरूआती दिनों में पेत्रोग्राद में अनेक युद्ध विरोधी कार्यवाही हुई। बोल्शेविकों की पेत्रोग्राद कमेटी ने मजदूरों-किसानों और सैनिकों को संबोधित करते हुए एक अपील जारी की वह यह थी :-

''मजदूरों को यह याद रखना होगा कि सीमा पार के मजदूर उनके दुश्मन नहीं हैं। सभी देशों के मजदूरों का उत्पीड़न धनी ओर शासक वर्ग करते हैं। इनका सब जगह शोषण होता है...सैनिकों और मजदूरों! आपको कज्जाक कौड़ी के गौरव के लिए, अपने देश के गौरव के लिए- आपका देश जो मजदूरों और किसानों को गोलियों से भूनता है और जो आपके सबसे अच्छे बेटों को जेल में डालता है- के गौरव के लिए मरने का आह्वान किया जा रहा है। हमें घोषणा करनी चाहिए कि हम यह युद्ध नहीं चाहते। ''रूस की स्वतंत्रता हमारा युद्धघोष है।''

ऐसे हालात में युद्ध के विरुद्ध व्यापक आंदोलन संगठित करना असंभव था और व्यक्तिगत मजदूरों के बहादुराना कार्य उग्र देशभक्ति के समुद्र में डूब गया।

जार के साथ जनता की ''पूर्ण एकता'' को ज्यादा साफ तौर पर प्रदर्शित करने के लिए और सर्वोपरि युद्ध खर्चे को पास कराने के लिए जल्दबाजी में, राज्य डूमा की बैठक बुलाई गयी। राज्य डूमा के एक बोल्शेविक सदस्य ने एक पूंजीवादी अखबार के सामने घोषणा की ''मजदूर वर्ग अपनी पूरी ताकत के साथ युद्ध का विरोध करेगा। युद्ध मजदूर वर्ग के हितों के विरुद्ध है। इसके विपरीत इसकी धार समूची दुनिया के मजदूर वर्ग के विरुद्ध मोड़ दी गयी है। समाजवादी अंतर्राष्ट्रीय (दूसरे इंटरनेशनल) के बैसले कांग्रेस में विश्व सर्वहारा वर्ग के नाम पर प्रस्ताव पारित करते हुए यह घोषणा की है कि युद्ध की घोषणा के मामले में हमारा कर्तव्य इसके विरुद्ध पुरजोर संघर्ष छेड़ने का है। हम, मजदूर वर्ग के वास्तविक प्रतिनिधि 'युद्ध के विरुद्ध युद्ध' के नारे के लिए लड़ेंगे। हमारे धड़े का प्रत्येक सदस्य युद्ध के विरुद्ध तमाम साधनों से लड़ेगा''।

स्वाभाविक था कि पूंजीवादी अखबार इसे नहीं छापते लेकिन जब युद्ध के खर्चे के लिए मतदान हेतु बहस करने के दौरान डूमा में हमारी पार्टी ने अपनी घोषणा सार्वजनिक कर दी। इसके पहले बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच संयुक्त घोषणा करने के संदर्भ में कई बैठकें हुईं। इन बैठकों में एक संयुक्त घोषणा जारी हुई हालांकि इस संयुक्त घोषणा में युद्ध का स्पष्ट और सटीक चित्रण नहीं किया गया था या मजदूर वर्ग की अवस्थिति और इसके द्वारा सुपरिभाषित क्रांतिकारी नेतृत्व देने के बारे में नहीं कहा गया था। लेकिन इस घोषणा ने युद्ध की दृढ़तापूर्वक निंदा की और इसका विरोध किया तथा इस बात से इंकार किया कि जार और जनता के बीच कोई एकता मौजूद है...।

डूमा में हमारा युद्धविरोधी नजरिया मजदूरों के बीच जल्द ही व्यापक तौर पर पहुंच गया और इसे पार्टी के युद्ध विरोधी कार्य के लिए दिशानिर्देशक लाइन के बतौर लिया गया। हमने क्रमशः अपने भूमिगत कार्य को फिर से निर्मित करना शुरू कर दिया जो मुख्यतः युद्ध के विरूद्ध संघर्ष के लिए जनसमुदाय को संगठित करने की ओर लक्षित था।

प्रावदा और मजदूर अखबारों के नष्ट हो जाने के बाद डूमा का धड़ा ही पार्टी शक्तियों को गोलबंद करने का केन्द्र बचा रहा। पेत्रोग्राद कमेटी नष्ट हो गयी थी और शायद ही इसका कोई सदस्य पेत्रोग्राद में बचा था। पेत्रोग्राद कमेटी को पुनर्गठित करना जरूरी था। इसलिए यथासंभव गुप्त तरीके से नई पेत्रोग्राद कमेटी गठित की गयी जिसमें पहले से बहुत कम सदस्य थे।

पेत्रोग्राद कमेटी ने अगस्त की शुरूआत में अपना दूसरा घोषणा पत्र जारी किया। इस प्रकार 'युद्ध के विरुद्ध' युद्ध का नारा क्रांतिकारी संघर्ष के लिए युद्ध को इस्तेमाल करने का व्यवहारिक कार्यक्रम बनता जा रहा था..

दो सप्ताह बाद पेत्रोग्राद कमेटी ने एक दूसरा घोषणा पत्र जारी किया। युद्धकालीन कठोर कदमों के बावजूद घोषणा पत्रों को फैक्टरियों एवं कारखानों में बांटा गया और इसे कुछ हद तक नियमित सेनाओं तक पहुंचाया गया। हमने साम्राज्यवादी युद्ध के असली चेहरे को बेनकाब किया और सर्वहारा वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के फरहरे तले सशस्त्र संघर्ष के लिए तैयार होने की जनसमुदाय से अपील की। इसका असर समूचे देश में पड़ा।

नवम्बर सम्मेलन- अपने पार्टी काम को विकसित करके युद्ध विरोधी प्रचार चलाकर और युद्ध के विरोध अभियान संगठित करके हम अंतराष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेसों के निर्णयों के अनुरूप काम कर रहे थे। युद्ध के पहले भी अंतिम कांग्रेस बैसले कांग्रेस ने विश्व सर्वहारा के लिए एक घोषणा पत्र जारी किया था। जिसमें घोषित किया गया था ''सरकारों को यह याद रखना चाहिए कि फ्रांस-प्रशा युद्ध ने पेरिस कम्यून के क्रांतिकारी विस्फोट को जन्म दिया था, कि रूसी-जापानी युद्ध ने रूसी साम्राज्य के भीतर सभी राष्ट्रों में क्रांतिकारी आंदोलन को जन्म दिया था..दुनिया के मजदूर पूंजीवादी मुनाफे, वंशगत झगड़े या गुप्त कूटनीति के नाम पर एक दूसरे पर गोली चलाना अपराध समझते हैं''। हमारे डूमा धड़े ने इन व्यक्तव्यों को अपने काम का आधार बनाया...।

जैसा कि सर्वविदित है कि युद्ध की घोषणा के एक दिन बाद ही अंतर्राष्ट्रीय के नेताओं ने इतिहास में सबसे बड़ी गद्दारियों में से एक की और अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के सिद्धांतों के साथ विश्वासघात किया। नेताओं ने क्रांति के साथ विश्वासघात किया और इस सिद्धांत को अपनाया कि युद्ध की घोषणा होने के बाद पितृभूमि की रक्षा आवश्यक है।...

शुरू में ऐसा लगता था कि मेंशेविक हमारे दृष्टिकोण से सहमत थे। डूमा में पढ़े गये संयुक्त घोषणा में उन्होंने युद्ध का समर्थन करने से इंकार कर दिया था और सरकार से समझौता करने का सुझाव नहीं दिया था। लेकिन बाद में वे भी सामाजिक देशभक्तिवाद एवं पितृ-रक्षावाद के दलदल में धस गये।

लेनिन ने 'युद्ध पर थीससें' सितंबर, 1914 में लिखी जिसमें उन्होंने लिखा ''सर्वप्रथम समाजवादी क्रांति का सर्वग्रासी प्रचार सेना और सैनिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी बढ़ाया जाना चाहिए। इस बात की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए कि वे अपने हथियार दूसरे देश के मजदूरों के खिलाफ नहीं बल्कि सभी देशों की प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी सरकारों एवं पार्टियों की ओर मोड़ देंगे। सभी राष्ट्रों की सेनाओं में तमाम भाषाओं में ऐसा प्रचार चलाने के लिए गैर कानूनी केन्द्रक और ग्रुप संगठित करने की तात्कालिक आवश्यकता को स्वीकार करें, बिना किसी अपवाद के सभी देशों के पूंजीपति वर्ग और टटपुंजियों के अंधराष्ट्रवाद व देशभक्तिवाद के विरुद्ध निर्मम संघर्ष चलायें। समाजवाद से गद्दारी करने वाले मौजूदा इंटरनेशनल के नेताओं के विरुद्ध यह आवश्यक है कि मेहनतकश जनसमुदाय, जो युद्ध का सारा बोझ उठा रहा है और अधिकांश मामलों में अंधराष्ट्रवाद और अवसरवाद के विरुद्ध है, की क्रांतिकारी चेतना की अपील की जाय''।

नवम्बर, 1914 में डूमा धड़े द्वारा पार्टी सम्मेलन बुलाया गया जिसमें लेनिन द्वारा बताये गये कार्यभारों के आधार पर निश्चित कार्यवाही की योजना ली गयी। सम्मेलन ने क्रांतिकारी आंदोलन को गिरी मनोदशा से स्वतंत्र करने का रास्ता निकाला। नष्ट हुए मजदूर संगठन फिर से उठ खड़े हुए। इसी कांफ्रेंस में छात्रों को संबोधित घोषणा भी स्वीकार की गयी। लेकिन सम्मेलन अपना काम खत्म कर सके इसके पहले ही पुलिस कमरे में घुस आयी और प्रत्येक को गिरफ्तार कर लिया।

धड़े की गिरफ्तारी- हमारे धड़े की गिरफ्तारी कोई आकस्मिक घटना नहीं थी बल्कि जासूसी के व्यापक व्यवस्था के अंतर्गत किसी भी समय होने वाली एक घटना थी। सरकार

ने तय कर लिया था कि बोल्शेविक धड़े को नष्ट करना है और वह इसी बात का इंतजार कर रही थी कि कब वह उचित क्षण आये कि वह अपने हमले की रणनीतिक योजना को लागू करे। डूमा धड़े के सदस्यों के विरोध के बावजूद उनकी तलाशी ली गयी, उनका सारा साहित्य जब्त किया गया। तलाशी के बाद डूमा के सदस्यों को छोड़कर बाकी सभी को जेल भेज दिया गया। जिस तरीके से डूमा के सदस्यों के साथ पुलिस ने व्यवहार किया था उससे यह स्पष्ट हो गया था कि सरकार मजदूर सदस्यों को मिली। संसदीय छूट के प्रति अब कोई सम्मान नहीं रखती। कई दिन बीत जाने के बाद पुलिस बोल्शेविक सांसदों के घर गयी और उनको गिरफ्तार किया। अंततः जारशाही सरकार ने बोल्शेविक धड़े को तोड़ दिया संसदीय छूट का सवाल बोल्शेविक धड़े के लिए उसी तरह का था जो मजदूर वर्ग पर प्रत्येक हमले के समय होता है। यह मुख्यतः शक्तियों के संतुलन से तय होता है जो इस क्षण सरकार के पक्ष में दिखाई पड़ रहा था। इस तथ्य के बावजूद हम पांच लोगों को तन्हाई में डाला गया लेकिन पूंजीवादी अखबारों ने अपने पाठकों को इसकी कम से कम सूचना दी। दस दिन बाद सरकार ने हमारे धड़े की गिरफ्तारी की घोषणा की।

जब जनवरी, 1915 में लंबे अंतराल के बाद डूमा बैठी तो बहुमत ने हमारी गिरफ्तारी के सम्बन्ध में सवाल खड़ा करने की इजाजत नहीं दी।

लेकिन विरोधी कतारों में क्या घटित हुआ? फैक्टरियों, कारखानों, खदानों में क्या हुआ? बोल्शेविक सांसदों की गिरफ्तारी की खबर जनसमुदाय को उभरने से नहीं रोक सकती थी। बोल्शेविक सांसदों की रिहाई की मांग फरवरी क्रांति तक क्रांतिकारी आंदोलन की बुनियादी मांगों के साथ पेश की जाती थी। लेकिन गिरफ्तारी के समय मजदूर वर्ग के पास इतनी ताकत नहीं थी कि वे इसे दूरगामी आंदोलन तक पहुंचा सकें। धड़े की गिरफ्तारी का मतलब था कि रूस के भीतर मुख्य पार्टी केन्द्र नष्ट हो गया है तब भी पेत्रोग्राद कमेटी ने गिरफ्तारी के सम्बन्ध में एक घोषणा जारी की जिसमें कहा गया :....

''लेकिन मजदूर वर्ग के दुश्मन के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसने मजदूर सांसदों के विरुद्ध हमला करने का फैसला किया है क्योंकि वे दमन, हिंसा और लोहे की बेड़ियों की सरकारी नीतियों के विरुद्ध बहादुरी से लड़ रहे थे। जारशाही डाकुओं ने मजदूर वर्ग के चुने हुए प्रतिनिधियों से कहा तुम्हारा स्थान जेल में है।''

'समूचे मजदूर वर्ग को जेल में डाल दिया गया। लुटेरों और शोषकों के गिरोह ने, हत्यारों के गिरोह ने रूस के समूचे मजदूर वर्ग को अभिशप्त करने की हिम्मत की है। मजदूर वर्ग के ऊपर जीवन और मौत की चुनौती थोप दी गयी है। किंतु मार्शल लॉ का लौह दमन भी मजदूरों को अपने विरोध को व्यक्त करने से नहीं रोक सकेगा। अपने सांसदों की रक्षा के लिए तैयार लाखों-लाख रूसी मजदूर जल्लाद और हत्यारे मुर्दाबाद के नारे को जोर-शोर से चिल्लायेंगे''।

''रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी की पेत्रोग्राद कमेटी पेत्रोग्राद के मजदूरों का आह्वान करती है कि इस जारशाही जमींदार गिरोह के कृत्यों के विरुद्ध संघर्ष में सभाएं आयोजित करें और एक दिन की हड़ताल आयोजित करें।''

जारशाही मुर्दाबाद!

जनवादी गणतंत्र अमर रहे!

रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी अमर रहे!

समाजवाद जिंदाबाद!

मुकदमा- बोल्शेविक सांसदों को कठोर जेल हुकूमत के अंतर्गत तनहाई में रखा गया और उनको बाहरी दुनिया से काट दिया गया।..

शुरूआती जांच बहुत तेजी से चली क्योंकि सरकार मुकदमा पूरा करने की जल्दी में थी। हमारी गिरफ्तारी व मुकदमे की तैयारी पहले से कर ली गयी थी जिसमें कि किसी गहरी जांच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं थी। दिसम्बर के अंत तक प्राथमिक जांच-पड़ताल पूरी कर ली गयी थी। प्रत्येक चीज इस बात की संभावना की ओर इशारा कर रही थी कि हम पर कोई मार्शल लॉ चलाया जायेगा। इसलिए जब साधारण न्यायालय में हमारा मामला आया तब हमें बहुत आश्चर्य हुआ। सरकार की योजनाओं में अचानक ऐसा परिवर्तन कैसे आया? निःसंदेह यह देश के भीतर हो रहे परिवर्तनों को प्रतिबिम्बित कर रहा था। कई सैनिक पराजय हो चुकी थीं। सैनिकों के बीच अंधराष्ट्रवादी कुहांसा छट रहा था। मजदूर वर्ग में भी आर्थिक हड़तालें शुरू हो चुकी थीं।

इस मुकदमे के सम्बन्ध में पेत्रोग्राद कमेटी ने कई पर्चे निकाले। इसके अलावा संयुक्त छात्र कमेटी ने भी पर्चे निकाले जिसमें उन्होंने क्रांतिकारी छात्रों का आह्वान किया कि वे मीटिंगों, प्रदर्शनों और हड़तालों के माध्यम से सर्वहारा वर्ग के विरोध में समर्थन करें।

10 फरवरी की सुबह मुकदमे की शुरूआत हुई। सैनिक सेंसरशिप ने निर्ममता से मुकदमे की रिपोर्ट को कांट-छांट कर अखबार वालों को दिया। अपराध पढ़ने के बाद न्यायालय के अध्यक्ष ने हमसे पूछा कि क्या हम अपने को दोषी मानते हैं? हमने इंकार कर दिया। ..

कई दिन मुकदमा चलने के बाद सम्मेलन में उपस्थित सदस्यों को सजा सुनाई गयी। कई महीने पेत्रोग्राद जेल में बिताने के बाद हमको सुदूर साइबेरिया की जेल में भेज दिया गया। निर्वासन की दृष्टि से हमें जिस जगह भेजा गया था वहां से निकलने का कोई रास्ता नहीं था। यह आकस्मिक नहीं था कि हमारे बोल्शेविक केंद्रीय कमेटी का समूचा रूसी ब्यूरो व्यवहारतया वहां पहुंच गया था।

अंततः जारशाही सरकार ने बोल्शेविक डूमा धड़े को नष्ट कर दिया था। और सभी मजदूर संगठनों को नष्ट करने के अपने कार्यभार को पूरा कर लिया था। मजदूर सांसदों पर बेड़िया डालकर जारशाही समूचे रूसी मजदूर वर्ग को जंजीरों से जकड़ने की ओर बढ़ी। लेकिन जारशाही सरकार की गणना में कुछ गलत हो गया। खूनी निकोलस की सरकार क्रांतिकारी आंदोलन का दम घोंटना तो दूर की बात है, वह कैदियों को भी अपने क्रांतिकारी कार्यों से दूर नहीं कर सकी। साइबेरिया में सजायाफ्ता के बतौर भी हमने क्रांतिकारी संघर्ष में हिस्सा लेना जारी रखा।

हम खुशी के साथ सुदूर साइबेरिया के निर्वासन में क्रांतिकारी लहरों को और जोर-शोर से सुनते थे। मजदूर वर्ग फिर भी संघर्ष के क्षेत्र में प्रवेश कर गया था। प्रत्येक दिन इसकी मांगें और जोर से तथा ज्यादा प्रभावी तरीके से सुनाई दे रही थीं। जब मजदूरों ने अपनी कतारों को फिर से खड़ा किया तो वे हमारे बोल्शेविक धड़े को नहीं भूले। हमारे मुकदमे की सालगिरह के दिन समूचे रूस में विरोध में हड़तालें हुईं। प्रत्येक सभा में मजदूर वर्ग की बुनियादी मांगों के साथ पेत्रोग्राद के मजदूरों के नारों में एक थी जब उन्होंने फरवरी, 1917 के ऐतिहासिक दिनों में सड़कों पर नियंत्रण स्थापित किया था।

फरवरी क्रांति ने जेल के फाटक खोल दिये और जारशाही के कैदियों की जंजीरों को तोड़ दिया। लाखों आजाद हुए क्रांतिकारी साइबेरिया के रास्ते वापस आये। गांवों में, बस्तियों में, रेलवे स्टेशनों में जनसमुदाय ने क्रांतिकारी गीतों के साथ मजदूर सांसदों का स्वागत किया। समूचे रास्ते भर क्रांतिकारी सभाएं हुईं।

मार्च, 1917 के अंतिम दिनों में हम पेत्रोग्राद में क्रांतिकारी मजदूरों के बीच वापस आये। जारशाही निरंकुशता के दुर्ग पर धावा बोलने के बाद ये मजदूर बोल्शेविकों के तपे तपाये नेतृत्व के अंतर्गत पूंजीवाद के संपूर्ण खात्मे के लिए अपना संघर्ष शुरू कर चुके थे।

1905 की क्रांति, बहाली और वृद्धि के युद्ध पूर्व के साल, फरवरी क्रांति और अंततः अक्टूबर क्रांति रूसी मजदूरों के संघर्ष की चार मंजिलें हैं। ये चार महान कदम हैं जिन्हें रूसी मजदूर वर्ग ने सर्वहारा क्रांति की अंतिम विजय तक पहुंचने में उठाया था।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–09, 01–15 मई, 2014)

प्रावदा अखबार की रूसी क्रांतिकारी आंदोलन में भूमिका

प्रथम विश्व युद्ध के शुरू होने के पहले **प्रावदा** ने रूस के क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अपनी स्थापना के क्षण से ही यह अखबार बोल्शेविक पार्टी के काम को संचालित करने के मुख्य साधनों में एक था। इसके सम्पादक और इसकी छपाई व वितरण संबंधी कामों से जुड़े मजदूर व्यापक आबादी के संगठन में प्रत्यक्ष तौर पर लग गये थे। प्रत्येक क्रांतिकारी मजदूर हर दिन अपने बोल्शेविक अखबार को हासिल करना और पढ़ना अपना कर्तव्य समझता था, चाहे कितनी भी कठिनाइयां इसमें सामने आती रही हों। इसकी हर प्रति को एक हाथ से दूसरे हाथ में पहुंचाया जाता था और उसे बहुत सारे मजदूरों द्वारा पढ़ा जाता था। अखबार ने उनकी वर्ग चेतना को अभिव्यक्ति दी, उनको शिक्षित और संगठित किया।

प्रावदा की मजदूरों के बीच लोकप्रियता की इस तथ्य से व्याख्या की जा सकती है कि यह लगातार सुसंगत दृढ़ बोल्शेविक नीति पर चलता था और अवसरवादी-विसर्जनवादी अखबार **लूच** (व अन्य अखबारों) से भिन्न यह समस्याओं को सरल और बेबाक भाषा में हमेशा पेश करता था। जहां लूच का वितरण कभी भी अधिकतम 16,000 प्रतियों से ऊपर नहीं पहुंचा था, वहीं **प्रावदा** का 40,000 प्रतियों तक प्रतिदिन पहुंच गया था। इसी तरह का संबंध इन अखबारों की तरफ से मजदूरों द्वारा प्राप्त धन की मात्रा से भी मालूम होता है। **प्रावदा** मजदूरों के पैसे से शुरू हुआ था और समूचे काल में मजदूरों का समर्थन हासिल किये हुए था। लेकिन विसर्जनवादियों ने अपना अखबार मुख्यतया मेंशेविकों के साथ सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों से मिली बड़ी धनराशि के बल पर प्रकाशित किया था। 1913 में **प्रावदा** को कम से कम 2180 मजदूर ग्रुपों से आर्थिक सहयोग मिला था, जबकि इसी काल के दौरान **लूच** को महज 660 ग्रुपों से सहयोग मिला था। अगले साल (मई तक) **प्रावदा** को 2873 मजदूर ग्रुपों से सहयोग मिला जबकि लूच को 671 का।

प्रत्येक राजनीतिक घटना, मजदूर वर्ग की प्रत्येक लड़ाई के संबंध में मजदूर **प्रावदा** को पत्र, प्रस्ताव और रिपोर्ट भेजते थे। **प्रावदा** के चार पृष्ठों में, यहां तक कि इसके बड़े रूप में भी इन सभी सामग्रियों को प्रकाशित करने में असमर्थता होती थी और कई बातों को सेंसरशिप कारणों से प्रकाशित नहीं किया जा सकता था। जारशाही हुकूमत के बारे में और उसके विरुद्ध क्रांतिकारी संघर्ष में लगने की अपनी इच्छा के बारे में अपनी बेबाक राय रखते थे। जब सम्पादक जोखिम उठाने का फैसला कर लेते थे और ऐसे पत्र-व्यवहार को प्रकाशित कर देते थे तब अखबार को हमेशा जुर्माना होता था और उसे जब्त कर लिया जाता था। चूंकि यह ऐसी आम घटना हो गयी थी इसलिए मजदूर यह पहले से कह देते थे: ''यदि अखबार को जब्त कर लिया जाता है तो कृपया हमारी खबर को एक बार फिर से आगामी अंक में प्रकाशित करें।''

प्रावदा मजदूरों के साथ अपना घनिष्ठ सम्पर्क सम्पादकीय कार्यालयों में आने वाले अनेकानेक आगंतुकों के जरिये भी कायम रखता था। यह बोल्शेविक पार्टी के सांगठनिक कार्य के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। स्थानीय पार्टी सेलों से आये प्रतिनिधियों की वहां पर मीटिंगें होती थीं, फैक्टरियों और कार्यशालाओं से वहां सूचनाएं प्राप्त की जाती थीं और वहां से जिलों को निर्देश तथा गुप्त बैठकों के स्थानों के बारे में इंतजाम किये जाते थे।

जारशाही खुफिया पुलिस इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थी कि बोल्शेविक **प्रावदा** हुकूमत का एक बहुत खतरनाक दुश्मन था। हालांकि पेत्रोग्राद के मजदूरों के बढ़ते क्रांतिकारी तेवर के कारण पुलिस **प्रावदा** के कुचलने के बारे में निर्णय लेने में दो वर्ष तक हिचकिचाती रही, तब भी वे समय-समय पर इस अखबार की ताकत को छोटे दण्ड देकर कम करने की कोशिश में इसे चिंतित करते रहे। इस अखबार के अस्तित्व के समूचे दौर में, प्रत्येक अंक संघर्ष के बाद, प्रत्येक लेख लड़ाई के बाद ही छप पाता था। गिरफ्तारियां, जुर्माने, जब्ती और छापे होते रहते थे। पुलिस अखबार को कोई चैन नहीं देती थी।

पार्टी ने अपने अखबार की स्थापना अत्यन्त कठिन हालात के अंतर्गत की थी और केंद्रीय कमेटी ने क्रांतिकारी आंदोलन में इसकी भूमिका को व्यापक महत्व दिया था। जिन साथियों को इस कठिन काम की जिम्मेदारी दी गयी थी, उनकी मदद के लिए ड्यूमा के बोल्शेविक धड़े को लगाया गया था। **प्रावदा** और ड्यूमा के भीतर बोल्शेविक धड़ा साथ-साथ मिलकर काम करते थे। अखबार की मदद से ही धड़ा पार्टी और क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा इसे दिये गये कार्यभारों को अंजाम देने में समर्थ हो सकता था। बोल्शेविक सांसदों ने ड्यूमा के मंच का इस्तेमाल विभिन्न रूप-रंग के सांसदों के बीच बोलते हुए व्यापक जनसमुदाय के बीच अपनी बातें पहुंचाने के लिए किया। लेकिन यह सिर्फ बोल्शेविक पार्टी के अखबार के जरिये ही संभव हो सकता था, क्योंकि तथाकथित उदारपंथी अखबार बोल्शेविक सांसदों के भाषणों के लिए सिर्फ चंद पंक्तियां ही देते थे और कभी-कभी इनकी बातों को चुप्पी साधकर निकल जाने देते थे। यदि मजदूरों का बोल्शेविक अखबार नहीं होता तो बोल्शेविक सांसदों के भाषण तारूदा महल (रूस की संसद) की चारदीवारी से बाहर नहीं जाने जा सकते थे।

बोल्शेविक पार्टी ने **प्रावदा** से महज यही सहायता नहीं प्राप्त की थी। सम्पादकीय कार्यालयों में बोल्शेविक सांसद पेत्रोग्राद की फैक्टरियों और कार्यशालाओं के प्रतिनिधियों से मिलते थे, उनसे विभिन्न सवालों पर विचार-विमर्श करते थे और उनसे सूचनाएं हासिल करते थे। संक्षेप में, **प्रावदा** एक ऐसा केन्द्र हो गया था जिसके इर्द-गिर्द क्रांतिकारी मजदूर इकट्ठे हो सकते थे और जो ड्यूमा के बोल्शेविक धड़े के काम के लिए समर्थन मुहैय्या कराता था।

जिस क्षण बोल्शेविक धड़ा कायम हुआ था, इसने अखबार के काम को अपने मुख्य कार्यभारों में एक बना लिया था। चौथी ड्यूमा के सत्र की शुरूआत के तत्काल बाद ''छः'' बोल्शेविकों ने **प्रावदा** में यह अपील प्रकाशित की थी:

''इस पूर्ण दृढ़विश्वास के साथ कि **प्रावदा** वर्तमान काल के दौरान सर्वहारा वर्ग की ताकतों को एक साथ एकजुट करने के कार्यभार को आगे बढ़ायेगा, साथियो, हम आपसे अपील करते हैं कि आप इसका समर्थन करें, इसे वितरित करें और इसे सामग्री मुहैय्या करायें। निस्संदेह **प्रावदा** की अपनी कमियां हैं, किसी नये अखबार की तरह, इसे मजबूती प्राप्त करने के लिए न तो इसके पास समय है और न ही अनुभव है, लेकिन इसका उपाय सिर्फ एक तरीके से हो सकता है कि इसे आप नियमित तौर पर समर्थन दें।''

जब पार्टी द्वारा **प्रावदा** से संबंधित मुद्दों को देखने के कार्यभार की जिम्मेदारी ए.बादायेव को दी गयी तो उन्होंने पेत्रोग्राद के मजदूरों को संबोधित करते हुए निम्न संदेश दिया:

''एक मजदूर सांसद और एक मजदूर अखबार एक ही उद्देश्य की सेवा करते हैं। इन दोनों के बीच घनिष्ठतम सहयोग होना चाहिए। इसीलिए, साथियो, मैं मजदूरों के अखबार **प्रावदा** को निकालने में सर्वाधिक सक्रिय भूमिका निभाना अपना कर्तव्य समझता हूं। साथियो, अपने खुद के प्रयासों से, अपनी खुद की गाढ़ी कमाई से, हमने, रूस में पहला मजदूरों का दैनिक अखबार खड़ा किया है। हमने पेत्रोग्राद के मजदूरों ने इस काम में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई है। लेकिन किसी अखबार की स्थापना कर देना ही पर्याप्त नहीं है, हमें इसे मजबूत करना होगा, और इसे सुरक्षित तौर पर अपने पैर पर खड़ा करने के लिए बहुत कुछ करने की जरूरत है। प्रत्येक मजदूर को इसका नियमित पाठक बनना चाहिए और प्रत्येक पाठक को अन्य नियमित पाठक बनाने चाहिए। हमें **प्रावदा** के लिए धन संग्रह संगठित करना होगा और इस बात को सुनिश्चित करना होगा कि इसका वितरण जितना अधिक संभव हो सके, उतना करें। साथियों, आइये! हम साथ मिलकर ऐसे अखबार को खड़ा करें जो मजदूरों के लक्ष्य की सेवा करता हो''।

प्रावदा के लिए समर्थन संगठित करने और इसके प्रकाशन को जारी रखने के लिए साधन इकट्ठा करने के अतिरिक्त बादायेव को पुलिस द्वारा मिलने वाले लगातार प्रताड़ना के विरुद्ध भी संघर्ष करना पड़ता था। बादायेव व **प्रावदा** के सम्पादकों को अखबार की जब्ती के विरुद्ध निरंतर संघर्ष करना पड़ता था और अत्यधिक विविध बहानों का इस्तेमाल करना पड़ता था जिससे कि किसी विशिष्ट दिन का अंक अपने पाठकों के पास पहुंच सके।

कानून का पालन करने के लिए अखबार की एक प्रति छापाखाने से प्रेस कमेटी को भेजने के साथ ही साथ बिक्री के लिए भी जारी कर दी जाती थी। चूंकि कमेटी आम तौर पर अंक की जब्ती का आदेश तत्काल जारी कर देती थी तो अखबार के सम्पादकों को अखबार को छापेखाने से बाहर ले जाने और कमेटी द्वारा इसको प्राप्ति के बीच के समय के संक्षिप्त अंतराल का इस्तेमाल वितरण के लिए वितरकों तक पहुंचाने में करना पड़ता था।

सुबह धुंधलके में ही छापेखाने के बाहर सीधे छापाखाने से अखबार प्राप्त करने के लिए फैक्टरियों और कार्यशालाओं के प्रतिनिधि इकट्ठा हो जाते थे और तुरंत उसे जिलों में पहुंचाते थे। बाद में पुलिस हमारे तरीकों से परिचित हो गयी थी और छापाखाने को जासूसों से घेर लिया जाता था तथा पास-पड़ोस की सड़कों पर घुड़सवार पुलिस और पैदल पुलिस के दस्ते तैनात कर दिये जाते थे। अक्सर, कानून के विपरीत प्रेस कमेटी के अधिकारी छापेखाने में आते और छापेखानों से बाहर आते ही अखबार जब्त कर लेते थे। उस समय हम अखबार के कुछ बंडल टांड या सीढ़ियों में छिपा देते थे जिससे कि पुलिस के जाने के बाद कम से कम कुछ प्रतियां बाहर भेज सकें।

बादायेव को राज्य ड्यूमा संसद के सदस्य के बतौर जो गिरफ्तारी से रोक का सुविधा मिली हुई थी, उससे अधिकारियों के विरुद्ध इस निरंतर संघर्ष में कुछ हद तक कार्यभारों को सुगम बनाने में मदद मिलती थी। लेकिन यह कहना अनावश्यक है कि इससे किसी भी तरह अखबार के सम्पादकों और बादायेव को पुलिस प्रताड़ना और कानूनी मुकदमों से बचने की कोई गारंटी थी। बादायेव के विरुद्ध एक के बाद दूसरे मुकदमे जांच मजिस्ट्रेटों के यहां इकट्ठा होते गये और जब उन्होंने समझा कि उचित क्षण आ गया है तब उन्होंने अपना बिल पेश किया- अखबार के संबंध में। बादायेव को कई मुकदमों में फंसाया गया। सरकार मजदूर सांसदों को गिरफ्तार करने का साहस नहीं कर रही थी, लेकिन मुकदमों की कार्यवाही के दौरान वह अन्य ज्यादा साधारण लोगों को शामिल करने की कोशिश करते थे।

कई बार बादायेव से पूछा गया कि **प्रावदा** को कौन सम्पादित करता है? और प्रत्येक बार न्यायालय के अधिकारी को वही घिसा-पिटा जवाब मिलता था ''सम्पादक का नाम अखबार की प्रत्येक प्रति में छपा हुआ है और उसके सहयोगी पेत्रोग्राद के मजदूरों के बीच हजारों हैं।''

मई, 1913 में **प्रावदा** को बंद कर दिया गया और कुछ दिनों बाद **प्रावदा त्रुदा** के नये शीर्षक के अंतर्गत सामने आ गया। यह बहुत स्पष्ट आवरण कई अन्य मौकों पर भी इस्तेमाल किया गया। सम्पादकों के पास **प्रावदा** शब्द में शामिल तमाम शीर्षक उपलब्ध थे। **प्रावदु**, **प्रोलेतारस्काया प्रावदा**, **सेवेर्नाया प्रावदा** और **पुत प्रावदी** नामों का एक के बाद दूसरा इस्तेमाल किया गया। खुफिया पुलिस ने **प्रावदा** को कुचलने का कोई अवसर नहीं जाने दिया। तब भी हमारा काम इतना अच्छी तरह संगठित था कि पेत्रोग्राद के मजदूर शायद ही कभी अपने दैनिक अखबार के बिना रहे हों।

फंड की कमी भी हमारी छोटी परेशानी नहीं थी। पैसे का मुख्य स्रोत फैक्टरियों और कार्यशालाओं के मजदूरों से इकट्ठा की गयी नियमित संग्रह होता था, लेकिन कभी-कभी ऐसे व्यक्तिगत लोगों से भौतिक सहायता मिल जाती थी कि जो मजदूरों के क्रांतिकारी आंदोलन के साथ सहानुभूति रखते थे। ऐसे लोगों में मैक्सिम गोर्की भी शामिल थे। वे जब भी संभव होता था, मदद करते थे। गोर्की सभी बोल्शेविक प्रकाशनों में नियमित योगदान करते थे और वे भौतिक सहायता खुद तक ही सीमित नहीं रखे हुए थे बल्कि अखबार के लिए दूसरों से भी फंड प्राप्त करने में कदम उठाते थे।

गोर्की जब विदेश से वापस लौटे तो वे फिनलैंड में रहने लगे जो पेत्रोग्राद से बहुत दूर नहीं था। बादायेव 1913 की गर्मियों में उनसे मिलने गये। उनकी मदद की आवश्यकता अखबार के लिए और अन्य पार्टी कार्य के संबंध में थी। बादायेव पार्टी केन्द्र के कहने पर उनसे मिलने गये थे। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि गोर्की के लिए कोई खतरा न हो और उन्हें नये सिरे से पुलिस प्रताड़ना का सामना न करना पड़े।

गोर्की ने बादायेव से पार्टी जीवन, क्रांतिकारी आंदोलन की स्थिति, भूमिगत काम, ड्यूमा धड़े की गतिविधि इत्यादि संबंधी सवाल विस्तार से पूछे और संघर्ष के सभी आयामों की विस्तार से जानने में व्यापक रुचि दिखायी। वे विशेष रूप से फैक्टरियों के भीतर के कामों के सभी पहलुओं पर जोर दे रहे थे और बादायेव उनके सवालों का जबाव उस रफ्तार से नहीं दे पा रहे थे जिस रफ्तार से वे एक के बाद दूसरा सवाल खड़ा कर रहे थे। विशेष आग्रह के संबंध में गोर्की ने वायदा किया कि उनके बस में जितना होगा वह सभी करेंगे जिससे कि **प्रावदा** के प्रकाशन के लिए आवश्यक सम्पर्क और साधन हासिल करने में वे अपना ज्यादा समय देंगे।

प्रावदा की पकड़ से जली-भुनी पुलिस निर्मम होती गयी और तमाम कानूनी औपचारिकताओं को भी नजरंदाज करती गयी। हालांकि उनके पास जब्ती का कोई आदेश नहीं था फिर भी उन्होंने अखबार वितरकों को गिरफ्तार किया, **प्रावदा** के बंडलों को उठाकर ले गये और यहां तक उन्होंने अपने लिये तकलीफ नहीं गंवारा की कि वे अपनी कार्यवाहियों को कानूनी शक्ल देने के लिए प्रेस कमेटी के निर्णय पीछे की तारीखों में ले सकें।

फरवरी, 1914 के अंत में, एक उच्च अधिकारी की कमान के अंतर्गत एक पुलिस दस्ते ने बिना किसी आदेश के देर रात में सम्पादकीय कार्यालयों में छापा मारा। तालों को दरवाजों से अलग कर दिया गया, प्रत्येक चीज को उलट-पलट दिया गया और पाण्डुलिपियों तथा पत्र-व्यवहार को फर्श के बीचों-बीच बिखेर दिया गया। बादायेव को फोन से छापे की सूचना दी गयी। बादायेव ने तुरंत सम्पादकीय कार्यालयों में पहुंचकर पुलिस द्वारा तलाशी लेने के गैर कानूनी तरीके अपनाने पर विरोध दर्ज कराया। लेकिन, चूंकि बादायेव अखबार के औपचारिक सम्पादकीय नहीं थे तो अधिकारी ने उन्हें जवाब दिया।

''आप क्यों हस्तक्षेप करते हो? आप इस कार्यालय में अजनबी हो, इसका आपसे कोई सरोकार नहीं है।''

बादायेव ने जबाव दिया:

''इसका निश्चित सरोकार है। मैं एक मजदूर सांसद हूं और यह मजदूरों का अखबार है। हम एक ही लक्ष्य की सेवा कर रहे हैं।''

पुलिस ने अपनी तलाशी पूरी की और जो भी सामग्री उन्हें चाहिए थी वे सब लेकर चले गये। अगले दिन बादायेव ने संबंधित मंत्री से अपना विरोध दर्ज कराया, लेकिन इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मंत्री और पुलिस सांठ-गांठ में काम कर रहे थे।

इस समय राज्य ड्यूमा में सरकार ने नया प्रेस कानून पेश किया। इसका उद्देश्य 1905 में जीती गयी ''आजादी'' के अंतिम अवशेषों को छीन लेना था। **प्रावदा** पर पुलिस का छापा इस कानून के इरादों का पूर्वाभ्यास था। 4 मार्च को **प्रावदा** की गैर कानूनी जब्ती संबंधी काम रोको प्रस्ताव बोल्शेविक धड़े ने पेश किया। बादायेव ने काम रोको प्रस्ताव को पेश करने की जरूरत पर अपनी बात रखी। उन्होंने समूचे रूस में मजदूरों के अखबारों की आम हालात का जिक्र किया और उन भाषण में सभी मजदूरों से **प्रावदा** की रक्षा के लिए गोलबंद होने की अपील की गयी। ब्लैक हंड्रेड बहुमत ने बोल्शेविकों के प्रस्ताव को रद्द कर दिया। लेकिन बादायेव के

भाषण ने अपने मकसद को हासिल कर लिया था। मजदूरों ने अपने आह्वान को सुना। रोजाना पैसे संग्रह होने की मात्रा और **प्रावदा** के ग्राहकों की संख्या बढ़ती गयी।

1914 के जुलाई के दिनों में **प्रावदा** अपरिहार्य हो गया था। रोजाना संघर्ष के विकास की पूरी रिपोर्ट प्रकाशित होती थी और सम्पादक गण हड़ताल कमेटियों के साथ निरंतर सम्पर्क में रहते थे। वे हड़तालियों की मदद करते थे और उनकी सहायता के लिए चंदा जुटाने में सहयोग करते थे। इसके परिणामस्वरूप, पुलिस द्वारा प्रताड़ना बढ़ती गयी। जुर्माने, जब्तियां और गिरफ्तारियां जल्दी-जल्दी होने लगीं और अब रातों-दिन कार्यालयों में जासूस मौजूद रहते थे। जासूसों के साथ-साथ पुलिस की भी सभी प्रजातियां वहां रहती थीं। अखबार का प्रत्येक लेख खतरे में था और उसे पुलिस से बहुत कठिनाई के साथ ही बचाया जा सकता था। सम्पादकों को यह तर्क करना पड़ता था कि कानून की इस या उस धारा से क्या अखबार को गुनाहगार ठहराया जा सकता है। बादायेव सम्पादकों की मदद के लिए अपना ज्यादा समय सम्पादकीय कार्यालयों में बिताते थे। वे संबंधित राजाज्ञाओं और कानूनों की अपनी प्रतियां हमेशा लिये रहते थे जिससे कि वास्तविक संदर्भ देने में वे पुलिस अधिकारियों से निपट सकें।

जब पेत्रोग्राद का मजदूर आंदोलन ऐसी मंजिल में पहुंच गया, जब मजदूरों ने बेरीकेड़ों का निर्माण करना शुरू कर दिया, तब सरकार ने कार्यवाही करने का निर्णय लिया। खुफिया पुलिस को यह निर्देश दिया गया कि बोल्शेविक संगठनों को नेस्तनाबूद करना है और क्रांतिकारी आंदोलन को उसके मुख्य हथियार, उसके अखबार से वंचित करना है।

इस समय अखबार पर छापा ऐसे क्षण में नियोजित किया गया था जब **प्रावदा** के मुख्य आंगतुकों के साथ-साथ समूचे सम्पादक मंडल को एक साथ गिरफ्तार किया जा सके। 8 जुलाई को गोधूलि बेला के ठीक बाद पुलिस कार्यालयों में आ धमकी। यह वह समय था, जब कार्य अपनी पूरी रफ्तार पर हो रहा था और जिलों से मजदूर अपने व कार्यशालाओं से धनराशि लेकर तथा पार्टी व अन्य ट्रेड यूनियन गतिविधियों के दूसरे काम लेकर आये ही थे। बादायेव तुरंत कार्यालयों तक गये और पाया कि कार्यालयों को चारों तरफ से पुलिस ने घेर रखा है। कुछ दिक्कतों को झेलते हुए जब वे पहुंचे तो उन्होंने देखा कि पुलिस अधिकारी तमाम दराजों और अलमारियों को तहस-नहस कर रहे हैं। कार्यालय पूरी तरह से अस्त-व्यस्त पड़ा है। अखबार के सभी सहयोगियों के साथ-साथ आंगतुकों को गिरफ्तार करके एक कमरे में ठूंस दिया गया है। बादायेव को उन तक पहुंचने की इजाजत नहीं दी गयी और उन्हें खुले दरवाजे से बात करनी पड़ी।

बादायेव ने तलाशी और गिरफ्तारियों के विरुद्ध तुरंत ही प्रतिवाद किया और कहा कि वे इस मसले को राज्य ड्यूमा में उठायेंगे। पुलिस ने अपने उच्च अधिकारियों को फोन किया और उन्हें जबाव मिला कि वे बिना कोई परवाह किये अपना काम जारी रखें। पुलिस अधिकारियों ने बादायेव को तुरंत स्थान छोड़कर चले जाने का आदेश दिया। जब बादायेव ने जोर दिया कि वे मुझे बलपूर्वक बाहर निकालें और मेरे ऊपर पुलिस के कार्य में बाधा डालने का आम आरोप लगायें।

प्रावदा पर यह तहस-नहस करने वाली कार्यवाही मजदूर संगठनों पर होने वाले हमलों की श्रृंखला का संकेत थी। प्रथम विश्व युद्ध के ठीक पहले पुलिस ने मजदूर वर्ग के सभी अखबारों, शैक्षणिक और ट्रेड यूनियन संगठनों को तहस-नहस कर दिया। पेत्रोग्राद में व्यापक गिरफ्तारियां की गयीं और कैदियों के समूह उत्तरी प्रदेशों और साइबेरिया में भेजे जाने लगे।

प्रथम विश्व युद्ध ने और ज्यादा कठोर पुलिस कदमों को बढ़ा दिया और बोल्शेविक पार्टी पूरी तौर पर भूमिगत होने को बाध्य हो गयी। बोल्शेविक धड़ा अक्सर मजदूर अखबार प्रकाशन को फिर से शुरू करने के बारे में विचार-विमर्श करता था और यह मुद्दा नवंबर सम्मेलन के एजेंडा में था। इसी नवंबर सम्मेलन में ही बोल्शेविकों का समूचा ड्यूमा धड़ा गिरफ्तार कर लिया गया था।

समूचे प्रथम विश्व युद्ध के दौरान बोल्शेविक **प्रावदा** का प्रकाशन फिर से शुरू करने में असमर्थ रहे।

(साभार : 'नागरिक' वर्ष–17, अंक–14, 16–31 जुलाई, 2015)